

कृत्तिमा

2016-17



सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर

चौं चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठ से सम्बद्ध

www.sdcollgemzn.com



VISION

Our College aims to be an institution dedicated to producing tolerant, virtuous, responsible and productive human resource thereby contributing to a better global society.

दृष्टिकोण

हमारा महाविद्यालय एक ऐसी समर्पित संस्था है जो छात्र/छात्राओं को सहनशील, गुणी, उत्तमताएँ और क्रियाशील नागरिक बनाने में प्रयास करता है।

MISSION

- To impart value based, high quality comprehensive and meaningful education to all students.
- To provide an environment in which students can discover and realize their full potential.
- By maintaining an optimum teaching/learning environment, the college aims to provide the opportunity for students to be successful and develop in them a passion for learning.
- In order to prepare the students to live in and contribute to a changing world, the college aims to provide a balanced academic, cultural and social atmosphere to cater to the needs of individuals, from diverse backgrounds from the community.
- To aim at the broader development of complete personality of the students.
- To empower all students to apply their acquired skills and knowledge and to rely upon their personal attributes to lead productive lives and to become contributing members of the global community.
- To treat each student as an individual and teach him/her to function as a productive member of the society.
- To sustain a caring, supportive climate throughout the college to produce responsible citizens.

उद्देश्य

- विद्यार्थियों को मूल्य आधारित, उच्च गुणवत्ता एवं सार्वगमित शिक्षा प्रदान करना।
- विद्यार्थियों को ऐसा वातावरण प्रदान करना जिससे वे अपनी सम्पूर्ण क्षमता का उपयोग कर सकें।
- पठन-पाठन का उत्तम वातावरण कायम करते हुए महाविद्यालय विद्यार्थियों के विकास का एक सुयोग्य अवसर प्रदान करना है जिससे शिक्षा के प्रति उन्हें गहन ज्ञान जागृत हो सके।
- बढ़ते परिवृद्धि के अनुसार विद्यार्थियों को उसमें रहने और योगदान हेतु महाविद्यालय उन्हें एक संतुलित, शैक्षणिक, सांख्यिक और सामाजिक वातावरण प्रदान करना जिससे कि विभिन्न पृष्ठभूमियों एवं समुदायों से आये हुए विद्यार्थी इसे अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्रयोग कर सकें।
- विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना।
- विद्यार्थियों को सामर्थ्यबन बनाना जिससे कि वे अपनी विद्या व ज्ञान का प्रयोग करते हुए जीवन को उन्नत बनाकर वैदिक अमुदाय को उत्तम बनाने में योगदान दे सकें।
- प्रत्येक विद्यार्थी पर ध्यान देते हुए उसे ऐसे शिक्षित करना जिससे वह समाज का एक अक्रिय सदस्य के रूप में कार्य कर सके।
- विद्यार्थियों को एक उत्तमताएँ नागरिक बनाने हेतु महाविद्यालय में अनुकूल और सहायक वातावरण तैयार करना।



Zorawar Singh Crew Rovers & Rangers



Rovers performing "Nukkad Natak"



Be wise let the greenery rise



Students singing National Anthem on Republic Day



Celebrating "Yoga Day"



Plantation Campaign



इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

IGNOU is a Central University Established by an Act of Parliament. Its Degrees/Diplomas/ Certificates are recognized by all members of the Association of Indian Universities (AIU) and are at par with Degrees/Diplomas/Certificates of all Indian Universities/ Deemed Universities/ Institutions vide U.G.C. Circular No. F. 1-8/1992 (CPP) dated February 1992 and AIU Circular No. EVIB (449)/94/176915-177115 dated January, 1994.

INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

प्रवेश सूचना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इंग्नू) के एसओडी० कॉलेज, मुजफरनगर में स्थित अध्ययन केन्द्र (2749) में उच्च स्तरीय एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त करने हेतु विभिन्न प्रकार के डिग्री, डिप्लोमा, पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कोर्स जैसे अनेक पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इन पाठ्यक्रमों के विषय में विस्तृत जानकारी के लिए इस केन्द्र पर व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करें। किसी भी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में अध्ययनरत रहते हुए भी इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया जा सकता है।

केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की सूची

डिग्री कोर्स (2/3 वर्ष)	डिप्लोमा कोर्स (1 वर्ष)	सर्टिफिकेट कोर्स (6 माह)
01. एम०बी०ए० (22 कोर्स) 1500/- (फार्म 1000/-) प्रति कोर्स	01. पी०जी० डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एण्ड मास कम्युनिकेशन 3500/-	01. बी०पी०पी० (बिना इंटर किए बी०ए०/ बी०कॉम०/बी०टी०एस०/बी०एस०डब्ल० में प्रवेश के लिए) 1000/-
02. एम०कॉम० 5500/-	02. पी०जी० डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन 3000/-	02. सर्टिफिकेट इन इनफोरमेशन टैक्नालॉजी 4000/-
03. एम०ए० (हिन्दी 4500/-, अंग्रेजी 4500/-, झिताहास 4500/-, अर्थशास्त्र 6000/-, राज. विज्ञान 4500/-, लोक प्रशासन 4500/-, ग्रामीण विकास 4500/-, समाजशास्त्र 4500/-)	03. पी०जी० डिप्लोमा इन रुरल ड्वलपमैन्ट 2000/-	03. सर्टिफिकेट इन गाइडेन्स 1100/-
04. बी०ए० 2000/-	04. पी०जी० डिप्लोमा इन एनालाइटिकल कैमिस्ट्री 8000/-	04. सर्टिफिकेट इन न्यूट्रीशन एण्ड चाइल्ड केयर 1500/-
05. बी०कॉम० 2000/-	05. डिप्लोमा इन टूरिज्म 3500/-	05. सर्टिफिकेट इन टीचिंग ऑफ इंगलिश 2000/-
06. बी०एस-सी० 3500/-	06. डिप्लोमा इन न्यूट्रीशन एण्ड हैल्थ एजूकेशन 2000/-	06. सर्टिफिकेट इन टूरिज्म स्टडीज 1500/-
07. बी०टी०एस० (पर्यटन) 2500/-	07. डिप्लोमा इन क्रियेटिव राइटिंग इन इंगिलिश 3000/-	07. सर्टिफिकेट इन ह्यूमन राइट्स 2000/-
08. बी०सी०ए० (कम्प्यूटर) 6 सत्र 5000/- प्रति सत्र	08. डिप्लोमा इन वुमेन्स एमपावरमैन्ट एण्ड ड्वलपमैन्ट 3000/-	09. सर्टिफिकेट इन टीचिंग ऑफ प्राईमरी स्कूल मैथमैटिक्स 1500/-
09. बी०एस०डब्ल० 4000/-	09. डिप्लोमा इन डिजास्टर मैनेजमैन्ट 5000/-	11. सर्टिफिकेट इन रुरल ड्वलपमैन्ट 1500/-
10. बी०एल०आई०एस०(बी.लिब.) 5000/-		12. सर्टिफिकेट इन फूड एण्ड न्यूट्रीशन 1100/-
11. एम०एस०डब्ल० 13,500/-		13. सी.एल.आई.एस. 2000/-

Contact Number : 0131-2606644

IGNOU STUDY CENTRE (2749)

S.D. COLLEGE, MUZAFFARNAGAR

WORKING DAYS & HOURS

THURSDAY, FRIDAY AND SATURDAY : 03.00 P.M. TO 07.00 P.M.

SUNDAY : 09.00 A.M. TO 04.00 P.M.

नोट : जून एवं दिसम्बर माह में सभी कार्य दिवसों में प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक सम्पर्क करें।

डॉ० एस०सी० वार्ष्ण्य
केन्द्र समन्वयक एवं
कार्यवाहक प्राचार्य



कौमुदी

2016-17



विद्यामृतमणुते

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः॥ ऋग्वेद – 1/13/9

तद् दिव्यमव्ययं धाम सारस्वतमुपास्महे।
यत्प्रसादात् प्रलीयन्ते मोहान्धतमसच्छटाः॥
सरस्वतीकण्ठाभरणम् 3/3

संरक्षकः
डा. रीता शर्मा
(कार्यवाहक प्राचार्य)

मुख्य सम्पादक :
डा. अलका बंसल
(विभागाध्यक्षा, अंग्रेजी विभाग)

परामर्शदात्री—समिति :

- डा. सतीश कुमार
- डा. अशोक त्रिपाठी
- डा. विश्वम्भर पाण्डेय
- डा. राजकुमार

सम्पादक मण्डल :

- डा. महिमा (अंग्रेजी प्रखण्ड)
- डा. निकेता (हिन्दी प्रखण्ड)
- डा. विजय लक्ष्मी (संस्कृत प्रखण्ड)
- श्री राकेश कुमार (सहायक, पत्रिका समिति)



श्रद्धेय श्री ओंकारनाथ बिसारिया जी
जिन्होंने 1909 में सनातन धर्म विद्यालय की
स्थापना की

महाविद्यालय के पथप्रदर्शक



श्री सोमांश प्रकाश
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

महाविद्यालय के पथप्रदर्शक



श्री अखिलेश दत्त⁴
अवै. सचिव एवं प्रबन्धक, प्रबन्ध समिति



चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ (यू० पी०) भारत

प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार तनेजा
पी-एच०डी० (अर्थशास्त्र)
कुलपति

पत्रांक : एस.वी.सी./20/728
दिनांक : 02.08.2017



सन्देश

जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि सनातन धर्म कालेज, मुजफ्फरनगर द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका “कौमुदी” सत्र 2016–17 का प्रकाशन किया जा रहा है। विश्वास है कि पत्रिका छात्र-छात्राओं के विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनेगी और उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन करने हेतु शुभकामनाएँ।

(प्रो. एन. के. तनेजा)

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय , मेरठ
CH. CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT

दीप चन्द्र

पी०सी०ए०स०

कुलसचिव



Deep Chandra

P.C.S.

Registrar



सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि एस०डी० (पी०जी०) कालेज, मुजफ्फरनगर की वार्षिक पत्रिका 'कौमुदी' प्रकाशित होने जा रही है। महाविद्यालय की प्रगति के सन्दर्भ में होने वाला यह प्रकाशन निश्चय ही स्वागत योग्य है; क्योंकि शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं बल्कि छात्रों में छुपी प्रतिभा को विकसित करने का अवसर प्रदान करना ही वास्तविक शिक्षा है, जो इस पत्रिका के माध्यम से छात्रों एवं छात्राओं को मिलेगी एवं छात्र/छात्राओं का बहुमुखी विकास करते हुए उन्हें एक संवेदनशील, सामाजिक प्राणी एवं विश्वबंधुत्व की भावना से परिपूर्ण आदर्श नागरिक के रूप में विकसित करने में सक्षम होगी।

मैं महाविद्यालय के छात्रों के उत्तरोत्तर विकास, प्रगति तथा चहुँमुखी उन्नति की कामना करता हूँ एवं हृदय से शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

०७/०८/१७

(दीपचन्द्र)
कुलसचिव

The Sanatan Dharm College Association (Regd.)
Muzaffarnagar-251 001

दि सनातन धर्म कालेज एसोशिएशन (रजिं०)
मुजफ्फरनगर – 251 001

Dr. C.K. Jain

Hony. Secretary & Manager

Ref.

Dated : 20-05-2017



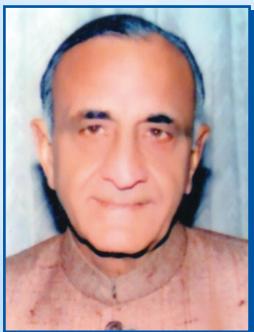
Message

I express my profound happiness at the publication of the latest issue of the college magazine “Kaumudi” (2016-2017). Hope the articles published in the magazine will spread awareness and enlighten the minds of the students. The magazine serves as a good training ground for students to try their hand at writing.

I congratulate the chief-editor and the whole magazine committee for bringing out this edition which validates their worth and commitment.


(Dr. C.K. Jain)

Message



दिनांक : 03.05.2017

सन्देश

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि महाविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका “कौमुदी” 2017 का प्रकाशन किया जा रहा है।

विभिन्न विषयों पर छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति को इंगित करने में पत्रिका एक अहम माध्यम है। इससे छात्र-छात्राओं की प्रतिभा की भी पहचान होती है।

मैं वार्षिक पत्रिका “कौमुदी” 2017 के सफल प्रकाशन हेतु कामना करता हूँ।

मेरी ओर से महाविद्यालय के समस्त शिक्षक वर्ग, कर्मचारी वर्ग एवं छात्र-छात्राओं को शुभकामना।

(सोमांश प्रकाश)
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

कौमुदी



दिनांक : 03.05.2017

सन्देश

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका “कौमुदी” के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

महाविद्यालय की पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न आलेख छात्रों की सृजनात्मक क्षमता को प्रतिबिम्बित करने के साथ—साथ महाविद्यालय में होने वाली रचनात्मक गतिविधियों से भी अवगत करायेंगे। महाविद्यालय द्वारा छात्रों के सम्पूर्ण विकास हेतु किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

मैं महाविद्यालय एवं छात्रों के उत्तरोत्तर विकास एवं उन्नति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ एवं सच्चे मन से शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

(अखिलेश दत्त)
अवै० सचिव एवं प्रबन्धक
एस.डी. कालेज प्रबन्ध समिति,
मुजफ्फरनगर

Principal's Message



Its a matter of immense pleasure for me to see that the latest edition of '**Kaumudi**' (2016-17) is soon going to be in your hands. This magazine will give you a kaliedoscopic view of all the activities of the college held during this session.

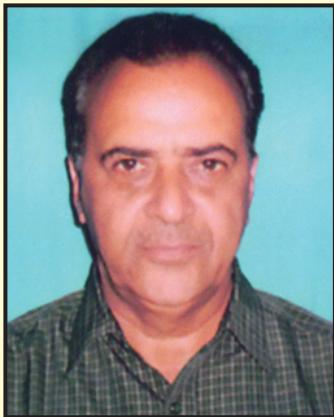
Since the day I was entrusted the charge of looking after the affairs of the college, I had been trying to make a congenial atmosphere to work in for the whole staff. I am pleased to note that during this session students and teachers were very enthusiastic in conducting umpteen curricular and extra curricular activities. The photographs printed in the magazine reflect their exuberance. As we all know it is these activities which exhibit the excellence attained by the institution in the spheres of academics, research, cultural, social and sports activities.

I would like to mention here that the support of the management committee, and the active co-operation of the whole staff which I got to the fullest helped me to work for the welfare of the college and students. I express my gratefulness to the whole staff and students of S.D. College. I also take this opportunity to thank the whole magazine committee for their tireless efforts in bringing out this issue of '**Kaumudi**'.

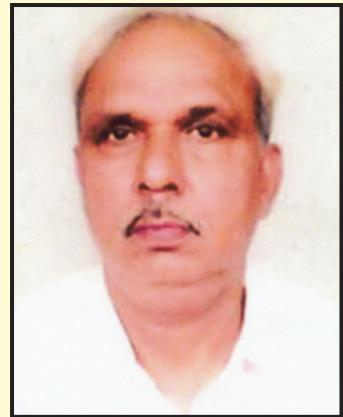
I pray to God to lead our college on the path of progress and grant all those associated with this college a joyous, bright and successful future.

Dr. Rita Sharma
Off. Principal
(26th May 2017)

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति



श्री अशोक सरीन
उपाध्यक्ष



श्री हरिभूषण गुप्ता
संयुक्त सचिव

माननीय सदस्यगण



श्री कृष्ण गोपाल



श्री देवेन्द्र कुमार



श्री आकाश कुमार



श्री ए. के. तायल



श्री शंकर स्वरूप



श्री अशोक अग्रवाल



श्री अजय पालीवाल



डॉ. रीता शर्मा

पदेन सदस्य एवं का. प्राचार्य (2016-17)

शिक्षक सदस्य



डॉ. आर. के. अग्रवाल



डॉ. शेखर चन्द्र



डॉ. शुचि अग्रवाल

शिक्षणोत्तर कर्मचारी सदस्य



श्री नितिश कुमार

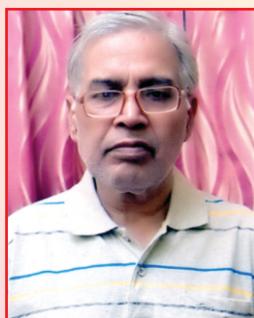
Bidding Farewell....



Dr. Ravi Kant Mittal, Associate professor and Head of the Department of commerce, who was also officiating Principal from 01-6-2016 to 27-01-2017 is a person of pleasant personality. He has been teaching in S.D. College since 11-10-1975 . He has served in this college for quite a long period of 41 years and 9 months approximately. Eight research scholars have been awarded Ph.D. degree under his able guidance and he has five publications to his credit. Three of his research papers are published in reputed journals. He has been a member of Board of studies and of Academic Council in C.C.S. University. He had been a member and at times convenor of several committees in S.D. College. He was very popular amongst his students as an excellent and sincere teacher. His absence will be felt gravely by us.



A man of impressive, academic endowments **Dr. Govind Prasad Gupta**, Associate Professor & Head of the department of Physics is a renowned name in the field of Physics. He did his M.Sc. in Physics (Specialization in electronics) in 1975 from S.D. College, and was awarded Gold Medal. He was awarded Ph.D. in Physics by IIT Roorkee. He had been working as a teacher in Physics in S.D. College since October, 24 1980. His retirement this year will create a void which will not be easy to fill. He worked as Post-doctoral Research Fellow in the Department of Applied Mathematics & Theoretical Physics at The Queen's University of Belfast. He visited Department of Physics and Center for Theoretical Studies of Physical Systems, Clark Atlanta University, Atlanta to work as Research Associate/Visiting Scientist. He also visited the International Atomic Energy Agency (IAEA), Vienna (Austria). During his career, he published Sixty Four research papers in refereed International Journals of world repute and presented his research papers in many International Conferences abroad.



Dr. Uday Bhanu Singh, Associate professor and Head of the Department of Geography joined S.D. College on 2nd Nov. 1979 and took voluntary retirement on 19 Jan, 2017. As a colleague he was a candid, helpful and simple hearted person and as a teacher he was very committed and hard working. He was diligently free from dissimulations of any kind. He was very much interested in reading and writing. He had attended many seminars and many of his research papers have been published. Many students have attained their Ph.D. degree under his worthy supervision. He had been associated with the teacher's Association of S.D. College for a very long time. Due to his ill health he has taken voluntary retirement. His absence had created a vacuum in the department of Geography. We all wish for his speedy recovery.

Bidding Farewell....



Another stalwart of S.D. College, **Dr. Rajendra Kumar Agarwal**, Associate Professor and Head of the Department of Economics is also retiring this year. Dr. R.K. Agarwal has years of meritorious association with S.D. College. He joined the college as a lecturer on 20th Oct. 1978. Since then, he has been a favourite teacher of the students and has extended his active cooperation in the development of the college by working in various committees. He also worked as a co ordinator of IGNOU centre at our college; he was a member of the board of studies of C.C.S. University and a member of R.D.C. in Agra university. As an academician, Dr. R.K. Agarwal is a well known figure in the field of Economics. He has presented his research papers in many National and International seminars and many of his papers have been published. Many research scholars have successfully completed their Ph.D. thesis under his able guidance. He has also been the office bearer of the Teacher Association for many years. As the Vice President of the Teacher's Association he always strived to raise issues related to the welfare of teachers.

Retired this Year:



**Shri Rajbir Singh -I
(Office Superintendent)**



**Shri Hariendra Rao
(Class IV Employee)
Library**

*Its our sincere prayer that God Almighty May
give you a healthy, happy and long life.*

શાદીંજલિ



**Shri Raj Kumar Singh
(Class IV Employee)**

PRIDE OF THE COLLEGE



**Km. Preeti Devi qualified
J.R.F. in Hindi**



**Mr. Dikshit qualified
NET in Hindi**

Km. Swati also qualified NET (Hindi)



**Km. Arpita Saini
(National Level Athlete)
Secured 2nd Position in
Cross-Country in India**

राष्ट्रीय सेवा योजना



स्वच्छता अभियान में भाग लेते शिक्षक



स्वच्छता अभियान में भाग लेते छात्र-छात्राएं



राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर



मतदाता जागरूकता कार्यक्रम



राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर संगोष्ठी



सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता



Jury

Principal's Message



Dear Students,

You are, indeed, blessed to find an opportunity to get education at S.D. (P.G.) College, Muzaffarnagar one of the best colleges of Uttar Pradesh which has been nurtured and benedicted by S.D. College Association, Muzaffarnagar. The college has the privilege of having a healthy, harmonious ambience and rich values which have played pivotal role in shaping the future of innumerable students. Our mission is to transform students into rational thinkers, competent workers, law abiding citizens and secularly enlightened individuals. This is my firm belief that the rich values and traditions imbibed here would carry you to greater heights.

With proud legacy of 68 years, the college has excelled in every field. Many students have registered their presence in the merit list of CCS University and others have brought laurels in Sports activities in College as well as University Level. Students educated from the college have carved a niche for themselves in various fields at national and international levels.

The present era is the era of cut throat competition wherein it becomes of paramount significance that students be equipped with appropriate knowledge, habits, attitudes and values leading to holistic development. Co-curricular and extra-curricular activities organised by our college facilitate the process of creative and critical thinking. They not only inculcate social and moral values, compassion for nature, pride for Indian culture and tradition and awareness for one's rights and duties but also make students good human beings and confident leaders. I am sure that you would develop versatile personality during your study period.

To be successful in life, have ambitions and define your goals very clearly. Discipline and hard work is the key to success. Be regular in your classes and focus on your goals. Your concerted efforts with the able guidance of your teachers would definitely provide a you way of being blissful and successful in life.

I, on behalf of S.D.(P.G.) College, Muzaffarnagar welcome all students and wish all the best for achieving greater success and scaling new heights in the coming session with the efforts and cooperation extended from time to time by all the Authorities of the University, Dignitaries of the Executive Committee of the College, Colleagues , Ministerial Staff and Class IV employees followed by the awareness created by Pressmen.

With best wishes
Dr. Satish Chandr Varshney
Officiating Principal
28 June 2017



Editorial



Dear Readers,

Kaumudi (2016-17) is ready for your kind perusal. I am glad to put on record the unstinted help extended to me by the magazine committee. Without their sincere contribution and co-operation it would have been difficult for me to fulfill the responsibility entrusted by the patron.

Like every college magazine, *Kaumudi* also reflects the standards of academic and extra curricular activities of our students. It also offers an opportunity to the budding talents among students to begin their apprenticeship as would-be-writers. Most of their write ups mirror the issues which are engaging and agitating the minds of the present generation.

This edition of *Kaumudi* contains articles of all hues which have been examined meticulously by the editors concerned. The whole magazine committee has made laudable and commendable efforts towards making this issue presentable and worthwhile. The co-operation and support of our patron, Dr. Rita Sharma deserves special mention.

The different extra-curricular (or should I call them co-curricular) activities and sports events showcased in the magazine add glitz to it and reveal the dazzlingly talented human resource we have. The students of this college use all available opportunities to harness their inner potential to overcome barriers in their progress.

Penchant for sports of our students is apparent from the various sports activities which are held in our college every year. The highspots of this session were the two days, workshop on National Sports Day, Football Tournament and International Yoga Day celebration which were worth a dekko.

Motivated by the "Swachh Bharat Abhiyan" the students of M.A. English, N.S.S and Rovers and Rangers devoted one full week before Diwali to cleanliness. The whole college campus was rigorously nay religiously cleaned. That cleanliness drive is still followed and nobody is allowed to spit or litter on the campus.

After offering their services to our institution for a considerable number of years four stalwarts of our teaching staff are retiring this year, Dr. R.K. Agarwal-Head dept. of Economics, Dr. G.P. Gupta-Head dept of Physics, Dr. R.K. Mittal-Head dept. of Commerce (and ex-officiating Principal) and Dr. U.B. Singh Head dept. of Geography. They will be remembered for their contribution in the field of education specially their respective streams. May God grant them all a long, happy and healthy life so that they continue to guide us for many more years. Shri Rajbir Singh I officiating office superintendent and Mr. Harinder Rao (class IV employee) have also retired. Our best wishes for them also.

We pay our sincere homage to Mr. Raj Kumar (Gardener) who left for his heavenly abode on 6th Nov. 2016. May his soul rest in peace and may God give strength to the bereaved family to bear this irreparable loss.

Lastly, I graciously acknowledge the unflinching support meted out by the Principal, the whole teaching and non-teaching staff of the college, especially Mr. Anjul Bhushan, Mr. Anupam Jain, Mr. Rakesh Tyagi and Mr. Satyendra Kumar. And of course all the honourable members of the magazine committee.

Due to some unavoidable reasons the publishing of the magazine was delayed. At present Dr. S.C. Varshney is the officiating Principal. He was given the charge on 22nd June 2017.

Dear readers, the magazine is now in your hands. Please ignore the errors that might have cropped up unwittingly. Your healthy suggestions and reactions will be thankfully acknowledged, and which I am sure can help us a lot in the preparation of ensuing editions of *Kaumudi*!

Dr. Alka Bansal
Chief Editor

Editorial

ACTIVITIES OF COLLEGE 2016-17



Farewell of Dr. R.K. Mittal



Farewell of Dr. Rajendra K. Agarwal



Educational Tour to Hastinapur (Dept. of Sanskrit)



Maharana Pratap Jayanti



Drawing Workshop



"Librarian's Day" Celebration



EXTRA-CURRICULAR ACTIVITIES 2016-17



Poster Making Competition Dept. of Zoology



Mehandi Competition Dept. of Zoology



M.Sc. (H.Sc.) S.F.C. Farewell Party



Activities of the Dept. of Home Science

ACTIVITIES OF THE DEPT. OF ENGLISH



STUDENTS SELECTED IN VARIOUS SPORTS TEAMS OF C.C.S. UNIVERSITY DURING THIS SESSION (2016-17)



Kapil Yadav
(Table Tennis)



Nikunj Mittal B.Com. III
(Table Tennis)



Abhilash Singh B.Com. II
(Table Tennis)



Ankit Pal B.A. III
(Gymnastic)



Shubham Ruhela B.A. II
(Gymnastic)



Rahul Pal B.A. II
(Gymnastic)



Himanshu Dhiman B.A. II
(Gymnastic)



Ashutosh B.A. III
(Cross Country)



Sahnavaaj B.A. III
(Cross Country)



Depanshu Pal B.P.Ed.
(Hockey)



Nitin Kumar B.A. I
(Hockey)



Shubham Antal B.P.Ed.
(Soft Ball)



Vinay Kumar B.P.Ed.
(Soft Ball)



Akash B.A. I
(Volley Ball)



Rahul Kumar B.A. II
(Foot Ball)



Anuj Kumar B.A. II
(Kho-Kho)



Arpita Saini B.P.Ed.
(Athletics)



Deepika Kharb B.A. II
(Volley Ball)



Farheen B.P.Ed.
(Soft Ball)



Aruna B.P.Ed.
(Hockey)

WORKSHOP ON THE OCCASION OF NATIONAL SPORTS DAY



INAUGURATION OF THE WORKSHOP



CLOSING OF THE WORKSHOP



LECTURE ON "HOW TO MARK TRACK AND FIELD"



BLOOD PRESSURE MEASUREMENT CAMP



COOKING COMPETITION (B.P.Ed.)
DURING INTRAMURALS



PERSONALITY DEVELOPMENT WORKSHOP (B.P.Ed.)

ANNUAL ATHLETIC MEET 2016-17



INAUGURATION OF ATHLETIC MEET



GUESTS ON THE DAIS

MARCH PAST OF ATHLETES



ATHLETES IN THE FIGHTING SPIRIT



BEST FEMALE ATHLETE



BEST MALE ATHLETE

ACTIVITIES OF 2016-17



WINNERS OF ATHLETIC MEET



NATIONAL CROSS-COUNTRY WINNER (RUNNER-UP)



INAUGURATION OF INTRAMURALS



GYMNAStic FEAT



CADETS PRACTISING SHOOTING



N.C.C. CAMP

INTER-COLLEGE FOOTBALL TOURNAMENT 2016-17



INAUGURATION CEREMONY



CHIEF GUEST MEETING PLAYERS



TEAMS FROM VARIOUS COLLEGES



PLAYERS PLAYING FINAL MATCH



CLOSING CEREMONY



OUR STUDENTS PERFORMING AEROBICS



INAUGURATION OF PEFI VIDYA DAAN YOJNA



DISTRIBUTION OF BOOKS BY PEFI

Kaumudi

2016-17

English Section

*She, whose hands are adorned
by the excellent veena, and
whose seat is the pure white lotus;
She, who is praised by
Brahma, Vishnu, and Mahesh;
and prayed to by the devas
O Mother Goddess, remove
my ignorance!*

Editor :
Dr. Mahima

Student Editor:
Miss Gaganpreet Kaur
M.A. IV Semester

INDEX

(ENGLISH SECTION)

1.	Professional Possibilities of the Study of Home-Science in Today's Scenario	29
2.	Professional Possibilities in Food Science	31
3.	Service to Humanity is Service to God	34
4.	Solid Waste Management: A Prime Need of Present Time	35
5.	Black Money In India	38
6.	Profile of A Home-Scientist	39
7.	Teacher - A Blessing	40
8.	Power of Positive Attitude	41
9.	Home Science-The Science of Home	42
10.	You can Achieve Your Goal	43
11.	India in the 21st Century	44
12.	Women Empowerment: A Reality or Dream	46
13.	The Making of a "Mahatma"	49
14.	Value of Life	52
15.	Media and Violence against Women	53
16.	Banish Ignorance	55
17.	Root of all Contemporary Problems: Over population	56
18.	My Last College Day	57
19.	Secret of Happiness	58
20.	Laughter and Tears	59
21.	Importance of Vocational Education	60
22.	The Colonial Hangover on Indian Culture	62
23.	Demonetisation	64
24.	Participation of Indian Women in Sports	66
25.	Women in Vedic Culture	67
26.	An Excursion to Sardhana Church	69
27.	Prospectives of Home Science	71

PROFESSIONAL POSSIBILITIES OF THE STUDY OF HOME-SCIENCE IN TODAY'S SCENARIO

Dr. Shuchi

Associate Prof. & Head Dept. of H.Sc.

As we know Home-Science is the study required to development of home or family life within a changing society by taking the help of scientific knowledge and methods.

Home-Science deals with all aspects of the life of the community and the nation. It integrates the application of knowledge synthesised from different sciences and humanities to improve the human environment, family nutrition, management of resources, child development, community resource management and consumer competence.

Home-Science is an interdisciplinary course covering a wide spectrum of subjects and presents a blend of science and art that moulds a student with a variety of life skill so literally, the word home science can be interpreted as Systematic Education for home living.

It does not limit itself to the home related skills of cooking, Laundry, decoration and stitching. Home-Science is now out of the shall of misconceptions and has opened its door for new avens in all possible fields of life.

The subject involved in making home-science a wonderful learning tool for better living are hygiene, rural development, community, living art, food, clothing, textiles and home-management etc.

In recent scenario home-science is gaining huge popularity among students wing to its wide application in industries like food preservation and training, MBA, Clothing, Textiles and Interior Decoration etc. Today Home-Science is described as a multipurpose programme of study which takes care of individual's need and interests and develops abilities and capacities for successful home making in a dynamic society. Home-Science extension aims at dissemination of scientific knowledge and technology among the rural masse, inorder to improve their quality of life. Hence the over all goals of all national development programmes are to make adequate provision for fulfilling the basic needs of the people like good nutrition, adequate resource management, good health care facilities, education, recreation and job opportunities.

Home-Science education has played an important role in strengthening the inner ability of our women by enhancing their level of education and by imparting financial independence. Home-Science also encourages children to participate in community extension activities and thereby makes them realize their commitment to their society and less privileged and school drop outs in rural and Urban areas.

Some Home-Science Career Prospects:-

Home-Science students have a wide range of fields that they can enter.

- * **Production Job:** This covers food preservation, dress making, Specialized cooking. Home-Science Graduates can go into the textile business, fashion designing or even work in hotels and in food industries.
 - * **Research Jobs:** These involve educating specific segments of the population such as mother, farmers and villagers on the food value of food items. Also one can work as a researcher/Scientist in Research & Development field and Lab of food Preservation etc.
 - * **Sales Jobs:** Sales promotion of food items (baby foods and textile products) are given to home-science graduates since they have relevant information and experience.
 - * **Service Jobs:** Maintenance and Supervision of house keeping departments at tourist, resorts, hotels, catering facilities, restaurant etc.
 - * **Teaching Jobs:** Job as a primary school teacher, Postgraduate teacher and Professor in college and universities.
 - * **Technical Jobs:** Manufacturing industries do require home-science graduate to serve as a research assistants.
 - * Job as a dietician in Hospitals and Nutrition Consultants/Nutritionist in food sectors.
 - * Psychologists and counsellors in health care organization and in NGO.

To sum up we can say that home-science is not only confined to the study of household activities but it covers a wide range of possibilities in different fields.

“Choose a job you love and you will never have to work a day in your life.”

—Confucius

PROFESSIONAL POSSIBILITIES IN FOOD SCIENCE

Dr.Mamta Shyam.

Asso. Prof., Department of Home-Science

Home-science and technology is one of the very few courses in India that promotes interactive learning methods. During the graduation phase, students get chances to broaden their knowledge and explore their possibilities. The course includes local field visits, industrial tour, and in-plant (industrial) training, aside from routine theory and practical classes. Local field visits increase interests and create more positive feelings toward that topic. Industrial tour across the country and industrial trainings provide opportunities to learn practically through interaction. During the in-plant training period, the students visit the industry and get insights regarding the working environment.

Consumers are increasingly demanding healthy food. Hence, food science has better job prospects than any other industry. Worldwide, the areas of good job prospects are product development, quality control, and nutrition and food safety . People have become more conscious about food safety due to the routine inspection of eateries, hotels, and industries, and awareness programs run by DFTQC (Department of Food Technology and quality control), and other professional organizations, which

have demanded and created more opportunities to food science graduates.

The World Summit on Food Security (2009) recognized that by 2050, the global food production must increase by about 70% to feed the estimated 9 billion people (FAO 2022). This projection is expected to increase the annual consumption of nearly 1 billion metric tons of cereals for food and feed and 200 million metric tons of meat. This can be possible only by science-based improvements in the production of agricultural goods, application of food science and technology, and improvement in food supply systems .This, of course, certainly demands food scientists and technologists. Hence, the scope of food science graduates is increasing day by day.

Food science is the branch of applied sciences that combines the fundamentals of biochemistry, physical sciences and chemical engineering to study the physical, chemical and biological nature of food items. In simple words, food science (or food technology) deals with the manufacturing, processing, treatment, preservation, and distribution of food.

Food science along with technology ensures the delivery of a safe, nutritious,



and abundant food globally. It helps us to advance the food system, minimize risks, and maximize benefits. Developments in food science and technology have enhanced food safety and have kept the quality consistent; provided reduction in nutrient deficiency-related diseases; reduced food waste; decreased home food-preparation time; lower household food costs; products specifically formulated to meet the nutritional needs of specific subpopulations; and efficient global food distribution.

The ultimate objective of food science is to understand the principles of food processing and to improve the food quality for the general public. Whatever food item (especially packaged ones) you come across in the supermarket (or retail store), has had some contributions from a food scientist, food technologist or food engineer.

Food Science, Food Technology & Food Engineering

Though Food Science Food Engineering and Food Technology are very overlapping, there are few subtle differences. I am not going to get into too many details on this. But, I would like to provide the following illustrations that I found on Research Gate:

- Food Technology:** Fire can be used to cook food.

- Food Science:** Burning wood produces heat, water, and carbon dioxide. Heat denatures proteins in food.
- Food Engineering:** Building a fireplace and chimney makes it easier to cook with fire without filling the room with smoke.

Majority of the food items are biological in origin. The process of harvesting, processing, distribution, storage and preparation is quite complex. Understanding the process, and solving various problems during the whole process, requires broad-based knowledge and training.

Food scientists are responsible for making safe and nutritious food along with innovative packaging, and that also in abundance. Thus, Food Scientists allow us to make the best use of our food resources and minimize waste of resources.

Another idea behind processed food is to enhance the compliance of few vital elements. There are quite a few kids who do not want to consume milk (contains various vital nutrients important for growth) vegetable or fruits.

Hence the food science gave us health drinks (rather brands) like Horlicks, Boost, Bournvita, Complan etc. They might not contain same nutrient value as proper milk, fruits and vegetables. But, kids do tend to drink them as they taste better.



Growing Demand of Food Science & Technology Professionals

Relatively Food Science is still a very new discipline, and it is growing due to rapid urbanization and lifestyle changes worldwide. Being a branch of applied sciences, Food Science is very multi-disciplinary in nature, just like Biomedical Science, Pharmacy or Translational Science.

Required Education & Training for a Career in the Food Industry

Ideally one needs to have Physics, Chemistry, and Biology (PCB) combination in your 10+2, and may be Mathematics as well. At Bachelors level, ideal courses are 3-year or 4-year degree courses in Food Science, Food Technology, Food Science and Technology, or Food Science and Agriculture.

Alternative courses are Biotechnology, Microbiology, Biochemistry, Organic Chemistry, Chemical/Process Engineering, Nutrition, Pharmaceutical Sciences etc.

To have a career in R&D, QC and QA, you will require a higher degree (Masters or PhD). You can gain more advantage by pursuing a higher degree from abroad. If you are more inclined towards the sales and marketing (product/brand management) roles then an MBA will be

very helpful.

In case you want to pursue a career as a Nutritionist or Dietician, a formal degree after Bachelors is not always necessary. You can do a Certificate or PG Diploma course in Nutrition or Dietetics.

Popular Career Paths & Job Profiles in the Food Industry

- Research & Development (Food Scientist, Food Technologist, Food Chemist, Product Development Specialist)
- Quality Control & Assurance (Food Chemist, Food Inspector, Toxicologist)
- Food Processing (Food Processor, Process Development Specialist, Manufacturing Specialist, Food Production Manager)
- Sales, Marketing & Brand Management (various roles like other industries)
- Others (Dietician, Nutritionist, Animal Nutritionist, Diet & Fitness Counselor)

Scope of Food Industry in India

The Indian Food Industry is currently valued at USD \$39.71 billion, and the value is likely to reach USD \$65.4 billion by 2018 (Govt. of India and 1BEF).

According to DIPP, the Indian Food Processing sector has received around USD \$6.7 billion as FDI between April 2000 and December 2015. The investments are poised to reach the value

of USD \$33 million in the next 10 years.

Besides the investment factor, the opportunity factor is also there - as per the data from the Ministry of Food Processing Industries, 42% of the Indian Food Processing Industry is still unorganized so opportunities are also there for prospective entrepreneurs. Overall, signs are very promising for the future within the food industry.

Last but not the least - there is enough room, and in fact, demand for Food Tech Startups. There have been many players in

the Food Tech domain. But, all of them have been working, on the vertical like Discovery, E-Commerce (Ordering/Booking) and Delivery (logistics). If you are a foodie and passionate about science, then you can definitely think about having a career in Food Science and Technology. The Food and Beverages industry in India is one of the top ones. According to my analysis Food Science & Agriculture is also among the top trending subjects to study abroad.



SERVICE TO HUMANITY IS SERVICE TO GOD

Miss Nisha Pandey
B.A. II year.

Many Great writers and philosophers have emphasized upon this fact that if you are serving human beings it means you are serving God. But if you serve God and ignore or hate human beings on the basis of caste, creed, class, colour and religion, no God will be happy with you. Even Bible and all holy books talk of loving your neighbour as thyself. Mother Teressa, the great nun, who served the lepers and the down trodden, has been conferred sainthood on her because of her selfless service to humanity.

This world is the garden of God and all human beings are his children playing in the garden for a limited period of time.

So instead of condemning each other on some basis or the other, it is better to love, help and tolerate each other, because by doing so you will be pleasing God. The nobel laureate Rabindra Nath Tagore has said in his famous work "Gitanjali" that if you want to serve God serve his children (People). The footstool on which God is resting his feet lies in the place where live "the poorest, the lowliest and the lost". If you wish to touch the feet of God you will have to keep your ego and pride aside and go near the poorest, lowliest and the lost to touch the feet of God. Thus it is quite evident that if we serve mankind it is indirectly service to God.

SOLID WASTE MANAGEMENT: A PRIME NEED OF PRESENT TIME

*Dr. Shekhar Chand
Assistant Prof. Dept. of Zoology*

As the human civilization and various developmental activities are being progressed for the availability of various facilities to make human life more comfortable, we are creating some kind of problems before our nature, environment and biodiversity including ourselves. By various human activities, the big amount of solid waste is being produced regularly from our houses, hospitals, markets etc. These solid wastes of biodegradable and non-biodegradeble nature are coming from our houses and remain untreated due to lack of proper disposal techniques in our country and society. The biodegradable wastes include such organic substances which decompose by biological process as scraps of vegetables, fruits, leaves, paper, remaining cooked food, coverings of seeds, egg shells, tea bags etc. The non biodegradable category of waste includes plastic bags (polythene bags), plastic products, thermocol sheets, glass, blades, metal pins, rubber items, batteries, carboards, biomedical wastes etc. We can see the scene of dumping site around us in our colonies, on roads, in open area due to lack of proper thinking, efforts, knowledge and facilities of proper disposal of wastes

of solid wastes. These wastes choke the drainage system. The reason behind this problem is our let it go attitude and we throw our solid wastes on roadside & in open places without any shame & hesitation. These solid wastes are responsible for a number of problems as health complications and environmental challenges.

The scene of our urban, suburban and rural area is very dirty & unpleasant due to these open dumping sites at different locations. A foul smell is produced from these dumping grounds. But if we will take some small steps and make some efforts by changing our thinking, we can remove this big problem in a very simpler eco-friendly way. For this we should follow these things to maintain cleanliness in our surroundings to keep our environments fresh & hygenic. Another big benefit of such things is to generate employment for our youth.

For these biodegradable and non-biodegradable waste, we should keep two separate garbage bins in our houses and in our colonies. The green coloured bin for organic bio-wastes and red coloured bin for non-biodegradable wastes. The bio-



wastes as kitchen wastes, scraps of vegetables & fruits should not be kept in polyethene bags & these should be emptied in green bin. Another important thing is here that we should emphasize on phenomenon as reduce, reuse and recycle (RRR) of materials.

The solid waste management is used to refer to the processes of collecting, treating and disposing of solid waste that is discarded because it has served its purpose or is no longer useful. The solid waste management is now an integral part of environmental conservation that should be observed by individuals and companies globally. This will keep our environment and surroundings clean and green & reduce health complications. We can contribute in Govt's cleanliness programme by taking and assuming this as our responsibility and duty for clean & green India. Solid waste management is all about how solid waste can be changed and used as a valuable resource. Solid waste management should be embraced by each & every household including various social bodies as schools, colleges, hospitals and business owners across the country. Improper disposal of municipal wastes create unsanitary conditions & these conditions in turn can lead to pollution in our environment and to out-breaks of vector borne disease and other currently

outbroken mysterious pathogenic diseases in our society. Hospitals or biomedical wastes include syringes, blades, used gloves, drugs, papers, plaster of paris, plastics & other chemical. All these require proper disposal. For this govt. administration should ensure the monitoring of solid wastes from hospitals, shops, markets, schools, colonies and other bodies to instruct them to dispose the solid waste scientifically & eco-friendly. These organisations shouldn't be allowed to throw the solid waste on roads & in open area which is highly health hazardous.

Now, the composting is technique for the proper disposal & converting biologically bio-degradable waste into beneficial products as compost or organic manure. This organic natural bio-product can be used as manure in our vegetable fields, gardens and in crop fields to produce organic edible products as organic vegetables, fruits, pulses, wheat, rice etc. using no chemical fertilizers and toxic chemical pesticides. We can take a small step which will have a big positive impact in our society by taking this solid waste management program as a challenge. We can install a compost machine in our backyard in a scientific way. Your compost machine (unit) will work best if it is fed a diet of green (nitrogen rich) and brown (Carbon rich) materials. Composting is

easy and it happens on its own. However, there are few things you can do to speed up the composting process. Just follow these steps:

1. Chop— Chop up longer items before putting them in your kitchen collector.
 2. Once your kitchen collector is full, take it to compost machine & empty it out.
 3. Mix the new material into the existing pile using a compost turner, pitch fork or other garden tool. This also adds oxygen, a key component to successful composting.
 4. Cover your food waste with a handful of old leaves, other dried yard waste or soil. This will add carbon and reduce the chance of odours (Smell) of fruits-flies and other flies breeding. Then put the lid back on and let it work as composting. Keep the material in your compost machine about as moist as a wrong-out sponge.

Harvesting your compost:- After a few months the kitchen scrapes (biodegradable wastes) near the bottom of your compost machine will have decomposed to a point where you can not identify the materials you added and will look much like soil. Compost is a nutrient rich soil amendment, created by the natural decomposition of kitchen and yard waste by microbes, worms and other organisms. When mixed with soil it will revitalize it make it healthier, more productive and increase moisture

retention. You can use it by spreading compost in your vegetable and flower garden in spring or fall and work it into the soil.

On your lawns:- Top dress your lawn with compost in the spring or fall. This will help to maintain healthy soil structure and build your top soil. You can spread this compost around the base of trees & shrubs. It can be used in crop fields.

By composting and recycling the materials you can reduce the amount of garbage you generate by upto 80% or more than it. It quickly becomes routine and makes a big difference. The added bonus is that the compost you generate will make your garden lawn and crop fields healthier and less dependent on chemical fertilizers and watering. So, we can prevent ourselves, other animals and our environment from health hazardous chemicals. By doing so we can save the animals like cows, bulls preventing them to eat polythene bags with fruit and vegetable scrapes because the polythene is cancer-causing substance (carcinogenic). This composting technique will offer the opportunity to our youth to generate self-employment by installing a compost unit at cheaper cost with eco-friendly device, conserving our environment. This small step can make our country India clean and green.



BLACK MONEY IN INDIA



The problem of black money is rather, like a cancer in the country's economy which, if not checked in time will ruin the country's economy. Black money in economic terms means "Unrecorded money". In other words, black money is basically income either earned by engaging in unlawful activities or by misappropriating funds which legally belong to the treasury. Black Money is the aggregate of income which are taxable, but are not reported to tax authorities.

The Sources of Black Money

Black money arises due to various sources. Some of those sources are:

- i) Unrealistically high rates of taxes.
 - ii) Complicated tax-laws in country
 - iii) Real estate transactions.
 - iv) Gambling, matka, drug-peddling, smuggling
 - v) Political activities such as elections.
 - vi) Licensing and permit system
 - vii) Large-scale manufacturing

Causes of Black Money:

Some important causes of black money in India are:

- i) Different Rates of excise duty
 - ii) Control Policy

- iii) Quota System
- iv) Agricultural Income
- v) Real Estate Transaction
- vi) Inflation

Impact of Black Income on the Economy

Black money is a socio-economic evil. The following are the impacts of black money on the economy.

- i) Under-estimation of GDP
 - ii) Over Liquidity
 - iii) Loss of revenue to the Government
 - iv) Misdirection of National resources
 - v) Corrupt Political system
 - vi) Erosion of value system of society

Suggestions to Control Black Money:-

The various suggestions to control Black Money are:-

- i) Demonetization
 - ii) Reduction in tax Rate
 - iii) Economic Liberalization
 - iv) Simplification of tax laws and tax procedures
 - v) Special Bearer Bond scheme
 - vi) Integrate sub registrar office, sales tax and service tax department with income tax department.



TEACHER - A BLESSING

Sweety Malik

M.A. IV Sem. (English)

Like a glimpse of the rainbow in a clear blue sky,

Like a shower of rain on a patch of land dry,

Like a glimmer of light on a dark cloudy night,

Like a gust of wind for a struggling little kite,

Like a ray of sunlight for a young, growing tree,

Like an experienced mother bird for a struggling fledgling,

Like a prominent lighthouse for people lost at sea,

Like a fragrance of flower for a hardworking bee.

Like a musician composing a brand new beat,

That is what a teacher means to students like me.

The value can't be measured by a scale or rupee,

For a teacher is the one who moulds our tomorrows,

Gives us the strength and courage to face turbulence & sorrows.

Some one who guides to the path we need to take,

Teachers are to be real & not someone fake.

A person who loves like her very own child

Adorns us with affection but is both stern & mild.

A perfect combination of a friend, philosopher & guide,

Always there to help & be by our side

Epilogue

“We thank you, our dearest teachers for all you have done,

For shaping our personality and making us someone,

In this whole wide world wherever we may stay.

You'll be remembered as our dearest teachers, till the final day."

POWER OF POSITIVE ATTITUDE

Bhavna Chaudhary
M.A. II Sem. (English)

A Positive Attitude helps to cope more easily with the daily affairs of life. It brings optimism into life and make it easier to avoid worries and negative thinking. If adopted as a way of life, it would bring constructive change into the life, and makes the world happier and brighter.

See the bright side of life with a positive attitude; become optimistic and expect the best to happen.

A Positive frame of mind can help in many ways. Such as:-

- Expecting success and not failure.
- Feeling inspired.
- Strengthened not to give up, but to encounter obstacles in the way.
- Looking at failure and problems as blessings in disguise.
- Believing in yourself and in your abilities.
- Enabling to show self-esteem and confidence.
- Looking for solutions, instead of hampered by problems.
- Seeing and catching opportunities.

A Positives attitude leads to happiness and success and can change life.

Benefits of a Positive Attitude:

- It helps to achieve goals and attain

success.

- It brings more happiness into life.
- It produces more energy.
- Positive attitude increases faith in your abilities and bring hope for a bright life.
- It enables to inspire and to motivate.

Attitude is like an inner architect building resilience in the mindset what to think about ourself, abilities, financial gains, (or losses) and success; when attitude is positive it is productive.

This positive energy serves as the driving force behind attaining the goals when we have 100 percent commitment to what we are doing. Find the humour and lighter side of life and climb the ladder of success. This will decrease the stress. More positive energy will be able to support hardwork.

To remain light and lively is a great skill that in turn lightens up the work environment. It adds charisma to persona and breeds trust with the desire to work.

In a world where every person cherishes the urge to strive, to seek, to find and not to yield, positive attitude helps to access resources, talent, finances, technology and the like. Remember, a person is successful because of determination, resilience and attitude.



HOME SCIENCE-THE SCIENCE OF HOME

Pavi Saini

Lecturer

Dept. of Home Science (S.F.C.)

Home Science is the science of a home and it includes all the things that concern the person, home, family members and resources. It is the education for “better living” and the care of this education is the family ecosystem. It also deals with reciprocal relations between the family and its natural and man-made environments. It aims at getting maximum satisfaction for the person and their family members through the efficient and scientific use of your resources. It gives the person all the knowledge of the scientific procedures involved in making a home beautiful. Home Science integrates the application of various science and humanities to improve human environment, family nutrition, clothing needs, management of resources and child development.

Home Science is a scientific course of study which moulds a students with a variety of life-skills. “This is a unique discipline with a blend of science and art.” It does not limit itself to the home related skills of cooking, laundry, decoration etc.

Home Science Career Prospects:-

Home Science students have a wide range of fields that they can enter—

Production Jobs:- This covers food preservation, dress-making, specialized cooking, handicrafts etc. Graduates of Home Science can go on to enter the textile business, fashion-designing, boutique-owner etc. or even work in hotels and in food industry etc.

Research Jobs:- These involve educating specific segments of the population such as mothers, farmers & villagers on the food-value of certain food items. Also one can work as a researcher/scientist in R & D labs on food preservation etc.

Sales Jobs:- Sales promotion of food items and clothing items are given to home science graduates since they have relevant information and experience.

Teaching Jobs:- The recognized qualification for a primary school teacher is a Bachelor degree in Home Science and many post-graduates are absorbed as senior secondary school teachers and colleges lecturers and professors.

Home science is now out of the shell of misconceptions and opens its doors for new avenues in all possible fields of life. “Home-Science education is worth life education.” It explores the plausibility of the establishment of the perfections in the social order starting from the home life to the community level.



YOU CAN ACHIEVE YOUR GOAL

Sofiya Ansari

M.Sc. (Food & Nutrition) II Sem.

No One is the world is perfect,
No One is born with special mind.
Self-confidence of one is the fact
To stand like a tree in the stormy wind.
If you will try it one time,
You can make it another time.
The spirit “I can do it”.
Should be on your tongue as a rhyme.

Don't worry about your failures in past,
Remember those achievements
Which come your way last
After any failure never have sigh,
Get up and try to get high and high.

There is morning of every night
With this thought try to choose
The path that is right

You should never be scared of difficulties,
Never fright
But have the power to fight.

Opportunities are incredible in the world,
To get them just put a step forward.
You should before reaching Upward.



INDIA IN THE 21ST CENTURY

Bushra Jamal

M.A. English IV Sem.

Judging from the winds of change sweeping across, a fair and some sure future image of the country, it is essential that we review the major trends, events and happenings in the past few decades because future projection cannot be made correctly by ignoring present events and past happening. The past, the present and the future present a logical time-sequence. They are like links of the same chain.

People have become better aware of issues like family planning, child and woman-welfare and have begun to accept the norm of a small, planned family. General awareness about ecology and environment is also on the increase. Many diseases, previously regarded as fatal, have now been controlled and eradicated, but diseases like cancer and AIDS have raised their ugly, deadly heads. On the basis of these developments we look forward to a promising new era with occasional gloom and despair.

Every country in the world will try to have friendly relations with India. We will have good relations with our neighbouring countries. Indo-Pak relations will improve and there will be free trade and communication between these two countries. India and China will succeed in settling their border disputes in the coming century and both will have very good relations with each other. The new century will see India and Shri Lanka as good friends. In the same way India's relations with Nepal, Bhutan, Burma will improve considerably.

Prime Minister Mr. Narendra Modi on November 3, 2016 inaugurated the 2016 Asian Ministerial conference on Disaster Risk Reduction in New Delhi. Held from November 3 to 5, 2016 the conference paved the way for implementation of the framework in the Asian region and also devised a mechanism for monitoring its progress. The conference was organised by the Union Government in collaboration with the United Nations office for Disaster Risk Reduction (UNISDR). It focused on consultation regarding collaboration partnership with governments and stakeholders to mainstream Disaster Risk Reduction in the region. It adopted the 'Asian Regional Plan for Implementation of the Sendai Framework endorsed by the Asian countries. This was the first major inter-governmental event after the adoption of the Sendai Framework for Disaster Risk Reduction adopted at the 3rd UN world conference in Sendai, Japan in March 2015. This was the second time that India hosted AMCDRR after 2007.



India took a historic step when, in the evening of November 8, 2016 news came that Prime Minister Mr. Narendra Modi was about to address the nation at 8.00 PM, no one had a clue what it was all about. It was his declaration about demonetization of 500 & 1000 rupee notes. He focused on black money. In the fight against black money, even after a bold move like demonetizing high value currency, the Government must remained alert and watchful.

India has achieved great success in economics, trade, Industry, education and science and now we can presume that India will surely occupy position in the world in 21st century. The day is not far when the whole world will recognize her as the leader or torch bearer of Asia.

In the economic field, our country will make great progress in the 21st century. Standard of living of all persons will rise. India will become a big exporting country in the coming century. She will not be in the need of taking loans from the world Bank. The century will be able to put a check upon rising of necessary commodities. The century will make great progress in industry and agriculture will be modernized.

Our country has already made progress in the field of agriculture as a result of which it has become more self-sufficient in food-production. But sometimes unforeseen calamities like drought in some parts of our country create great havoc. In 21st century we hope that our competent scientists will find out satisfactory solution to the continued dry spell occurring quite frequently. Our laborious farmers will be provided with adequate means of irrigation.

In scientific field, India will become an advanced country in Asia. She will not stand in the need of borrowing technology from any country of the world. India will also make great progress in cultural field. She will patronize her national culture in music, dance, painting and sculpture. In social field, India will get rid of many social customs in 21st century. In short, India of 21st century will become the country of my dream. All her citizens will be proud of being Indians. She will no longer be a developing country. Instead she will go hand in hand with all the developed nations of the world.

In 21st century India will overhaul her present system of education. Technical and vocational training will become integral part of the education of the youth of the country. There will be no educated unemployment in India in this century. This will be possible on account of the change in her educational policy. The country will be free from illiteracy.

This is the picture of our near future. Our country will be prosperous. Education will be free and universal. We shall lack nothing. All will be happy. Equality and social justice will be guaranteed to all.

WOMEN EMPOWERMENT: A REALITY OR DREAM

Shweta Kaushik
Lecturer Dept. of Home Science(SFC)

You might be listening to news, reading newspaper or magazine, you would have gone through incidents and accidents with women in India. While any other article on women's empowerment in India will take a look at our rich heritage and enlightened societies of the past where women were treated as equals, the concept of "India" itself evolved quite recently, relative to the sum of its parts' histories. But the TRUTH is that in the modern India, the woman has always been a second grade citizen, no matter what its esteemed leaders have said or done. Gender discrimination is the least of worries for women in India, known otherwise as the fourth most dangerous country in the world for women. Other instances of violence against women have an astonishing and grim variety to it - with acid throwing, domestic violence stemming out of dowry, rape, harassment etc.

It is hard to fathom how slow moving the cultural exchange of the world is when you find out that there are several places across the country where harmful customs of the ancient world coexist with modern appliances and thought. However that may come as hardly any surprise to anyone who has lived in India - the dichotomy of society is something that can only be explained by a refrain from an old Bollywood song: "It happens only in India!" Yes, it is only in India that glaring and brutal gang rapes occur frequently in a state that is headed by a woman Chief Minister.

What is Women Empowerment?

In the simplest of words it is basically the creation of an environment where women can make independent decisions on their personal development as well as shine as equals in society.

Women want to be treated as equals so much so that if a woman rises to the top of her field it should be a commonplace occurrence that draws nothing more than a raised eyebrow at the gender. This can only happen if there is a channelized route for the empowerment of women.

Thus it is no real surprise that women empowerment in India is a hotly discussed topic with no real solution looming in the horizon except to doubly redouble our efforts and continue to target the sources of all the violence and ill-will towards women.

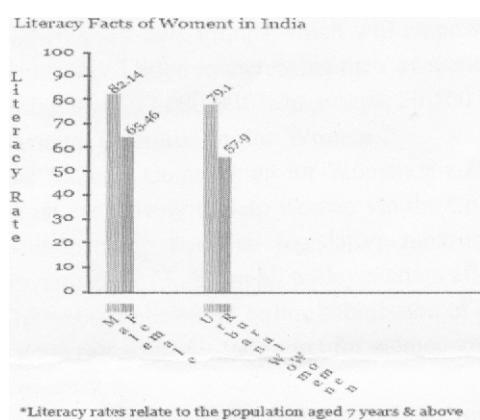
Crime against Women

The crimes against women fly directly against orchestrating women empowerment in India. A report on the crimes against women by the National Crime Records Bureau comes up with very alarming statistics. To understand what it is that drives such crimes against women is an essay on its own, if not a PhD thesis. There are a vast number of drivers for such behaviour in the Indian citizenry, but there are some acute reasons that such behaviour continues despite the apparent movement towards civilisation.

Challenges

There are several challenges that are currently plaguing the issues of women's rights in India. A few of these challenges are presented below. While a lot of these are redundant and quite basic issues faced across the country, these are contributory causes to the overarching status of women in India. Targeting these issues will directly benefit the empowerment of women in India.

Education



Data Source: Census of India 2014
crash and break the wall of intolerance

Health & Safety

The health and safety concerns of women are paramount for the wellbeing of a country, and is an important factor in gauging the empowerment of women in a country. However there are alarming concerns where maternal healthcare is concerned.

Poverty and illiteracy add to these complications with local quacks giving ineffective and downright harmful remedies to problems that women have. The empowerment of women begins with a guarantee of their health and safety.

47

Actions Taken to Empower Women:

Ministry for Women & Child Development is there to formulate plans, policies and programmes; enacts/ amends legislation, guiding and coordinating the efforts of both governmental and non-governmental organisations working in the field of Women and Child Development. As mentioned earlier, the empowerment of women begins with their safety and health and this Ministry is committed to providing them.

Swayamsidha Programme

Additionally, the Ministry is also implementing the Swayamsidha programme - an integrated scheme for the empowerment of women. Core to this programme will be the establishment of women's self-help groups which will empower women to have increased access to all kinds of resources that they are denied, in addition to increasing their awareness and skills. This programme will benefit about 9,30,000 women with the setting up of 53,000 self-help groups, 26,500 village societies and 650 block societies.

National Commission for Women

The National Commission for Women is a Department within the Ministry of Women and Child Development. It was set up exclusively to help women via Constitution - by reviewing Legal and Constitutional safeguards for women, recommending remedial legislative measures, by facilitating quick redressal of grievances and by advising the Government of India on all policy matters affecting women.

The website allows for online submission of complaints and fast redressal exclusively for women. Additionally it is also a good source of information for women and the Commission is committed to help out women in need.

Conclusion

In order to truly understand what is women empowerment, there needs to be a sea-change in the mind-set of the people in the country. Not just the women themselves, but the men have to wake up to a world that is moving towards equality and equity. It is better that this is embraced earlier rather than later, for our own good.

Swami Vivekananda once said "*arise awake and stop not until the goal is reached*". Thus our country should thus be catapulted into the horizon of empowerment of women and revel in its glory.

We have a long way to go, but we will get there someday. We shall overcome.



विद्यालय

गुरु

कान्ग्री

संस्कृत

का

मूल

वि

द्वि

नि

का

मूल

वि

द्वि

नि

का

मूल

वि

द्वि

नि

त्रौमुदि 2016–2017 भूमि

THE MAKING OF A "MAHATMA"

Gaganpreet Kaur

M.A. IV Sem. (English)

There is none in India, rather in the world, who does not know the great man that came to this world centuries after Gautam Buddha, Mahavir and Christ, to give his message that non-violence is the supreme force. He was born of Karamchand Gandhi and Putlibai on October 2, 1869 in Porbander. Mohandas was the youngest child and affectionately called Moniya. He began his life as a mediocre, but in due course of time his countrymen graced him with the sobriquet of "the Mahatma" or a saint for his spiritual attainments and finally Bapu, the father of the Nation, a title with which no other person has been adorned. He made experiments in almost all the fields of human life, including education, health, social reform etc. He remained engrossed in political activities all through his life, nevertheless his efforts to elevate himself spiritually continued ceaselessly. His main concern from the very beginning of his life was to raise himself morally and spiritually step by step. These steps led him to be a Mahatma. Mohandas was extremely honest. Once his teacher goaded him to copy the spelling of the word "Kettle" from his neighbor's note

book, but it was impossible for Mohandas to resort to unfair means. He was deeply impressed by the character of Shravan who, he read, carried his blind parents in a sling, and Harish Chandra, who was an epitome of truth. As he said in his autobiography, "This play- Harishchandra captured my heart. I could never be tired of seeing it. But how often should I be permitted to go? It haunted me and I must have acted Harishchandra to myself times without number."

Young Mohandas fell in the company of a spoiled boy. That friend enticed him to eat meat. The same company led him into faithlessness to his wife. His friend took him to brothel. In the company of a cousin he smoked cigarettes. He had stolen a piece of gold to pay off the debt which his brother had incurred. But the goodness ingrained in him soon reclaimed him from the path of evils he had storied into. He realized that he had committed a great sin. Mohandas wrote down his confession on a piece of paper, handed it to his father, because he did not have the courage to speak about it to him. His father read the confession, said nothing in words but tears rolled down his eyes. It was a punishment to him which he never forgot. This was for him a lesson in "Ahimsa". He wrote in his



autobiography:

“This was, for me, an abject lesson in Ahimsa. Then I could read in it nothing more than a father's love, but today I know that it was pure Ahimsa. When such Ahimsa becomes all embracing, it transforms everything it touches there is not limit to its power.”

In a way Gandhi ji's life in England was a period of preparation for life.

If Gandhi ji's stay in England was preparation of life, his stay in South Africa was a brush with real life. He could see the injustice being done openly to Indians which invited him to take up some steps. In Durban court, Gandhi ji was asked to take off turban, which he refused to do and walked out of the court. He wrote against it. His letter was published and received unexpected publicity. The most important incident happened on June 7, 1893. While Gandhi ji was on his way to Pretoria from Durban, a white man objected to his presence in a first class compartment and he was ordered to move in a third class compartment. Gandhi Ji had a valid first class ticket and he refused to obey the orders following which he was thrown out of the train at Pietermaritzburg station in the dread of a cold winter night. Gandhi ji was forced to stay at the station that night in the biting cold and this bitter incident played a major role in Gandhi ji 's decision to stay on in South Africa to fight racial

discrimination against Indians there. As he wrote in his autobiography:

“I began to think of my duty, should I fight for my right or go back to India, or should I go on India without minding the insults, and return to after finishing the case? It would be cowardice to run back to India without fulfilling my obligation. The hardship to which I was subjected was superficial- only a symptom of the deep disease of color prejudice. I should try, if possible to root out the disease and suffer hardship in the process.”

This is the place where seed was laid for Mohandas Karamchand Gandhi to start the journey of "Mahatma". It was proved to be a turning point in his life. There was another incident happened in Transvaal. A very stringent enactment was passed in Transvaal in 1885. It was slightly amended in 1886, that all Indians should pay a poll tax of 3£ as fee for entry in to Transvaal. Under this law Indians had no franchise. They might not walk on public footpaths and might not move out doors after 9:00 p.m without a permit. Gandhi ji got a pass to be out of doors as he used to walk on footpath after 9:00p.m. Once a man on duty, without giving him the slightest warning, without even asking him to leave the footpath, pushed and kicked him into the street. One of his friends, Mr. Coates suggested him to go to court but Gandhi ji refused the proposal and said,“.... I have made it a rule not to go court in respect of any personal grievance. So I do not intend to proceed



against him".

Gradually Gandhi ji became a well known figure in South Africa.

When Gandhi ji went back to Africa with his family, he met with a hostile situation. The Europeans were angry with him because they believed that Gandhi ji had indulged in wild accusations against the white colonists. As Gandhi ji landed he was assaulted by some Hooligans in waiting. He could be saved with the help of police. Gandhi ji declined to prosecute the assailants because he thought that they had acted under ignorance and irresponsible guidance. He says:

"I don't want to prosecute anyone. It is possible that I may be able to identify one or two of them, but what is the use of getting them punished? Besides, I do not hold the assailants to blame..... I am sure that, when the truth becomes known they will be sorry for their conduct."

His act of forgiving the assailants enhanced his prestige.

Gandhi ji found that Indians in South Africa were called "Coolie" out of contempt and their locality was neglected by the municipality on the ground that the municipality had obtained permission to

dispose the settlers of their land. The settlers engaged Gandhi ji as their legal adviser. Gandhi ji made it known that he would charge £10 on every lease and set aside half of his fees for building a hospital or similar institution for the service of the poor. This naturally pleased them all. After this the people of South Africa began to call him "Bhai". As he had described in his autobiography, "'Bhai' - I had fortunately not yet become 'Mahatma' nor even 'Bapu', fan used to call me by the loving name of 'Bhai'".

When Gandhi ji returned to India in 1915 he was proficient at public speaking, fund raising, negotiations, media relation and self promotion. Gandhi ji developed these skills in the context of his law practice at South Africa. Gandhi ji established an idealist community called "Tolstoy Farm" near Johannesburg where he nurtured his policy of peaceful resistance.

The title of Mahatma was accorded on Gandhi ji in 1915 by his admirer Rabindra Nath Tagore in his autobiography but no matter who gave him this title, the fact is that he gained this title by his great

- ☛ “An eye for an eye will only make the whole world blind.”
- ☛ “Be the change that you wish to see in the world.”

—Mahatma Gandhi

VALUE OF LIFE

Sadaf Parveen
M.A. II Sem. (Eng.)

Life is the name of purpose, struggle, love, dedication and a number of feelings and emotions. Life shows its true colors with time. It depends upon you how you look towards life and what is your strategy of leading an ideal life.

Life is the name of a number of twists and turns during the whole span of existence. It may not be kind enough all the time. There are tough times which really test courage and capabilities of facing unfavourable situations. These conditions are tackled with credibility. People who just close their eyes avoiding to face the hardships of life are coward. They do not have courage and stamina to stand firm in the front. Remember that nothing can be achieved without waiting, without initiating without trying, without striving hard to get out of the trouble, without facing the situations.

Such incidents in life improve one's approach towards destiny. These incidents may entirely change one's life (in some cases). These make the thinking a bit more rational. If there are no such situations in life, there would be no challenges. These incidents make a strong nerved person. In other words, life tests all the time.

“Life is different from a teacher because teacher teaches a lesson and takes the exam induced but life takes exam first and then teaches a lesson.”

When you are in love, life changes its meanings, priorities and requirements. Life seems to be confined within the domain of your loved one's heart. Life is a gift of God and to love and being loved is the best feeling in life which has no parallel. Everyone wishes to live a blissful life with his/her life partner. Life can be blissful only if you know each other, understand well and stand for each other through bad times.

Do not waste your life. Life should have some purpose. Identify your aim, head towards your destiny and spend your entire life in achieving your goals. This is what we call life. It is a wise saying that time waits for no one. Once it is spent, it is gone. We have got to be wise in choosing our priorities so as not to waste any of our precious time. Keep on trying to get your goal and do not lose hope. It is said:

“Life is worthless without hope.” Hope is the key element in life which never lets you down. Keep your moral high. Always be optimistic and have faith in God. Everything happens for a reason. Sometimes a slight inconvenience makes us think that we are unfortunate, life is cruel etc but this is not the reality. Spread optimism instead of pessimism. It will light up and evergise, live positively.

Remember that:

“The darkest hour of night comes just before the dawn.”

The inspiration of life is to serve mankind, spread happiness and you will be blessed!!

MEDIA AND VIOLENCE AGAINST WOMEN

Muskan

M.A. English IV Sem.

Violence against women or gender based violence is a very complex and widespread issue. It constitutes one of the most serious forms of violation of women's human rights in Ireland today. Though the violence against women is well-known since time immemorial, it is poorly understood and addressed. The international community and several countries have adopted numerous policy documents, strategies, legislation and established bodies to tackle the issue. However, it is common practice around the world that every year thousands of women are killed or violent crimes are committed against them. Violence against women is defined as follows :-

“....any act of gender-based violence, which results in, physical, sexual abuse and mental aggression, emotional and psychological abuse, rape and incest, rape between spouses, regular or occasional partners and cohabitants, crimes committed in the name of honour, female genital and sexual mutilation and other traditional practices harmful to women, such as forced marriages”.

Media being a social reformer has vital role to play in preventing these kinds of

cases against women. As media is the eye, ear and limbs of the society it could help a great deal in mitigating violence against women. Media has a growing role in highlighting violence against women and in stressing the need for creating awareness among the victim women about their rights, so that they could stand for themselves.

Violence against women needs to be understood in a wider social context which permits perpetrator to assume the right to use violence as a means of exercising dominance. Therefore, the key components of the dynamics of violence against women are the concepts of gender and power. As a social group, men have greater power and status than women, and abuse and violence is an important way by which men seek to maintain their dominant position.

While violence may be aggravated by alcoholism but unemployment and poverty are not the root causes of this violence. The essential purpose of violence is to gain and maintain power and control of another person. Across cultures, the most common experience for women is violence by intimate partners.

The gravity of the problem is evident in



the very speech of The President of India. He opined that “**Every member of our society male or female has, equally, the right to live in security, peace and dignity.....Violence or fear of violence reduces the freedom and development of everyone, particularly our women and children.**

In India, more than 34 percent of women, between the age 15-49 have experienced physical violence, and 9 percent have experienced sexual abuse. Even married women are reported to have experienced physical or sexual violence.

The domestic violence and alcoholism are closely interlinked. Domestic violence is where one person tries to control and assert power over his partner to intimate relationship. It can be physical, emotional financial or sexual abuse. There are a good number of cases reported where alcoholism is the root cause of the intimate partner violence. According to findings of the World Health Organization, violence may be prevented by reducing the availability of alcohol, through brief interventions and longer- term treatment for problem drinkers and by improving the management of environment where alcohol is served. Media would substantially reduce the violence based alcoholism.

A gender-equal society would be where the word 'gender' does not exists: Where

everyone can be themselves.

The role of media is crucial to the issue of violence against women, both in terms of how media covers the issue, and how media may be used as a tool to help activists and government raising awareness and implement programs on this issue. Media should also project the means to combat violence. Media's role in spread of the information from a local to global scale, using the December 16, 2012 gang-rape in Delhi as a case example, that outlines the capabilities that media possess to spark social movements to protect women. The media is a powerful actor because it has the ability to inform the public on the injustices in society and raise awareness on unfamiliar or hidden issues.

Media can reach a wide range of people and effect change within society. There are successful stories in certain parts of globe wherein the media intervention is effectively working e.g. Films like "Damini" and "Raja Ki Aayeggi Barat" have also handled the problems of violence on women in a positive manner by showing a woman who fights for justice. Media has the power to help create healthy communities in part by portraying healthy, constructive communities.

So media should develop story lines, images, characters, programs, and products that promote healthy attitudes towards women, masculinity, relation-



ships and sexuality. Media should provide fair and full coverage of women in politics, sports, business, health, and education. Media can even help in promoting human rights, so media should act as a pressure group against injustice. Women are victimised in the name of religion and tradition. It is found that social media can be an effective way of mobilizing youth and promoting discussion and reflection around key topics, modelling positive behaviours and guiding target audiences to positive solutions.

Violence against women is clear violation of human rights. Every nation

must look into this matter otherwise there will be no prosperity. At the international level also various efforts have been made for tackling this issue. Women have been tortured by one or the other way. Due to the social status of women from the past till date she is treated as a thing and not as a human being. So the Government has to frame suitable laws or guidelines for women.

“Stopping violation of women's human rights is a moral imperative... joining in the efforts to stop violence is everybody's responsibility.



BANISH IGNORANCE

Sanjeev Kumar
M.A. II Sem. (English)

“The first veil to vanish is ignorance and when ignorance is gone; unskilful behaviour goes, once the desire ceases, selfishness ends, and lo and behold, all misery disappears.”

“There is no end to education. It is not that you read a book, pass an examination, and finish with education. The whole of life, from the moment you are born to the moment you die, is a process of learning.”

Friends to end misery try to end ignorance, Ignorance leads to many problems and it is only education which can solve our problems. Therefore enhance your knowledge and educate yourself.



ROOT OF ALL CONTEMPORARY PROBLEMS: OVER POPULATION

Ujala

M.A IV Sem. (English)



We are citizens of a great country. Here people of different religions live. They have many problems. These problems have very deep roots. Today our main problems are dowry, child marriage, poverty and pollution, unemployment, crime and inflation but population is the root of all these problems.

Over population is the most serious problem in India. In 1947, our population was only 30 crores. In 1981, it was 68.38 crores. It means one crore and 30 lac people are added to our population every year. According to the survey of 2011 our population is 121.02 crore. The population of India is increasing at an alarming rate. Now we are more than 100 crores. In this respect we are second only to China. If our population goes on increasing at this speed, we shall leave even China behind because after every 15 seconds a baby is born here. Over population has been major problem in India .The efforts to remove the curse of population problem have only been partially effective.

The rapid growth of population has created many other problems such as scarcity of food, houses, hospitals, schools and clothes. It has resulted in the acute problem of unemployment. Industrialization is causing the problem of population and sanitation. Even the supply

of clean drinking water is becoming more and more difficult. Slum areas are also being formed in large cities. All our progress has become null and void due to this rapid growth of population. It is drawing back us in the race of progress.

Both men and women should realize the dangers of overpopulation. If we make a random survey we shall find that still there are women as well as men who are not able to grasp why they should have less children. The television instructs through advertisements and tableaus about the merit of a small, manageable family. But still there are families that suffer from diehard superstition. They consider adoption as an unholy activity. Again the backward tradition of professional ancestry is also firmly rooted in a large cross - section of our Indian society. A blacksmith, a carpenter, a mason or a tailor promptly trains his children to pick up the trade of their father. Naturally, they have a psychological make - up that the more sons they have the more they can employ. Thus a laborer produces more as that means more income, people themselves must realize the merits of a small family. They should be encouraged to adopt preventive checks that control the birth rate. The population of our country is increasing day-by-day.

Growing population brings along with

it diseases and environmental degradation. Resources are exploited. Waste disposal becomes very difficult. Over consumption degrades environment. Many environmental problems, such as rising levels of atmospheric carbon dioxide and its effect on global warming , and pollution, are aggravated by the population growth.

Other problems associated with overpopulation include the increased demand for resources such as fresh water and food, starvation and malnutrition, consumption of natural resources such as fossil fuels faster than the rate of regeneration, and a deterioration in living conditions.



MY LAST COLLEGE DAY

Pooja Gupta

M.A. IV Sem. (English)

The time has come to bid farewell
And go our different ways
With a pain in heart
And tears in eyes
For what will never be again.

The sharing and caring, laughing and loving
A friendship built over the years,
But now like leaves flown in the wind
We will be scattered here and there
We will no longer cross the gate,
All this no more-when say- 'goodbye'
May be on some day, we will meet again
And not know each other's face
Like ships that pass in the night
We will let each other out of sight
The hopes, the dreams, the secret fears
The smile and the tears
Will pass into oblivion
Leaving a sum of remembrance
To savour in the after years
And may be when our kids
recount their past & along the chian
We will stand in their shoes again.

SECRET OF HAPPINESS

It is commonly said that happiness is a state of mind. Real happiness does depend upon the amount of wealth and items of luxury one has but what about one's state of mind. It is said that Alexander was unhappy even after conquering major part of the world since he felt that there was no more world to be conquered.

Great generals and rulers like Julius Caesar, Napoleon, Changez Khan Timur, Hitler and others had an insatiable thirst for land and they were not quite happy even after winning so many battles and conquering country after country. In spite of all this, it has to be admitted that man's need for money in the modern age cannot be dismissed. Every man needs some luxuries to lead a comfortable life. He needs money to buy food, clothes and other necessary articles.

The most important thing is that man should earn money through honest means only, because if a man is hard working and leads a simple and honest life he can really live a happy life. One must be truthful, honest and brave. That is essential for a happy healthy life.

"Happiness" can easily be taken to mean as a state of constant joy and bliss or

Neeshu
M.A. IV Sem. (English)

organizing the externals of your life so that everything runs perfectly. That's not what I mean by happiness at all. So I use the word "true" to modify happiness and hint at a deeper meaning. When we take a look at those around us, we can see that the simple wish to be happy and to avoid suffering is the common denominator that unites us all.

“Looking at the world today, we might easily forget that the main purpose of our life- you could call it the heart of being human - is to be happy. All of us share the same wish, and the same right, to seek happiness and avoid suffering. Even following a spiritual path, or the religious life, is a quest for happiness.”

But often we confuse happiness with a momentary state of pleasure or passing feeling of joy. We look towards material possession to bring us satisfaction. Pleasure can never bring a long-lasting sense of happiness and it often brings suffering in its wake. This comes far closer to what I mean by true happiness. It's not a momentary feeling of joy, but a perspective and a way of being.

These days, so many people are wandering how to find real happiness. The

path to happiness is a simple one:

First eliminate negative attitudes, actions, and words. All the ones that cause suffering for self and others.

Second adopt positive attitude, actions and words. All the ones that cause happiness for self and others.

Third reconnect with your true nature—the well-spring of happiness, inner peace and a better world-through meditation.

It is inside us that happiness dwells.
Happiness can be extracted from the
simplest and commonest things in life.

William James, the father of modern day psychology said, 'how to gain, how to keep, how to recover happiness, is in fact for most men at all times the secret motive of all they do'. Happiness turns out to be, along with love, peace and wholeness as our deepest longing.

Happiness is about living with greater present moment awareness and acceptance discovering and embodying the true self (our true nature) and bringing forth its gifts. This is the key of Happiness.



LAUGHTER AND TEARS

Mohd. Javed

M.A. II Sem. (English)

In life smile and frown, happiness and sadness, laughter and tears go hand in hand. They are both part of life and equally useful. We should not be afraid of tears. They are part of life. Life is not a bed of roses. It is a drama of pain and pleasure both. Therefore we should take both joy and sorrow in the same stride. Here I would like to quote a few lines of Osho:

“Laughter and tears can cleanse your heart of all the inhibitions of the past. Tears will take out all the agony hidden inside you and laughter will take all that is preventing your ecstasy.”



IMPORTANCE OF VOCATIONAL EDUCATION



The education system of our country is the legacy of the colonial rule. Probably we have not yet shaken off that legacy completely. Universities churn out thousands of graduates and post graduates every year. These boys and girls, after acquiring the degrees, consider themselves fit for white collared jobs only. But these young people find themselves unemployed or unsuitable for many jobs. It is true that after spending six or seven years in a college or a university they dream of a bright future. Had their thoughts been motivated and had they been properly guided, they would have preferred to train themselves in some field and instead of studying aimlessly they would have been earning for their families.

Lately, this need has been felt and a number of vocational courses have been taken up by colleges. Slowly this vocationalisation is picking up. Once a student opts for a certain course, he knows his mission and future very well instead of living in a world of make belief, he is sure of a career. Vocational education is the need for the hour. It trains young people for various jobs and helps them to acquire

Chavi Sharma
M.A. IV Sem. (English)

specialized skills. Majority of the young people need a job to support their families. Vocational education is the education that prepares people to work in a trade, a craft, as a technician, or in professional vocations such as engineering, accountancy, nursing, medicine, architecture, or law. Vocational education is sometimes referred to as career education or technical education.

According to conrad Burns,

“Vocational education programs have made a real difference in the lives of countless young people nationwide; they build self-confidence and leadership skills by allowing students to utilize their unique gifts and talents.” - Vocational education is a skill based training which is imported through various courses and classes available in many career fields- health care, computer technology, office management and skilled trades. Vocational education is offered through public and private educational institutions. The duration of the course and classes depends upon the time required to finish the course. Vocational education is the training that is provided to the students with skills that



क्रीड़ा वर्ष 2016-2017

would help them in their work. The method used to teach the students is by providing them hands on experience so that they get more practical exposure. Vocational education in India is both skill based and non-skill based.

Currently, India needs to focus on vocational education because focus on it now will lead to effective and better future for India's labour industry. This will help us develop the Indian labor market with labour incentive and also provide the employee with a certificate which states that the employee has the skill to perform a certain set of duties and tasks. India has a great opportunity to meet the future demands of the world. India can become a hub for skilled workforce, if the training is provided at the right time and at the right place. Hence we must focus on vocational education.

Vocational schools impart direct skills that help largely to build a career. The students can apply for a job in the specific field as early as six months. Most vocational schools or colleges just require high school completion and basic knowledge of Maths and English. The

students don't need to have top grades. Vocational courses can be taken online, which support convenience and easy learning process. The students can pursue their education along with their jobs. It saves times and transportation costs. The programs offered in vocational colleges are much shorter and less expensive. Moreover, as long as these colleges are accredited, students have access to easy loans.

Vocational courses are becoming more and more popular every year. The New Education Policy clearly spells out that vocationalization should be introduced in schools and colleges all over the country at the +2 stage soon after ten years of schooling. Vocation based or job-oriented courses have been introduced not only at the +2 stage but also at the degree level. Several colleges in the country are running vocational courses and moulding technically trained people in different fields. The day is not far off when there will be no unemployment in the country and we shall be able to usher in an era where every head is high, where every hand is busy, where every heart is happy.

“Efforts may fail, but don’t fail to make efforts.”



THE COLONIAL HANGOVER ON INDIAN CULTURE

Ritu

M. A. IV Sem. (English)

India became free on August 15, 1947. But our constitution came into force on 26th

January 1950. India became a democratic socialist republic. Now India is the largest democracy in the world. Just as an ocean has the quality of absorbing the other small rivers in itself, so also Indian culture has the quality of accepting the customs and traditions of different religions. Before discussing the influence of British upon Indian culture, it is essential to highlight the concept of culture. Traditions, customs, way of thinking, beliefs, literature, art, music altogether constitute the culture of a country. Likewise Indian culture has these traits in itself. But it has some different qualities. It is regarded that India is a land having unity in diversity. As such, here people belong to different religions and traditions/India came under the influence of the British during the British rule. Therefore, M. N. Shrinivas holds these views “I have used some where the term 'westernization' to characterize the changes brought about in Indian society and culture as a result of over 150 years of British rule....”

The effect of the British can be seen upon education, social awakening, political awakening, economic structure,

joint family system, caste system, untouchability and other rituals. In ancient times the standard of living was different and the work was entrusted in accordance with the caste. It is said that before the time the British came we lacked the spirit of nationalism. We used to live here and drink here. But we never used to think of our duty to our motherland. We learned the spirit of nationalism after the British ruled us and we understood the need to attain freedom.

The most significant influence of The British can be seen in the field of education. During the British period, many schools, colleges and universities were opened to remove the narrow mindedness of all persons. Initially, the East India Company did not think that it was its duty to impart education to Indians. It allowed the old system of education to continue. Sanskrit education was imparted in toll. Muslims attended Madarassas. Higher education was confined primarily to upper castes. This system of education was eventually changed by the British. The Charter Act of 1813 directed the company to spend one lakh rupees on the education of Indians. Employing educated Indians was necessary because of the need of manpower in an expanding bureaucracy.



The English thus united the educated Indians and brought about a feeling of oneness among them. A spirit of nationalism gradually emerged. In order to rule India effectively an understanding of her past traditions and culture was required. Hence, several educational institutions were set up for that purpose.

A railway system had rapidly developed in England during 1830 and 1840. Pressure soon mounted for its introduction in India. British bankers and investors also looked upon the development of the railway in India as a channel for the safe investment of their surplus capitals. British steel manufactures regarded it as an outlet for the products like rails, engines, wagons etc. The introduction of railways in particular helped to break down barriers of religion and caste. People from different religious and social background, while travelling in a railway compartment, mingled with one another thereby challenging the age-old orthodox notions of untouchability, caste-based eating habits etc. These were the fundamental gains for the development of Indian nationalism.

Press came into existence and many newspapers and periodicals were published. This gave a new direction to the society. Besides this the Indian social structure had been deeply effected by the British. There was disintegration of the

rural structure of our society. The urbanization and industrialization had thrown the rural social structure out of gear. The society had become more dynamic and traditions were breaking down.

The economic policies followed by the British led to the rapid transformation of India's economy into a colonial economy whose nature and structure were determined by needs of the British economy. In this respect the British conquest differed from all previous foreign conquests. The previous conquerors had owned Indian political powers but had made no basic changes in the country's economic structure, they had gradually became a part of Indian life, political life as well as economic life.

The impact of British culture can be seen on language, art, literature, religion etc. hence under the impact of British culture short story and one act dramas have become common in Indian literature. Except this, we can see the influence of ideologies of atheism, personal freedom and humanism in Indian writings. Indian religion has also been affected by the west.

It becomes evident that the influence of the British on the Indian society and culture is still there. Many persons are so dazzled by the British influence that they are mocking at their own culture and tradition. We should not be blind worshipers of either the British influence

DEMONETISATION

“The currency notes of Rs 500 and Rs 1000 will not remain legal tender from midnight today”- Shri Narendra Modi Prime Minister 8.00 P.M, 8th Nov 2016.

On the evening of the 8th November 2016, the Prime Minister Shri Narendra Modi declared demonetisation. Infact this decision shook everyone. Who soever came to know about the move felt a sudden jolt.

When a currency note ceases to be a legal tender, it is termed or known as demonetisation. In other words the act of stripping a currency unit of its status as legal tender is called demonetisation. Since the government of India has banned the notes of Rs 500 and Rs 1000, the term 'demonetisation' has become common to us all. Om to Tom everyone is talking about demonization and its merits and demerits.

Now the question arises why the government has taken this step. There are several points or reasons which favour demonetisation such as-

- i. To tackle black money in the country
 - ii. To lower the cash circulation in the country
 - iii. To eliminate fake currency

No doubt the economy of the country is supported by renowned economists of the country. Infact due to demonetisation things have become cheaper; this has benefited the common people and corruption has definitely come down to a great extent, as the people are forced to stop the tendency of accumulating money. It has also brought a downfall in the real state sector. In addition, it brings more transparency in this field as well. This move has attacked corruption which is the menace in the society. Before the declaration of demonetisation the government of India had given a chance to the people to declare their unaccounted money or assets by 30th September 2016. Somewhere it was an indirect signal from the government that something like that was going to happen in the time to come. But some people did not take it seriously but they remained indifferent to it. Later they had to repent for this. The primary objective of note-ban was to unearth the stock of unaccounted income or black money. The Government's affidavit in the

Sweety Malik
M.A. IV Sem. (English)

- iv. To attack Corruption
 - v. To strength on the economy of the country.



Supreme Court on demonetisation says that note-ban would nullify the advantage of holding black money.

Besides demonetisation has also attacked terror and Naxal activities. Since then the members of terror and Naxal activities have decreased the liquidity squeeze after note-ban has forced people to adopt payment methods. However there have been some difficulties for some time. But this inconvenience was short lived. On the other hand there have been some different views against demonetisation. This move has been criticised by some leaders and some economists also. Prima facie it has affected the business and livelihood of the common people. It made the people stand in the long queues in front of the ATMs and banks to get small amount to run their daily life. In this way it wasted precious time of the people. Shockingly, several people have been reported to have died standing in the long queues for a long time. Directly or indirectly the decision of demonetisation has disturbed the social activities i.e. marriages, ceremony, functions, festivals etc. People were forced to postpone their pre-fixed marriages and functions.

The move affected the purchasing power of the people i.e. they were not able to purchase luxurious and expensive things and items of their own choice and

need, so overall market growth came down.

Whether demonetisation has affected the black money in foreign accounts remains a big question. The farmers also have faced problems due to demonetisation. It was being said that there was no class that remained unaffected by this step of the government.

Having discussed its merits and demerits, the point arises how demonetisation has affected the economy and the society. In this connection it is very clear that the Government has not let the people sit comfortably who hoard black money. They could not run away from their liabilities. The government confirmed that it will not let corruption hamper its development and progress in future in any way. It sent a good signal and message to the investors who were willing to invest in the Indian market for a long time, but were somewhere uncertain about the security of their investments as they were afraid of the corruption happening in India. All these show that the result of demonetisation will be positives for agriculture, state, business and economy of the country as demonetisation will be able to bridge the gap between the rich and the poor to some extent.

PARTICIPATION OF INDIAN WOMEN IN SPORTS

Diwakar

B.P.Ed. Ist Year

Today, the battle for equality between men and women sports rages high. Women's participation in sports has a long history.

During the early part of ancient Olympics women were not allowed to participate. In the second modern Olympics in 1900 at Paris, only 12 women were allowed to participate in two events i.e. golf and lawn tennis. In the year 2000 in Sydney Olympics women participated in almost all the events.

According to IOC data women participation has continuously been increasing. In 2012 London Olympics the participation received a hike of 41% of all the attendees that went up to 43% in 2016 Rio Olympics. Participation of Indian women in the Olympics began in 1952.

The Government of India instituted the National Sports Festival for women in 1975 with a view to promoting women's

sports. Today many women Indian personalities are recognised as role models for young Indian women who cherish the dream of excellence in sports. P.V. Sandhu and Sakshi Malik (Olympic 2016), Marry Kom and Saina Nehwal (Olympic 2012), Karnam Malleshwari (Olympic 2000), Sania Mirza, P.T. Usha, Anju Bobby Geoge, Jwala Gutta are the Indian name that have emerged in flying colours and created history in World Sports.

These days in India there has been an increasing trend of participation in sports. Society and government should encourage and appreciate the women participating in sports. The constraints which the women in India experience should be addressed to by the society and government. The lack of sports orientation of the people of society sometimes becomes a big hurdle for women taking part in sports.

*“The root of all health is in the brain.
The trunk of it is in emotion.
The branches and leaves are the body.
The flower of health blooms when all parts work together.”*



WOMEN IN VEDIC CULTURE

Sunidhi Sharma

M.A. IV Sem. (English)

There are many civilizations in the world where respect for women and their role in society are prominent. Yet the level of civility along with moral and spiritual standards in a Society can often be perceived by the respect and regard it gives to its women. Not that it glorifies them for their sexuality but gives them all the freedom men have so that they cannot be exploited and taken advantage of. They are regarded in a way that allows them to live in honor for their importance, in society with respect and protection, availing the opportunity to reach their real potential in life.

Among many societies that are found in the world, we have seen that some of the most venerating regard for women, may be found in Vedic culture. The Vedic tradition has held a high regard for the qualities of women, and has retained the greatest respect with in its tradition as seen in the honor it gives for the Goddess, who is portrayed as the feminine embodiment of important qualities and powers. These forms include those of Lakshmi (the goddess of fortune and queen of Lord

Vishnu), Sarasvati (the goddess of learning), Subhadra (Krishna's sister and auspiciousness personified), Durga (the goddesses of strength and power), Kali (the power of time) and other Vedic goddess that exemplify inner strength and divine attributes; even divine power in the form of Shakti is considered feminine.

Throughout many years of Vedic culture, women have always been given the highest level of respect and freedom, but also protection and safety. There is a Vedic saying, "Where women are Worshiped, there the god dwells." Or where the women are happy, there will be prosperity.

In the matters of dharma, in the days of Vedic Culture, women stood as a decisive force in spirituality and the foundation of moral development. There were also women rishis who revealed the Vedic knowledge to others. For example, the 126th hymn of the first book of the Rig-Veda was revealed by a Vedic woman whose name was Ramasha; the 179 hymn of the same book was the Lopamudra, another inspired Vedic woman. There are a dozen names of women revealers of the

Vedic wisdom, such as Visvavara, Shashvati, Gargi, Maitreyi, Apala, Ghosha and Aditi who intructed Indra, one of the Devas, in the higher knowledge of Brahman. Every one of them lived the ideal life of spirituality, being untouched by the things of the world. They are called in Sanskrit Brahmavadinis, the speakers and revealers of Brahman.

Mahatma Gandhi once wrote that “the way we treat our women is an indicator of our barbarism. Whereas men may have greater physical energy than women, the latter clearly have more internal and emotional energy.” It is not without reason that women are identified with Shakti in Vedic civilization. If women are kept suppressed, this Shakti will be denied to the family and the society will thus weaken.

In real Vedic culture it is taught that every man should view and respect every women, except his own wife, as his mother and every girl with the same concern and care as his own daughter. It is only because of the lack of such training and the social distance from the high moral as this that such teachings are being forgotten and the respect that society should have for women has been reduced.

In ancient India the Sanskrit words

used by the husband for the wife were Pathni (the one who leads the husband through life). Dharmapathni (the one who guides the husband in dharma) and Sahadharmacharini (one who moves with the husband on the path of dharma-righteousness and duty). This is how ancient Vedic culture viewed the partnership of husband and wife.

When a husband and wife are willing to be flexible to each other's needs and move forward in love and mutual understanding, the relationship can go beyond equality to one of spiritual union.

In the Vedic tradition it is common to see the pairing of the Vedic male Gods with a female counterpart, thus combining both sets of powers and qualities that each would have. We can easily see this in Radha-Krishna, Sita-Rama, Lakshmi-Vishnu, Durga-Shiva, Sarasvati-Brahma, Indrani-Indra etc. Thus, we have the combination of male and female Divinities that make the complete balance in the divine spiritual powers.

This shows that we should not diminish the potential that women have to be strong advocates of the Vedic principles. We should not discriminate and think that women have less to offer. It is not one's sex that will determine one's strength and



AN EXCURSION TO SARDHANA CHURCH

Pooja Gupta

M.A. Sem IV (English)

Educational excursions not only enhance the knowledge of the students but also broaden their outlook towards the outside world. It is for this reason college conducts educational excursions to educate the students about things that are beyond the text books. According to Sir Francis Bacon also :

“Travel in the younger sort is a part of education, in the elder, a part of experience.”

Our English Department also organized an educational excursion to Sardhana. This trip was for one day and was organized by the head of the English Department Dr. Alka Bansal, Associate professors Dr. Mahima and Dr. Kamini Singhal. Part time teacher Dr. Alka Arora and Miss Chandraprabha also accompanied in this trip which was for M.A. III sem. English students.

We began our trip to Sardhana at 8.00 A.M. on 24th of September and reached there at 10.00A.M. When we reached Sardhana we could see the building of the Church dwarfing all the buildings around it. We could see the steeples of the Church stretch into heavens. Eventually we came

to a massive gateway which opened to the great building of the church.

This Church was build by Begum Sumru during the years 1802 to 1822. The architect who designed this church was Anthony Reghilini. It was built in the memory of Walter Reinhardt, the husband of Begum Samru to whom she owes her name and position. She was able to write and speak Hindi and Parsi fluently. After the death of her husband she embraced Christian religion and had got this beautiful church built. Begum Sumru was of the opinion that this church at Sardhana is a marvellous piece of architecture. In her letter to Pope Georgery (XVI) she wrote:

“I am proud to say it (the church) is acknowledged to the finest, without exception in India.”

When we entered the church, we could feel the peace prevalent in the church. The story of Sardhana church is interwoven with romance and history, involving two energetic souls belonging to two different cultures and countries. This historical west facing church with entrance from north has a long verandah lined by 18 Doric pillars. The loftys pires and steeple are



cotli. These four figures stand round a circular drum which bears an inscription in Arabic, Latin and English. All this information regarding the history was given to us by the guide.

After feasting our eyes with this enchanting architecture, we sat in the sprawling lush green lawns of the church and feasted together. All of us had brought food so we shared and relished together the varied delicacies. Then it was time to return and we left Sardhana at 4:00 P.M. Though our bus had some mechanical fault on the way yet we managed to reach college well in time.

The beauty of Sardhana church fascinated us. This was the happiest experience which we ever had in our college life. This happiness has revived our faith in life and has injected a new zeal in us. The memory of this tour will always remain fresh in my mind.

*“There is a tide in the affairs of men, which taken at the flood,
leads on to fortune. Omitted, all the voyage of their life is bound
in shallows and in miseries...And we must take the current when
it serves, or lose our ventures.”* –William Shakespeare

PROSPECTIVES OF HOME SCIENCE

Anushi Garg

Part-time Lecturer, Home Science Department

WHAT ABOUT IT?

As the name suggests, Home Science is governed with home, health and happiness of all the people living in the civilization. As a field of specialization, Home Science draws its content from courses in both science and art. It is an interdisciplinary field that prepares young learners for the two most important goals in their lives - caring for their home and family as well as preparing for a career or vocation in life.

Nowadays men and women share the responsibility of a home equally. They need an equal amount of preparation in making the best use of the resources available to make their lives comfortable. Home Science Education being the basis for education of family ecosystem is referred to as the “Education for Better Living”. It deals with the natural as well as man-made environments in a family and inter as well as intra family relationships.

FOR BOTH BOYS AND GIRLS

- Both have to succeed in an increasingly competitive world.
 - Both have to share household responsibilities and tasks.
 - Both need to manage resources.
 - In case of a problem they have to solve it together with other family members.
 - Home Science offers varied vocational and professional avenues for both boys and girls
 - Joint knowledge and skills help to improve the standard of living.

This combination of science and art holds true in all the areas of Home Science. Some of these are as follows:

- The interpersonal communication amongst family members;
 - The family that you care for;
 - The food that you eat;
 - The house that you live in;
 - The clothes that you wear;
 - The resources that you use;
 - The environment around you and

- The skills and environment that can lead to successful career.

Home Science draws an important part of its content from pure science disciplines such as Physics, Chemistry, Biology, Physiology and Hygiene. It also draws its content equally from Economics, Sociology, Anthropology, Psychology, Community Development, Communication, Media and Technology which draw from the strengths of Science and Art courses.

A DISCIPLINE AND PROFESSION

Home Science covers a few areas of specialization such as Food and nutrition, Communication and Extension, Resource Management, Human Development, Fabric and Apparel science. We learn and develop good interpersonal relationships within and outside the family. We also learn to manage our resources like time, energy and money so that we get maximum satisfaction.

- The new advance in science and technology and management equips us better and deal with the changing social and economic environment and meet the challenges of the 21st century.
 - Home science syllabus draws its strength from both science and arts discipline. This enables the student to develop the ability and understand the concept as well as apply them in various contents situation.

*“Anyone can carry his burden,
however hard, until nightfall,
Anyone can do his work,
however hard, for one day.
Anyone can live sweetly,
patiently, lovingly, purely, till
the sun goes down,
And this is all life really means.*

—Robert L. Stevenson



THE MOST PRESSING PROBLEMS OF OUR COUNTRY TODAY

Ayushi Bansal

M.A. IV Semester (English)

Today we are free. Though we are economically, politically, religiously, free, but there are some major evils in our country which human beings face. Every person today is more busy in his own work so he neglects his basic duties for his own family and society. We live in a society. Firstly the most important problem which our society faces is the problem of pollution. The modern man may be proud of his progress he is making in every sphere of life but he is achieving this at a great price. The increasing number of factories and industries is the one major source which is causing all the three kinds of pollution that is water, air and noise. The waste products of these factories go into the rivers through pipelines and make the water unfit for use. So this is the big reason of water pollution. The smoke which comes out of the chimneys of factories makes the air full of dangerous gases, which are not safe for our environment in which we live. Today the people of big cities or industrial areas are living in a poisonous environment. The air around them is like poison for them. The harmful effects of pollution will prove disastrous to the future generations. Delhi is the latest example of air pollution.

There are many problems in free India. The problem of unemployment is one of them. It has disturbed the peace of the mind of youth. Unemployment means lack of work for those who want to work. The reason of it is over-population. Our population is increasing daily. Besides use of machines for work and defective education system are also responsible for unemployment. Machines have replaced workers. Now machines do the work of humans. The evil of unemployment brings in the result that the youth have lost charm in life. The money spent on his education goes a waste. In order to remove tension they drink alcohol and smoke and consume drugs; these things spoil their life, they become addict and finally lose their lives.

The next problem is untouchability. It has created hate and jealousy among the people. India is only one nation in which the people of various religions live together, but caste system gives birth to untouchability. The people who belong to high castes do not like to talk or even keep any connection with the people of low castes. One suffers from the inferiority complex and the other is full of vanity. India is a democratic country. So all should

be equal.

The most painful problem in our society is the problem of the Female infanticide. The condition of girls in our society is very painful. In Indian society the value of a girl child is much less than the value of a boy child. Girls are killed before their birth. It is a very big crime done by their own parents. Now we live in a modern age in which girls are in no way less than the boys in any field. If we support girls by giving them good education, freedom, good values, they may come out in flying colours as we have some famous Indian daughters-Indira Gandhi, Kiran Bedi, Kalpana Chawla etc.

The safety of woman is also a big problem these days. Now the girls are not safe in society, not even in their own houses. Girls are suffering physically and undergoing mental harassment. Girls are being raped. The big reason of the problem is the silence of girls and their parents. They do not take any legal action against the criminals in the name of family reputation. But the reality is that if we do

not ignore this type of crime and criminals and face it bravely, this problem may be solved and the condition of girls may be improved.

When we talk of corruption, we must understand what corruption really means. The straightforward meaning of corruption is to get the work done by means of illegal gratification. The situation as it stands today is that corruption has now become a way of our life. Everyone is so involved in corruption that the topic is not worth any discussion.

The fact is that today corruption has seeped deep into every corner of our system and there appears to be no ray of light at the end of the tunnel. All fields are corrupt. There is corruption in education system, legal system, political system and most of the working systems.

So we see there are various types of problems which human beings face in their life. If we want to march forward towards peace, prosperity, equality and social justice, we should be cautious, honest, sincere, law-abiding and broad minded.

*“Environment is no one’s properly to destroy;
It’s everyone’s responsibility to protect.”*

INDIAN WOMEN ON THE MARCH

Bindiya Kumari Giri
M.A., Sem-IV (English)

"A hand that rocks the cradle rules the world."

A wind of change is blowing in our country after independence. The post independence era is the women's era. Woman is no longer a puppet in the hands of man. She is no more a mere drawing room decoration piece. She has come into her own. Gone are the days when she was confined within the four walls of the home. She has come out of ignorance. She is marching shoulder to shoulder with man and is conscious of building a new and happier India.

During the period of foreign domination Indian women had almost retired from the social and political life of the country. When Mahatma Gandhi started struggle, some of the women came forward to shoulder and share the burden of the struggle. They proved that they were as useful citizens of the country as men. After independence the Indian woman has regained her glory. The Constitution of India has given her the same rights as are to be enjoyed by men. Their position of inferiority has now happily ended. We can see the fruit of this equality at various places in India where the work of national reconstruction is going on. Women are now eligible for most of the jobs. Before independence they did not have so many options. Now they can even contest elections to the State Assemblies and to the

Parliament.

Women are no longer looked upon as mere objects of sexual pleasure. A good percentage of women in India have entered into professions which in the past were the monopoly of men. We can see women doctors, lawyers, I.A.S. and I.F.S. officers, professors and teachers. Some of them have distinguished themselves as athletes. In the post independence period India has produced eminent women ambassadors and Governors. Some of them are Mrs. Vijay Lakshmi Pandit, Raj Kumari Amrit Kaur, Miss Padmaja Naidu, Mrs. Sucheta Kriplani and Lakshmi Menon. That is the greatest honour to Indian women - hood.

The future of a country depends upon good mothers. Napoleon once said, "Give me good mothers and I will give you a good nation." The ruling party is conscious of this. Women are being given all opportunities to improve their lot. Women's education is becoming more and more popular. Women are no longer considered a financial liability. They have become assets to their families. Now men have to wait upon women in offices and other professions. We see elegantly dressed women moving about with poise and confidence. They lend grace to social gatherings. Their sweet talk is sweeter than any sweet dish served on the table. Men like to be in their company.

IMPORTANCE OF ENGLISH LANGUAGE IN INDIA

Preeti Dixit

M .A. IV Sem. (English)

English, the lingua franca of the modern world has become a handy means of communication in a country like India with multifarious social strata, ethnicity and linguistic diversity. Indians of Tamil Nadu, Kerala, Andhra Pradesh, Karnataka etc. neither can nor do speak Hindi. Hindi despite being the national official language is the language of utmost 40-50 percent of Indians. English is a link language amongst the so called educated Indians. Even semi-educated Indians engaged in business etc can work with English words without grammar or accent proficiency.

English is used by different people for different uses such as people hailing from different regions can communicate with one another with the help of English. Secondly, all advanced knowledge in science, technology, medicine particularly informatics is available only in India. The results of the latest researches are approachable through English. If we give up English, we will lag behind in the higher fields of study and will be left with linguistic mess and chaos. English is accepted as an international link language. English is

the language of the constitution, the Supreme Court, the High Courts and official departments. English is now firmly rooted in the soil of India. It has become a part of Indians life. Thus English is the linguistic soul and an important tool for the integrity of India. It has to be the second language in our country for the development of the country. It is this language which is understood almost all over the regions as a common interacting medium in addition to national language Hindi. All schools and Colleges teach English as a preferential subject and mostly have it as a medium of instruction.

Pandit Nehru was certainly correct when he said, “English is our major window on the Modern World”. No one can deny its importance as an international language, it is only through English that we can establish social, economic, cultural and political relations with other countries of the world as well as within the communities. If we close this window, we will shut ourselves up in the four walls of decay and down fall because modern science has reduced the vast dimensions of the globe to the size of

a small ball. Under such circumstances, we can not ignore English. We should give Hindi the place of National language. However, this never means that English should be completely eradicated from the Indian curriculum.

According to Pt. Jawaharlal Nehru; “I would have English as an associate, additional language, which can be used not because of facilities, but because I do not wish the people of non - Hindi areas to feel that certain doors,... are closed to them . So I would have it as an alternative language as long as people of India require it.”

The reality is that the multinational companies consider the candidate's ability or inability to speak fluently in English as one of the major selection criterion. The mere domain of knowledge won't guarantee one a good job. Employees are expected to be interactive and communicative with others in the team and outside.

The historical circumstances of India have given the Indians an easy access to

master English language. Many Indians have become so skilled in English language that they have won many international awards for creative and comparative literatures during the last few years. Indian authors like, Arundhati Roy, Aravind Adiga, Kiran Desai have won the prestigious Booker Prize for their books. A famous Indian movie maker Shekhar Kapoor's film "Elizabeth" has got several nominations for Oscar Awards.

Now it is evident that we can't do without English, because it has united us as a nation. Otherwise with 18 languages and innumerable dialects the communication even at national level would have been simply next to impossible. Now that we have accepted and have to concede that English is the second, if not the first, mother tongue for us otherwise it would, not have been moved to Bangalore and lend a helping hand in putting the name of “The Silicon Valley of India” on a very high pedestal in the IT world.

Thus English has its unique importance in our country.

“To live is the rarest thing in the world. Most people exist, that is all.” —Oscar Wilde

कोशुदी

2016-17

हिन्दी-प्रखण्ड

सरस्वती-वर्षाणा

वर दे वीणावादिनि वर दे !
प्रिय स्वतन्त्र-रव अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे !
काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निझर;
कलुष भेद तम-हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !
नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव ;
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।
वर दे वीणावादिनि वर दे !
(सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला)

सम्पादकः

डा. निकेता
हिन्दी-विभाग

छात्र-सम्पादकः

कु. दीक्षा
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

ଅନୁକ୍ରମଣିକା

ਹਿੰਦੀ-ਪ੍ਰਖਣਦ

1.	मेहनत	3
2.	अनमोल तेरा जीवन	3
3.	अनमोल वचन	3
4.	एक आशीर्वाद या एक अभिशाप	4
5.	प्राथमिक विद्यालयों में खेलों की दिशा और दशा	4
6.	साहित्य और समाज	5
7.	कोशिक कर, हल निकलेगा	6
8.	राह कौन सी जाऊँ मैं?	6
9.	गाँव की गलियाँ	6
10.	एथलेटिक्स का इतिहास	7
11.	शारीरिक-शिक्षा के प्रति लोगों की गलत अवधारणाएँ	7
12.	गुरु का महत्व	8
13.	मेरे ख्वाबों के रंग	8
14.	भाषाई सद्‌भावना	9
15.	जीवन में खेलों का महत्व	10
16.	गुरु गोविन्द सिंह के वीर सपूत्र	11
17.	बेटा या बेटी	13
18.	मानसिक रोग महज एक रोग	14
19.	वो पिता ही होता है!	14
20.	दहेज, नशा और अन्धविश्वास	15
21.	मेरी उड़ान	16
22.	विनम्रता	17
23.	माँ के नाम	17
24.	अंतिम यात्रा	18
25.	बेटियाँ	18
26.	माँ (जीवन आधार)	19
27.	बेटियाँ	19
28.	बेटे के जन्म दिन पर	20
29.	सबसे बड़ा धर्म	21
30.	ऐसी होती है माँ	21
31.	आलोचक विश्वम्भर पाण्डेय से विमर्श	22
32.	'कर्म किये जा फल की इच्छा न कर' कब तक?	24
33.	खिलाड़ी और भार कम करने वाला रसायन	25
34.	शिक्षा : संस्कार एवं संवेदनाएँ	26

मेहनत



अनु चौधरी
एम.ए. द्वितीय वर्ष

मेहनत जीवन का सार है सब कष्टों का उपहार है
हाथ पर हाथ रखने से क्या मनुष्य प्रगति कर पाया है
बिना बीज बोए ही क्या पौधा उग पाया है।
हमें है सृष्टि का ज्ञान
क्या यूँ ही बैठे-बैठे उन्नति कर पाया है।
पर यह सब मेहनत का ही फल है
तू आज एक नया जहाज बना दे
विश्व में अपने देश का मान बना दे
मेहनत से सींचा फल अनश्वर हो जायेगा
कभी तू नहीं रहेगा पर तेरा नाम अमर हो जायेगा।

अनमोक्त वयन

अफसाना परवीन

- ★ जो आपसे झुककर मिले, मानिए वह आपसे बड़ा होगा ।
 - ★ सफलता का दरवाज़ा तो आपको कोई भी बता देगा पर उस पर दस्तक आपको खुद ही देनी होगी ।
 - ★ सफलता पाने के लिए गुस्से को ठण्डे बस्ते में डालना सीखें ।
 - ★ जिंदगी का कोई मकसद बना लो फिर अपनी सारी ताकत उसे हासिल करने में लगा दो ।
 - ★ खुशी के फूलों से इतना प्यार मत करो कि उनसे गमों का रस टपकने लगे ।

अनमोल तेरा जीवन

1. अनमोल तेरा जीवन, यूँ ही गवाँ रहा है।
किस ओर तेरी मंजिल, किस ओर जा रहा है॥
सपनों की नींद में ही, कहीं रात ढल ना जाए।
पल भर का क्या भरोसा, कहीं जाँ निकल ना जाए।
2. ममता के बंधनों ने, क्यों आज तुझको धेरा,
सुख के हैं साथ सभी, दुःख में न कोई तेरा।
तेरा ही मोह तुझको, दुःख दे रूला रहा है।
किस ओर तेरा मंजिल, किस ओर जा रहा है।
अनमोल तेरा जीवन
3. जायेगा जब जहाँ से, कोई साथ न जायेगा।
इस हाथ जो दिया है, उस हाथ तू पायेगा।
कर्मों की यह है खेती, फल आज पा रहा है।
अनमोल तेरा जीवन, यूँ ही गवाँ रहा है।
जब तक है भेद मन में, भगवान से जुदा है।
खोलो तो दिल का दर्पण, इस घर में ही खुदा है।
अनमोल तेरा जीव

जन्म कर्म के लिए मिला है,

ਕਰਮ ਤੁਮਹੋਂ ਸੁਖ ਦੇਗਾ ।

A row of four solid black five-pointed stars, evenly spaced, centered horizontally across the page.

श्वासों का उद्देश्य कर्म है,

थककर क्यों मर जाएँ ।

मरने से पहले वह कर लें,

याद सभी को आएँ ।

-कवि रघवी

—कवि रघुवीर शरण मित्र



एक आर्थीवाद या एक अभिशाप

एक आशीर्वाद या एक अभिशाप
क्यों कहते हो इसे एक पाप
घर में जब कोई बेटी लेती है जन्म
क्यों होते हैं दुःखी सबके जज्बात
जब वो करती कोई काम अपने हाथ
तो घर में सब धिक्कारते उसको छोड़ उसकी मात
जब वो करना चाहे कुछ काम अपने हाथ
बस उसकी माँ ही देती है क्यों उसका साथ
पर न जाने पड़ता है क्यों पानी गैरों के गाम
स्नेह देख बेटी रख देती अपनी हस्ती
उसके अपनों के हाथ
पर जब चाहिये होता उसे अपनों का साथ
तब ही सब छुड़ा लेते उससे क्यों अपना हाथ
अब पाप ही कहो
एक आशीर्वाद या एक अभिशाप
क्यों कहते हो इसे एक पाप?

मालती रानी



प्राथमिक विद्यालयों में खेलों की दिशा और दशा

धीरज कुमार

 1. स्कूलों में खेलकूद की गतिविधियाँ मृतप्राय हैं:- सरकार की उदासीनता, अभिभावकों की अदूरदर्शिता और निजी संस्थानों के व्यवसायिक सेटअप में ज्यादातर स्कूलों के पास खेल मैदान नहीं हैं। किसी के पास है भी तो खेल की रुचि बहुत कम है। नतीजा यह है कि शारीरिक विकास की अवधारणा कम्प्यूटर, मोबाईल और वीडियोगेम की खुराक बन गई है। स्कूलों से अब आठवीं घंटी पूरी तरह गायब हो चुकी है।

2. प्राथमिक विद्यालयों में बिन प्रशिक्षक सब सूनः—
देशभर के अनेक प्राथमिक विद्यालयों में एक या दो
अध्यापक ही नियुक्त हैं जो कि वर्ष भर शैक्षिक एवं गैर
शैक्षणिक कार्यक्रमों में व्यस्त रहते हैं। ऐसे में वह पाठ्यक्रम
के अलावा खेल गतिविधियों की ओर ध्यान नहीं देते हैं।
जिससे बच्चों में नैतिक गुणों का दिन प्रतिदिन अभाव होता
जा रहा है।

3. देश की सिसकती प्राथमिक शिक्षा:- प्राथमिक शिक्षा से ही किसी व्यक्ति के जीवन का भविष्य तय होता है। दुःख तो इस बात का है कि शिक्षा का अधिकार अधिनिमय 2009, 1 अप्रैल 2010 से लागू है। लेकिन आज 7 साल बाद भी शिक्षा को लेकर जो हमारा सपना था वो कहीं भी रंग लेता नहीं दिख रहा है। देश का एक राज्य ऐसा भी है जहाँ प्राथमिक विद्यालयों में तकरीबन (60प्रतिशत) खेल मैदान हैं ही नहीं।

4. असुविधाओं के कारण खेल लुप्त होने के कगार पर:-प्राथमिक विद्यालयों में असुविधाओं के कारण स्थिति और भी खराब है। हमारे अधिकारी भी मानते हैं स्कूलों में खेलकूद की स्थिति पर्याप्त खेल सामग्री न होने से ठीक नहीं है। सैकड़ों प्राथमिक विद्यालयों के पास जो अपनी भूमि या भवन ही नहीं है तो वहाँ खेल मैदान का होना सम्भव ही नहीं है। जिस कारण बच्चे प्राथमिक विद्यालयों में खेलों को भली-भाँति जान नहीं पाते।



साहित्य और समाज

निकिता

एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर

साहित्य युग और परिस्थितयों पर आधारित अनुभूतियों एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति है। यह अभिव्यक्ति साहित्यकार के हृदय के माध्यम से होती है। साहित्यकार अपने युग-वृक्ष को आँखुओं से सींचते हैं जिससे आने वाली पीढ़ियाँ उसके मधुर फल का आस्वादन करती हैं साहित्य के द्वारा ही हृदय में सुकोमल, मधुर व आनन्ददायक गीतों का उद्गम होता है और हृदय में गूँजते शब्द विचार और भाव लेखनी को स्वर प्रदान करने लगते हैं। जीवन की उपासना अनुभव का प्रस्तुतीकरण, भूत, वर्तमान और भविष्य का दृष्टा तथा मानव द्वारा मानव तथा प्रकृति के लिए किया गया रंग-बिरंगा चित्रण ही साहित्य है। वास्तव में साहित्य भावों की मनोवृत्ति है परिणामतः विभिन्न विधाओं पर आधारित साहित्य का सुजन होता चला जाता है।

साहित्य वह है जिसमें प्राणी के हित की भावना निहित है साहित्य मानव के सामाजिक सम्बन्धों को दृढ़ बनाता है क्योंकि उसमें सम्पूर्ण मानव-जाति का हित निहित रहता है साहित्य द्वारा साहित्यकार अपने भावों और विचारों को समाज में प्रसारित करता है इसी कारण साहित्य में सामाजिक जीवन स्वयं सखरित हो उठता है यथा—

जल उठा स्नेह दीपक-सा
अब शेष धूमरेखा से
चित्रित कर रहा अँधेरा ।

कवि की अभिव्यक्ति है कि प्रिय के संयोगकाल में जो हृदय उल्लास से भरा रहता था उसके वियोग में गहरे विषाद में डूब गया है। दीपक के रूपक द्वारा यही चमत्कारपूर्ण ढंग से कहना ही साहित्य है।

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। साहित्य का सूजन जन-जीवन के धरातल पर ही होता है समाज की सजीवता, समाज की अशान्ति, सामाजिक सभ्यता एवं असभ्यता का निर्णायक साहित्य ही है। साहित्य एवं समाज एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यदि समाज शरीर है तो साहित्य उसका मस्तिष्क है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में “प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की वित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है।”

साहित्य और समाज दोनों कदम से कदम मिलाकर

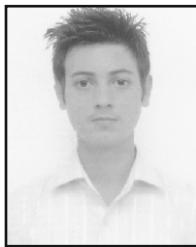
चलते हैं। भारतीय साहित्य का उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि होती है। भौगोलिक दृष्टि से भारत की शास्यशामला भूमि कल-कल का स्वर उत्पन्न करती हुई नदियाँ, हिमशिखरों की धबल शैलमालाएँ, बसन्त और वर्षा के मनोहरी दृश्य आदि ने हिन्दी साहित्य को कम प्रभावित नहीं किया है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में “साहित्य में जो शक्ति छुपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती। यूरोप में हानिकारक धार्मिक, रुद्धियों का उद्घाटन साहित्य ने ही किया है। जातीय स्वातन्त्र्य के बीज उसी ने बोये हैं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के भावों को भी उसी ने पाला—पोसा और बढ़ाया है।”

साहित्य प्रत्येक युग में मानव को नवचेतना प्रदान करता है और हमारे आन्तरिक भावों को जीवित रखकर हमारे व्यक्तित्व को स्थिर रखता है। वर्तमान भारतवर्ष में दिखाई देने वाला परिवर्तन अधिकांशतः विदेशी साहित्य के प्रभाव का ही परिणाम है। हमारे सौन्दर्य सम्बन्धी विचार हमारी कला का आदर्श, हमारा शिष्टाचार सभी यूरोप के अनरुप हो गए हैं।

समाज में होने वाले परिवर्तन में साहित्य का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। प्रेमचन्द ने तो अपने उपन्यासों में भारतीय ग्रामों की आँसुओं भरी व्यथा—कथा को मार्मिक रूप से चित्रित किया। उन्होंने किसानों पर जमीदारों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का चित्रण कर जमीदारी प्रथा के उन्मूलन का जोरदार समर्थन किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् जमीदारी उन्मूलन और भूमि—सुधार की दृष्टि से जो प्रयत्न किए गए वे साहित्यकारों एवं साहित्य में निहित प्रेरणाओं के ही परिणाम हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि समाज और साहित्य में आत्मा और शरीर जैसा सम्बन्ध है। समाज और साहित्य एक-दूसरे के पूरक हैं। इन्हें एक-दूसरे से अलग करना सम्भव नहीं है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि साहित्यकार सामाजिक कल्याण को ही अपना लक्ष्य बनाकर साहित्य का सृजन करते रहें। इसी अर्थ में साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है।



कोशिक कर, हल निकलेगा

मनीष

कोशिश कर, हल निकलेगा
आज नहीं तो कल निकलेगा

अर्जुन के तीर सा सध
मरुस्थल से भी जल निकलेगा

मेहनत पर पौधे को पानी दे
बंजर जर्मी से भी फल निकलेगा

ताकत जुटा हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी बल निकलेगा

जिन्दा रख दिल में उमीदों को
गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा

कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की
एक दिन ऊपर वाला भी तुझसे
मिलने को मोहताज होगा

गाँव की गलियाँ

तेरी बुराइयों को हर अखबार कहता है।
और तू मेरे गँव को गँवार कहता है.....
ऐ शहर! मुझे तेरी औकात पता है।
ऐ शहर! मुझे तेरी औकात पता है।
तू बच्ची को भी हुस्न—ऐ—बहार कहता है.....
क्या यही तेरे संस्कार है,
थक गया हर शख्स काम करते—करते
और तू इसे अमीरी का बाजार कहता है.....
गँव चलो वक्त ही वक्त है सबके पास
और अपनी सारी फुर्सत को तू सिर्फ इतवार कहता है.....
खामोश होकर फोन पर रिश्ते निभाये जाते हैं
और तू इस मशीनी दौर को परिवार कहता है.....
वो मिलने साथ आते थे एक अदब साथ लाते थे
दस्तर निभाकर खुद को तू रिश्तेदार कहता है.....
बड़े—बड़े मसले हल करती थी पंचायतें
अंधी भ्रष्ट दलीलों को तू दरबार कहता है.....
अब बच्चे भी बड़ों का अदब खो बैठे हैं
क्या इसी नये दौर को तू संस्कार कहता है।



राह कौन सी जाऊँ मैं?

अमिता
एम.कॉम. द्वितीय सेमेस्टर

चौराहों पर लुटते चीर
सीमा पर शहीद हो रहे, वीर
चलूँ इसी राह पर या,
दूसरी पर जाऊँ मैं?
राह कौन—सी जाऊँ मैं?
सपना देखा और मिट गया,
फलों से पहले ही बाग जल गया

तिनके जले हुए बटोरुँ या
नई दिशा को सजाऊँ मैं?
राह कौन सी जाऊँ मैं?
दो दिन मिले उधार के
घाटे के व्यापार के

पल—पल का हिसाब जोड़ूँ या
जिन्दगी शेष लुटाऊँ मैं?
राह कौन सी जाऊँ मैं?

“जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है—हमारा सेवाभाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागरित नहीं हुई तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।”

—प्रेमचन्द



एथलेटिक्स का इतिहास

दिवाकर

बी.पी.एड. प्रथम वर्ष

 एथलेटिक का जन्मदाता ग्रीस (यूनान) देश है। एथलेटिक्स शब्द यूनानी भाषा के 'एथलोन' से बना है। जिसका अर्थ प्रतियोगिता या स्पर्धा है। यह सबसे प्राचीन खेल है, जो कि मानव की प्राकृतिक क्रियाओं पर आधारित है जैसे:-चलना, दौड़ना, कूदना, फेंकना इत्यादि। इन सभी क्रियाओं से अंदाजा लगाया जा सकता है कि एथलेटिक्स खेल बहुत प्राचीन है। खेल प्रतियोगिताओं की रोमांचकता के कारण ही इसे विश्व भर में 'खेलों की रानी' के नाम से भी जाना जाता है। एथलेटिक्स से तात्पर्य सभी खेल क्रियाओं से है जो कि खाली समय में द्वन्द्वात्मक रूप से खेली जाती हैं। तकनीकी रूप से इसे ट्रैक एण्ड फिल्ड कहा जाता है। जिसे 12वीं शताब्दी में एथलेटिक्स कहा जाने लगा।

- ★ प्राचीन ओलम्पिक खेल का प्रारम्भ 776 बी.सी. में हुआ। आधुनिक ओलम्पिक खेल का प्रारम्भ अप्रैल 1896 भारत में प्रथम प्राचीन खेल का प्रारम्भ 1924 दिल्ली में हुआ।
 - ★ एथलेटिक्स आधुनिक ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेलों एवं अन्य अंतराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं जैसे IAAF (विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप और इंडोर चैम्पियनशिप) का अभिन्न अंग है। शारीरिक विकलांगता वाले एथलीट ग्रीष्मकाल पैरा ओलम्पिक और I.P.S. विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में भाग लेते हैं।

शारीरिक-शिक्षा के प्रति लोगों की गलत अवधारणाएँ

दिवाकर

बी.पी.एड. प्रथम वर्ष

नहीं तो उसका शारीरिक और मानसिक विकास कैसे होगा। अगर शारीरिक और मानसिक नहीं होगा तो वह पढ़ाई में भी अच्छा नहीं कर पायेगा।

- 1. शारीरिक-शिक्षा खेल के अतिरिक्त कुछ नहीं:-** अधिकतर लोगों के दिमाग में यह गलत धारणा घर कर गयी है कि शारीरिक शिक्षा खेल व मनोरंजन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसमें तो बच्चों को सिर्फ खेलना सिखाया जाता है। उन्हें पढ़ाया नहीं जाता बल्कि ऐसा कुछ नहीं है क्योंकि खेल तो शारीरिक-शिक्षा का एक भाग है। शारीरिक-शिक्षा में पढ़ाये जाने वाले विषय भी हैं, जैसे-शारीर-क्रिया-विज्ञान, शारीर-रचना-विज्ञान, परीक्षण और माप (Human Anatomy, Sports Medicine etc.)। लोग क्यों भूल जाते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है।
 - 2. शारीरिक-शिक्षा समय की बरबादी:-** अधिक संख्या में लोगों का यह मानना है कि खेल व शारीरिक शिक्षा केवल समय की बरबादी है, इस कारण बहुत से माता-पिता अपने बच्चों को खेल के लिए नहीं भेजना चाहते हैं और उन्हें पढ़ाई के बोझ तले दबाये रखते हैं। लेकिन यह सोच बिलकुल गलत है क्योंकि अगर बच्चा खेलेगा-कूदेगा नहीं तो उसका शारीरिक और मानसिक विकास कैसे होगा। अगर शारीरिक और मानसिक नहीं होगा तो वह पढ़ाई में भी अच्छा नहीं कर पायेगा।
 - 3. शारीरिक-शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार की कमी:-** आजकल लोगों के मन में यह भ्रम है कि शारीरिक-शिक्षा के द्वारा TGT, PGT तथा NET, JRF द्वारा सरकारी या प्राईवेट नौकरियों में जा सकते हैं तथा एक अच्छा खिलाड़ी भी खेल कोटे से नौकरी पा सकता है।
 - 4. शारीरिक शिक्षा जरूरी नहीं है:-** समाज में रह रहा प्रत्येक व्यक्ति यह समझता है कि उसे शारीरिक-शिक्षा की जानकारी लेना आवश्यक नहीं क्योंकि वह यह मानता है कि यह सब फालतू की चीजें हैं और वह सब जानता है। इसलिये दिन-प्रतिदिन हमारे समाज में बहुत सारी बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। जैसे-मोटापा, मधुमेह, पीलिया (जोइंनडिश) आदि। इसलिये मेरा अनुरोध है कि एक स्वस्थ समाज के लिए शारीरिक शिक्षा का ज्ञान होना अति आवश्यक है।



ગુરુ કા મહત્વ

४

बी.एस-सी. द्वितीय

प्रचलित है:-

“गुरु कृम्हार, शिष्य कृम्भ है।”

लेकिन बच्चे उसे दण्ड समझते हैं। अतः हमें अपने शिक्षक का आदर/सम्मान करना चाहिए और उनके बताये गए मार्ग पर चलना चाहिए। शिक्षक हमेशा सही मार्ग दिखाते हैं।

जो विद्यार्थी गुरु के बताये मार्ग पर चलता है वह हमेशा उस मार्ग पर अपनी विजय प्राप्त अवश्य करता है।

मेरा विचार:-

प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में गुरु का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। गुरु के बिना हमें रास्ता कोई दिखा ही नहीं सकता और न ही हम सही—गलत, अच्छे—बुरे का अनुभव कर सकते हैं।

गुरु को भगवान की भी संज्ञा दी गई है। अतः कहा भी गया है कि—

“गरुब्रह्मा गरुविष्णुः गरुदेवो महेश्वरः।

गुरुसक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

"गरु और सड़क मनष्य/व्यक्ति के जीवन

महत्वपूर्ण रल है जो दूसरों को तो मंजिल तक पहुँचा देते हैं और स्वयं वही खड़े रह जाते हैं।”

ਮੇਰੇ ਖ਼ਵਾਬਾਂ ਕੇ ਰਹਿਤ



मेरे ख्वाबों की कश्ती में
है रंग हजार।

उड़ने की चाह है पर बिखरने
के डर की है भरमार।

पानी है अपनी मंजिल अभी तो
बाकी जीवन का है संघर्ष अपार।

इस जीवन का है बस ये ही आधार,
संघर्ष से बनाना है।

तराना
द्वितीय

अपनी कमजोरी को भी हथियार ।
अभी तो नाम है मेरा गर्दिश में,
पर जीवन में इस नाम को करना है,
रोशन फैलाना है अपने प्रकाश का विस्तार ।

मेरे ख्वाबों को देने है पंख
छन्ना है आसमान खिलाने हैं गलशन

लानी है बहार।
मेरे रखाबों की कुश्ती में है रंग हजार।



भाषाई सद्भावना

उजाला

एम.ए. अंग्रेजी

 भाषा भाव प्रकट करने का माध्यम है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने भाव प्रकट करने के लिए भाषा का सहारा लेना पड़ता है। आज हिन्दुस्तान में सैकड़ों ज़बाने और कई हजार बोलियाँ बोली जाती हैं। भाषाविद् प्रियर्सन ने भारत के ज़बानों का अजायबघर (Musium) कहा है। हिन्दुस्तान विभिन्न धर्मों और विभिन्न भाषाओं वाला देश है। कुछ दूरी चलने पर ही हमारे देश में बोलियाँ बदल जाती हैं। भारत के संविधान के अनुच्छेद '353' में '22' भाषाओं को स्थान दिया गया है। हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी है जबकि संसद का पूरा कार्य अंग्रेजी भाषा में होता है।

अगर हम कश्मीर पर प्रकाश डालें तो वहाँ 'ड़ॉंगरी' या 'कश्मीरी' सुनने को मिलेगी, पंजाब में 'पंजाबी' 'उत्तर प्रदेश' में 'खड़ी बोली', 'गुजरात' में 'गुजराती', राजस्थान में 'राजस्थानी', तमिलनाडु में 'तमिल' कही 'कन्नड' तो कही 'मलयालम' और इसी खूबसूरत संगम ने हिन्दुस्तान को जबानों का अजायबघर बना दिया।

इतिहास साक्षी है कि देश के प्रत्येक राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक कार्यों में देश के सभी राज्यों ने अपना योगदान दिया है। इस योगदान के सबब ही तो हमें भारत में भाषाई सद्भावना का एक खूबसूरत उदाहरण मिलता है।

भारत को स्वतन्त्र कराने में जितना कार्य 'अलहिलाल' और 'अलबिलाग' ने किया उतना ही कार्य पत्रिकाओं ने किया है। इसके अतिरिक्त 'मराठा', 'केसरी', 'तेहजिबुल', 'अख्लाक', 'कामरेड', 'मिरातुल', 'अखबार', 'आनन्द मठ' आदि की स्वतन्त्रता आन्दोलन में अहमियत से आज कौन वाकिफ नहीं है। बंगाल, मराठा, असमी, उड़िया, यूरोपी, मैथली, सिन्धी, संस्कृत, तेलगू, उर्दू आदि भारत में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाएँ हैं। हिन्दुस्तान में 70% लोग हिन्दू आरयाई भाषा बोलते हैं जबकि 22% लोग हिन्दी यूरोपी भाषा बोलते हैं।

आज हिन्दी साहित्य में जहाँ मलिक मुहम्मद जायसी, रहीम एवं उस्मान आदि लेखकों ने अपना योगदान दिया तो वही उर्दू साहित्य में पण्डित दयाशंकर नसीम, आनन्द नारायण मुल्ला, कृष्ण चन्द्र, राजेन्द्र सिंह बेदी, मुशी प्रेमचन्द्र जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों ने अपनी कलम की नोंक से सद्भावना की मशाल जलाई है और अंग्रेजी साहित्य में मौलाना अबुल कलाम आजाद, प. जवाहरलाल नेहरु, कमला दास, आर.के. नारायण एवं किरन देसाई आदि ने अपनी साहित्यिक भाषा से सद्भावना का पैगाम दिया ।

मुंशी प्रेमचन्द, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अबुल कलाम
आजाद, सर सैयद अहमद खाँ, आर.के. नारायण
और कमलदास की महानता काबिल—ए—सलाम है।
आज भी भारत में हिन्दी, इंग्लिश, उर्दू के अतिरिक्त
अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र
प्रकाशित होते हैं। जिन्हें प्रत्येक धर्म व वर्ग के लोग पढ़ते
हैं। अतः किसी भी भाषा को किसी वर्ग या धर्म विशेष से
जोड़ना बिल्कुल उचित नहीं है।

एक ज़बान दूसरी ज़बान के अनेक शब्द मिलकर अपनी शक्ति इखिल्यार करती है। भारत में बोली जाने वाली प्रत्येक भाषा में हमें दूसरी भाषा के अनेक अल्फाज़ मिलते हैं और प्रत्येक धर्म का व्यक्ति हमारी राष्ट्र भाषा और मातृ भाषा दोनों का बराबर इस्तेमाल और सम्मान करता है।

“पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सारी दिशाएँ अब भी हैं।

हिन्द में बोली जाने वाली सारी जबाने अब भी हैं।"

इस प्रकार किसी भी भाषा को एक विशेष वर्ग से जोड़कर देखना या फिर किसी भाषा को किसी विशेष धर्म से जोड़ना उचित नहीं बल्कि ये भारतीय संस्कृति पर एक सवालिया निशान लगाने जैसा है। क्योंकि:

“तुम राम कहो या रहीम कहो ।
दोनों की गरज अल्लाह से है
तुम दीन कहो या धर्म कहो ।
मतलब तो उसी की राह से है ।”

ये बात सभी जानते हैं कि “इन्कलाब जिन्दाबाद” का नारा हज़रत मोहनी ने दिया था लेकिन इसको भगतसिंह, अशफाक उल्ला खाँ एवं चन्द्रशेखर आजाद ने अपनाया। रामप्रसाद बिस्मिल की शायरी आज किसकी ज़बान पर नहीं है। “जय जवान, जय किसान” का नारा आज किसको याद नहीं है तभी तो ये गर्व से कहा जाता है कि—

“सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा ।
हम बूलबूले हैं इसकी, ये गुलिस्तां हमारा ।”

अतः हमें भाषाओं को किसी विशेष वर्ग से नहीं जोड़ना चाहिए। वरन्:

“न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दौस्तां वालो।
तम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में।”

मेरा मानना है कि हमें भाषाओं को सियासत से नहीं
जोड़ना चाहिए हमें कबीरदास जी के विचारों को अपने
समक्ष रखना चाहिए—

“ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए।
औरन को सीतल करे, आपहु सीतल होए॥”



जीवन में खेलों का महत्व

वसीम अहमद
बी.ए. द्वितीय

प्रस्तावना:- खेलों का जीवन में अत्यधिक महत्व है। खेल-कूद को शिक्षा का अनिवार्य अंग मानकर महत्व दिया जाता है। समाज में खिलाड़ियों को आदर-सम्मान प्राप्त होता है और वे खिलाड़ी दूसरों के लिए आदर्श बन जाते हैं। शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले खेल-कूद को जीवन में महत्व दिया ही जाना चाहिए।

विस्तारः— खेलों का प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है जिससे शरीर स्वस्थ और शक्तिशाली बनता है, रक्त संचार बढ़ता है। मांसपेशियाँ और हड्डियाँ मजबूत बनती हैं। पसीना निकलने से शरीर के विष-तत्त्व बाहर निकल जाते हैं। पाचन क्रिया भी सुचारू हो जाती है और इस प्रकार शरीर चुस्त और फर्टीला बना रहता है।

बच्चों के लिए जितनी आवश्यक शिक्षा है उतना ही आवश्यक खेल भी है। खेल से मनुष्य समाज में अपनी एक पहचान बनाता है। अगर बच्चों को खेल में रुचि न हो, तो यह चिंता का विषय है। खेल शारीरिक विकास की नींव तो होता ही है, साथ ही बौद्धिक और भावनात्मक विकास के लिए भी आवश्यक है। इससे आपसी-तालमेल और सङ्ग-बूझ का विकास होता है।

भाई—चारा और प्रेम की भावना उत्पन्न होती है और भेद—भाव, ऊँच—नीच की भावना समाप्त होती है। सारे तनाव को भूलकर जब मन खेल की ओर आकर्षित होता है, तो व्यक्ति जीवन के दुख दर्द भूल जाता है। इस प्रकार खेल हमें तनाव—मुक्त मानसिक शक्ति भी प्रदान करता है।

खेलों का उद्देश्य संघर्षों से उभरने और उनका सामना करने की क्षमता पैदा करना भी है। 'खेल भावना' जीवन में विपरीत स्थितियों का मुकाबला करने का साहस देती है। संघर्षपूर्ण और तनाव जैसी परिस्थितियों में भी निराशा और उदासी खिलाड़ि को नहीं घेरती है। हम सुख-दुख को संभाव से लेना सीखते हैं। किताबी-कीड़ा बनने वालों का जीवन असन्तुलित रहता है। सहयोग-सहकार का प्रशिक्षण खेलों से प्राप्त होता है।

उपसंहारः— मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि खेलों से हमारा शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास होता है। “स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है।” खेलों के द्वारा समाज से अन्याय, शोषण और अनेक बुराईयाँ दूर हो सकती हैं।



गुरु गोविन्द सिंह के वीर सपूत्र

जोनिका

एम.ए. द्वितीय सेमे.

तेगबहादुर और पिता गुरु गोविन्द सिंह की वीरतापूर्ण कथाएँ सुनाती रहीं।

सरहिन्द पहुँचने पर उन्हें किले के एक हवालदार बुर्ज में भूखा—प्यासा रखा गया। माता गुजरी देवी उन्हें रातभर वीरता तथा अपने धर्म में अडिग रहने के लिए प्रेरित करती रहीं। वे जानती थीं कि मुगल सर्वप्रथम बच्चों से धर्म परिवर्तन करने के लिए कहेंगे। दोनों बालकों ने अपनी दादी को भरोसा दिलाया कि वे अपने पिता व कुल की शान पर दाग नहीं लगने देंगे तथा अपना धर्म नहीं बदलेंगे तथा अपने वचन पर अडिग रहेंगे।

सुबह सैनिक बच्चों को लेने पहुँच गये। दोनों बालकों ने दादाजी के चरणस्पर्श किये और सफलता का आशीर्वाद लेकर चले गये। दोनों बालक नवाब वजीर खान के सामने पहुँचे तथा सिंह की तरह गर्जना करके बोले:-

“वाहे गुरुजी का खालसा, वाहे गुरुजी की फतेह !”

चारों ओर से शत्रुओं से घिरे होने के कारण भी इन नह्नें शेरों की निर्भीकता को देखकर सभी दरबारी दाँतों तले उँगली दबाने लगे। शरीर पर केसरी वस्त्र, पगड़ी तथा कृपाण धारण किये इन नह्नें योद्धाओं को देखकर एक बार तो नवाब का भी हृदय पिघल गया। उसने बच्चों से कहा:

“इन्शा अल्लाह! तुम बड़े सुन्दर दिखाई दे रहे हो।
तुम्हें सजा देने की इच्छा नहीं होती। बच्चों! हम तुम्हें
नवाबों के बच्चों की तरह रखना चाहते हैं। एक
छोटी-सी शर्त है कि तुम अपना धर्म छोड़कर मुसलमान
बन जाओ।”

नवाब ने लालच और प्रलोभन देकर पहला पासा फेंका। वह समझता था कि इन बच्चों को मनाना ज्यादा कठिन नहीं है परन्तु वह यह भूल बैठा था कि भले ही वे बालक हैं परन्तु कोई साधारण नहीं अपितु गुरु गोविन्द

जी के सुपुत्र थे। आनंदपुर के युद्ध में
गुरुजी का परिवार बिखर गया था।
उनके दो पुत्र अजीत सिंह और जुझार सिंह की तो
उनसे भेट हो गयी परन्तु दो छोटे पुत्र गुरु गोविन्द सिंह
की माता गुजरी देवी के साथ अन्यत्र बिछुड़ गये।
आनंदपुर छोड़ने के बाद फतेहसिंह और जोरावर सिंह
अपनी दादी के साथ जंगलों, पहाड़ों को पार करके एक
नगर में पहुँचे। उस समय जोरावर सिंह की उम्र मात्र
सात वर्ष ग्यारह माह तथा फतेह सिंह की उम्र पाँच वर्ष
दस माह थी।

इस नगर में उन्हें गंगू नामक ब्राह्मण मिला, जो बीस वर्षों तक गुरु गोविन्द सिंह के पास रसोईये का काम करता था। उसकी जब माता गुजरी देवी से भेंट हुई तो उसने उन्हें अपने घर ले जाने का आग्रह किया। पुराना सेवक होने के नाते माताजी दोनों नहें बालकों के साथ गंगू ब्राह्मण के घर चलने को तैयार हो गयी।

माता गुजरी देवी के समान (पास) में कुछ सोने की मुहरें थीं जिन्हें देखकर गंगू लोभवश अपना ईमान बेच बैठा। उसने रात्रि को मुहरे चुरा लीं परन्तु लालच बड़ी बुरी बला होती है। वासना का पेट कभी नहीं भरता अपितु वह बढ़ती ही रहती है। गंगू ब्राह्मण की वासना और अधिक भड़क उठी। वह इनाम पाने की लालच में मुरिंड थाना पहुँचा और वहाँ के कोतवाल को बता दिया कि गुरु गोविन्द सिंह के दो पुत्र और माता उसके घर में छुपी हैं।

कोतवाल ने गंगू के साथ सिपाहियों को भेजा तथा दोनों बालकों सहित माता गुजरी देवी को बन्दी बना लिया। एक रात उन्हें मोरिडा की जेल में रखकर दूसरे दिन सरहिंद के नवाब के पास ले जाया गया। इस बीच माता गुजरी देवी दोनों बालकों को उनके दादा गुरु

सिंह के सपूत्र हैं। वह भूल बैठा था कि इनकी रगों में भी वीर महापुरुष का रक्त दौड़ रहा है। जिसने अपने पिता को धर्म के लिए शहीद होने की प्रेरणा दी थी तथा अपना समस्त जीवन धर्म की रक्षा में लगा दिया था। नवाब की बात सुनकर दोनों भाई निर्भीकतापूर्वक बोले:

“हमें अपना धर्म प्राणों से भी प्यारा है। जिस धर्म के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों की बलि दे दी उसे हम तुम्हारी लालचभरी बातों में आकर छोड़ दें, यह कभी नहीं हो सकता।”

नवाब की पहली चाल बेकार गयी। बालक नवाब की मीठी बातों तथा लालच में नहीं फँसे। अब उसने दूसरी चाल खेली। नवाब ने सोचा ये दोनों बालक ही तो हैं, इन्हें डराया-धमकाया जाय तो अपना काम बन सकता है। उसने बच्चों से कहा—

“तुमने हमारे दरबार का अपमान किया है। हम चाहें तो तुम्हें कड़ी सजा दे सकते हैं परन्तु तुम्हें अवसर फिर से देते हैं। अभी भी वक्त है यदि जिन्दगी चाहते हो तो मुसलमान बन जाओ वर्ना।”

नवाब अपनी बात पूरी करे इससे पहले ही ये नन्हे वीर गरजकर बोल उठे—

“नवाब! हम उन गुरु तेगबहादुर जी के पोते हैं जो धर्म की रक्षा के लिये कुर्बान हो गये। हम उन गुरु गोविन्द सिंह जी के पुत्र हैं जिनका नारा है— “चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ, सवा लाख से एक लड़ाऊँ।” जिनका एक-एक सिपाही तेरे सवा लाख गुलामों को धूल चटा देता है, जिनका नाम सुनते ही तेरी सल्तनत थर-थर काँपने लगती है, तू उसके पुत्रों को मृत्यु का भय दिखाता है। हम फिर से कहते हैं कि हमारा धर्म हमें प्राणों से भी प्रिय है। हम प्राण त्याग सकते हैं परन्तु अपना धर्म नहीं त्याग सकते।

बालक जोरावर ने कहा:-

इतने में दीवान सुच्चानन्द ने बालकों से पूछा:
“अच्छा यदि हम तुम्हें छोड़ दें तो तुम क्या करोगे?”
दीवान: “यदि तुम हार गये तो?”

“हम सेना इकट्ठी करेंगे और अत्याचारी मुगलों को इस देश से खदेड़ने के लिये युद्ध करेंगे।”

जोरावर सिंहः दृढ़तापूर्वक “हार शब्द हमारे जीवन में ही नहीं हैं। हम हारेंगे नहीं या तो विजयी होंगे या शहीद होंगे। फौज तैयार करेंगे अब तुम्हारे साथ तब तक युद्ध करते रहेंगे जब तक हम मुगलों के जुल्म राज को खत्म नहीं कर देते या शहीद नहीं हो जाते।”

बालकों की वीरतापूर्वक बातों को सुनकर नवाब आगबबूला हो उठा। उसने काजी से कहा: इन बच्चों ने हमारे दरबार का अपमान किया है तथा भविष्य में मुगल शासन के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा की है। अतः इनके लिये क्या दण्ड निश्चित किया जाये?"

काजी: "ये बालक मुगल शासन के दुश्मन हैं और इस्लाम को स्वीकार करने को भी तैयार नहीं है। अतः इन्हें जिन्दा दीवार में चुनवा दिया जाये।" शैतान नवाब तथा काजी के क्रूर फैसले के बाद दोनों बालकों को उनकी दादी के पास भेज दिया गया। बालकों ने उत्साहपूर्वक दादी को पूरी घटना सुनायी। बालकों की वीरता को देखकर दादी गद्गद हो उठीं और उन्हें हृदय से लगाकर बोली: "मेरे बच्चों! तुमने अपने पिता की लाज रख ली।"

दूसरे दिन दोनों वीर बालकों को दिल्ली के सरकारी जल्लाद शिशाल बेग और विशाल बेग को सुपुर्द कर दिया गया। बालकों को निश्चित स्थान पर ले जाकर उनके चारों ओर दीवार बननी प्रारम्भ हो गयी। धीरे-धीरे दीवार उनके कानों तक ऊँची उठ गयी। इतने में बड़े भाई जोरावर सिंह ने अन्तिम बार अपने छोटे भाई फतेह सिंह की ओर देखा और उसकी आँखों से आँसू छलक उठे।

जोरावर सिंह की इस अवस्था को देखकर वहाँ
खड़ा काजी बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने समझा कि ये बच्चे
मृत्यु को सामने खड़ा देखकर डर गये। उसने अच्छा
मौका देखकर जोरावर सिंह से कहा—
“बच्चों! अभी भी वक्त है यदि तुम मुसलमान बन जाओ



मानिसक रोग महज एक रोग

शहजाद
बी. ए. तृतीय

मानसिक रोगी भी हम जैसे ही लोग हैं,
इस रोग का होना मात्र एक संजोग है।
यह किसी के बुरे कर्मों का नतीजा नहीं,
अन्य रोगों की तरह यह भी एक रोग है।
यह कोई जादू टोना या माया नहीं,
यह किसी भूत प्रेत की छाया नहीं।
उसी ने विजय पायी इस रोग पर,
जिसने जन्तर-मन्तर करवाया नहीं।
अब दूर रहना होगा झाड़-फूँक पाँखड़ी लोगों
भौतिकवादी समाज के खोखले विलास
संतान को जन्म देना ही पर्याप्त नहीं अभिभाव
बचाना भी होगा शारीरिक और मानसिक
रोगी के खेलकूद पर रोक न लगाओ,
जितना भी वह पढ़ना चाहे उनको पढ़ाओ
उसे भी मौका दो स्वावलम्बी बनने का,
बे वजह अंकुश लगाकर उसे अपंग न ब
अफीम गाँजा चरस शराब सिग्रेट या बीड़ी,
इनके पीछे भाग जाने वाली है आज की न
इससे कोई खुशी नहीं इसमें कोई जिंदगी नहीं
इन्हें कभी गले ना लगाना यह तो है मौत



वो पिता ही होता है!

आकाश राठी

माँ का गुणगान तो हम हमेशा करते हैं,
पर बेचारे पिता ने क्या बिगड़ा है,
संकट से मुक्ति का मार्ग वही तो बताता है।
अगर माँ के पास आँसू का दरिया है,
तो पिता के पास संयम का अस्त्र है।
देवकी और यशोदा का प्रेम मन में रखिए,
पर टोकरी में ले जाने वाले पिता को भी याद रखिए।
पुत्र वियोग पर कौशल्या बड़ी रोई थी,
पर दशरथ तो पुत्र वियोग पर स्वर्ग सिधार गए थे।
समय पर माँ होमवर्क करवा देती है,
पर उधार लेकर डोनेशन देकर प्रवेश पिता ही दिलाता है।
ससुराल को विदा जब होती हैं बेटियाँ,
तो माताएँ दहाड़—दहाड़ कर रोती हैं,
पर मेरी गुड़िया का पूरा ख्याल रखना,
हाथ जोड़कर खून के आँसू रोता पिता ही तो कहता है।
पिता बचत करके बेटे के लिए नई जीन्स लाता है,
पर खद तो पुरानी पेन्ट-शर्ट से काम चलाता है।

- ★ “जिनके अन्तःकरण में अच्छे संस्कारों का बीज रहता है, ग्लानि उन्होंने को होती है।” —रामचन्द्र शुक्ल
 - ★ “हम अपना मुँह न दिखाकर लज्जा से बच सकते हैं, पर ग्लानि से नहीं।” —रामचन्द्र शुक्ल
 - ★ “दूसरों का भय हमें भगा सकता है, हमारी बुराइयों को नहीं।” —रामचन्द्र शुक्ल

बाबा — क्या हुआ मेरे बच्चे । घर में कुछ परेशानी है ।
हम सब दूर कर देंगे मेरे बच्चे ।

लड़की – बाबा मैं अपने पति से परेशान हूँ वो शराब पीकर मझे पीटते हैं। मैं क्या करूँ बाबा जी।

बाबा — ले बच्चा ये ताबीज और अपने पति के दाहिने हाथ पर बाँध देना ।

लड़की – ठीक है बाबा जी (ताबीज लेकर अन्दर जाने लगती है।)

बाबा – बच्चे बाबा को कुछ दान दक्षिणा तो दो ।

लड़की – बाबा, मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।

बाबा — बच्चा कुछ तो देना पड़ेगा बाबा को। वरना इस ताबीज का कुछ असर नहीं होगा।

लड़की – (अन्दर जाकर कुछ देर में आती है) लो बाबा मेरे पास बस ये कुछ रुपये हैं जो मैंने अपने पति से छुपाकर रखे थे।

बाबा – ठीक है बच्चा! ये ही दे दो।

लड़की – (अन्दर आकर) अपने पति को वह ताबीज बाँध देती है।

लड़का – ये क्या है? (लड़का उसको खोलकर जोर से फेंक कर बाहर चला जाता है) और शराब पीकर आता है और लड़की को पीटकर घर से बाहर निकाल देता है।

(जैसे ही लड़की को बाहर निकालता है तभी कुछ शिक्षित लड़के वहाँ आ जाते हैं)

शिक्षित लड़के – क्या हुआ बहन जी?

(लड़की अपनी आप बीती बताती है)

शिक्षित लड़के – (पुलिस स्टेशन फोन मिलाते हुए)
हैलो! पुलिस स्टेशन। सर मोहल्ला होली चौक में जल्दी
आइए यहाँ एक दहेज उत्पीड़न का केस है।

पुलिस – ठीक है। (पुलिस वहाँ पहुँचती है)

पुलिस – किसने किया था फोन?

शिक्षित लड़के – जी सर! हमने किया था।

पुलिस – कहाँ है वह लड़की?

लड़के – जी ये ही है और इनका पति अन्दर है घर में।

पुलिस अन्दर जाकर उसको पकड़ कर ले जाती है और लड़का जेल चला जाता है और उसको समझ आ जाता है कि दहेज लेना पाप है।

(अब नाटक के सभी पात्र मंच पर आकर शपथ लेंगे)

शपथ – हम सब शपथ लेते हैं कि आज से हम नशा छोड़ेंगे, अन्धविश्वास त्यागेंगे और दहेज लेना बन्द करेंगे।

जय हिन्द



ਮੇਰੀ ਤੜਾਨ

मैं चाहती हूँ बादलों में
अपनी जगह बनाना
देखेगी दुनिया मुझे
देखेगा सारा जमाना
जी भर के उड़ जाऊँ
पक्षियों के बीच से
और पक्षियों से कह दूँ
मैं आँख मीच के!

चाहूँ मैं सबको
अपनी मुट्ठी में भरना
अपने साथ उड़ाना
सपना खुली आँखों का
मैं टूटने ना दूँगी
चाह है वे मेरी
मैं इसे पूरी करूँगी ।

दीपांशी पाल
बी.कॉम. द्वितीय

विनायका

कृ० अर्चना

अंशकालिक प्रवर्त्ता (वाणिज्य संकाय)

एक दिन एक किसान अपने बेटे के साथ खेत पर यह देखने के लिए गया कि फसल पक गई है यह नहीं। पकी फसल में कुछ बालियाँ सीधी तरी हुई खड़ी थीं और कुछ झूकी हुई थीं।

यह दृश्य देखकर किसान का बेटा अपने पिता से बोला, “पिताजी जो बालियाँ झुक गई हैं, वे अच्छी नहीं लग रहीं। जो सीधी तनी खड़ी हैं, वे कितनी प्यारी लग रही हैं।

किसान ने झुकी हुई कुछ बालियों को हाथ में उठाकर कहा देखो बेटा जो बालियाँ झुकी हुई हैं। उनमें कितने अच्छे दाने पड़े हैं और जो बालियाँ सीधी तरी

खड़ी हैं उनमें अनाज का एक भी दाना नहीं पड़ा है वे बालियाँ खाली हैं। इसी प्रकार जो अहंकारी होता है वह मुर्दे के समान रहता है। उसमें कोई सद्गुण प्रवेश नहीं कर पाते हैं।

जो विनम्रता से झुके होते हैं उन्हें ही कुछ प्राप्त होता है। विनम्रता जीवन का वह गुण है जो मानव को उच्च शिखर पर पहुँचा देता है। अहंकार मानव को नीचे गिरा देता है। अहंकार से सीना ताने लोगों को कुछ भी नहीं मिलता।

शिक्षा:- हमें अहंकार को छोड़कर विनम्रता को अपनाकर जीवन को सुधारना चाहिए।

माँ के नाम

भगत सिंह (रोवर)
बी.कॉम. द्वितीय

1. मैंने माँ की हथेली पर एक काला तिल देखा और कहा—“माँ” दौलत का तिल है? माँ ने अपने दोनों हाथों से मेरा चेहरा थामा और कहा, ‘हाँ’ बेटा देखो मेरे दोनों हाथों में कितनी दौलत है।
 2. किसी ने माँ के कंधे पर सिर रख के पूछा, माँ कब तक अपने कंधे पर सोने दोगी? माँ ने कहा जब तक लोग मुझे अपने कंधे पर न उठा लें।
 3. दिन भर के काम के बाद, बेटा पूछता है, ‘क्या लाए?’ बीवी पूछती है, ‘कितना बचाया?’ पापा पूछते हैं ‘कितना कमाया?’ लेकिन माँ पूछेगी, ‘बेटा कुछ खाया?’

4. एक दिन मैं कॉलेज से घर आने के लिए निकला, तो देखा आसमान में बादल थे। लग रहा था कि बारिश होगी। इसलिए सोचा कि घर जल्द पहुँच जाऊँ, पर रास्ते में ही बड़ी बहन ने कहा, 'थोड़ी देर रुक नहीं सकते थे।' पापा ने कहा, 'खड़े कैसे हो जाते? जनाब को बारिश में भीगने का शौक जो है।' इतने में मम्मी आई सिर पर तौलिए रखते हुए बोली, 'ये बारिश भी न! थोड़ी देर रुक जाती तो मेरा बेटा घर आ जाता।

सच! माँ तो माँ ही होती है।

“बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे ।

खल के बचन संत सह जैसे ।"

—तुलसी

माँ (जीवन आधार)

हिमानी जैन
बी.कॉम. द्वितीय

जीवन का अमूल्य धन है माँ,
दोबारा मिलनी नामुमकिन है माँ

बचपन का सहारा,
जवानी की दोस्त है माँ

जन्म के बाद से ही परछाई की तरह,
हमारे साथ रहती है माँ

सूखे में हमें सुलाती,
गीले में खुद सो जाती है माँ

कुछ बड़े हुए तो, सहारा देकर
हमें चलाती है माँ

स्कूल गये तो उँगली पकड़कर,
हमें लिखवाती है माँ

पढ़—लिखकर जब आती जवानी, तो
एक दोस्त की भूमिका निभाती है माँ

अच्छे—बुरे का अनुभव हमें कराती है माँ,
बच्चों के साथ पूरा परिवार चलाती है माँ।

सब दायित्व अपने कंधों पर लिए चलती जाती,
नई दिशा—सी होती है माँ

बच्चों, पति, ब्रह्मों की बातें सुनती,



फिर भी हँसकर सह जाती है माँ।
आशाएँ मन में लिए,
दायित्व पूरे करती जाती है माँ
जब आता बुढ़ापा तो,
पिछले दिन याद करती है माँ
अपने बच्चों से सेवा की इच्छित,
कामना करती है माँ
कुछ मानते माँ का कर्ज,
और कुछ कहते यह था
हमारे लिए माँ का फर्ज
फिर भी माँ को रहता है संतोष,
कि मेरे दायित्व हो गये पूर्ण
जाते—जाते होती कामना
मेरे बच्चों का परिवार हो संपूर्ण
बच्चे होते माँ का संसार
ऐसा मानती है माँ, इसलिए
जाते—जाते बच्चों के प्रति
दायित्व पूर्ण कर जाती है माँ।

बेटियाँ

विनोद कुमार

फिर क्यूँ बेटा झिड़क देता हाथ है।
 कहते हैं एक आँगन होता है,
 जो रिश्तों का संसार है।
 फिर क्यूँ एक भाई पैसों की खातिर
 कर रहा भाई पर वार है।
 कहते हैं नारी पूजनीय देवी का रूप है।
 जिसकी आरती हम सबका आधार है।
 फिर क्यूँ दहेज की आग में वह
 झलसती बार-बार है।



बेटे के जन्म दिन पर

ज्योति
बी.ए. तृतीय

रात के 1:30 बजे फोन आता है बेटा
फोन उठाता है तो माँ बोलती है।
जन्मदिन मुबारक हो लल्ला।

बेटा गुस्सा हो जाता है और माँ से कहता है सुबह
फोन करती। इतनी रात को नींद खराब क्यों की। कह
कर फोन रख देता है।

थोड़ी देर बाद पिता का फोन आता है बेटा पिता पर गुस्सा नहीं करता, बल्कि कहता है—सुबह फोन करते। फिर पिता ने कहा—मैंने इसलिए फोन किया कि तुम्हारी माँ पागल है, जो तुम्हें इतनी रात को फोन किया।

वो तो आज से 25 साल पहले ही पागल हो गई थी जब उसे डॉक्टर ने ऑपरेशन करने को कहा और उसने मना किया था वो मरने के लिए तैयार हो गई पर ऑपरेशन नहीं करवाया।

रात के 1:30 को तुम्हारा जन्म हुआ था 6 बजे से
वह परेशान रात के 1:30 बजे तक रही।

तुम्हारा जन्म होते ही खुश हो गई। तुम्हारे जन्म से पहले डॉक्टर ने दस्तखत करवाये थे कि अगर कुछ हो जाये, तो हम जिम्मेदार नहीं होंगे।

साल में एक दिन फोन किया तो तुम्हारी नींद

खराब हो गई मुझे तो रोज रात को 25 साल से 1:30
बजे उठाती है और कहती है देखो हरे लल्ला का जन्म
इस वक्त हुआ था ।

बस यही कहने के लिए तुम्हें फोन किया था इतना कहते ही पिता फोन रख देते हैं।

बेटा सुन्न हो जाता है, सुबह माँ के घर जाकर माँ के पैर पकड़कर माफी माँगता है। तब, माँ कहती है, देखो जी मेरा लाल आ गया।

फिर पिता से माफी माँगता है, तब पिता कहते हैं
आज तक ये कहती थी, कि हमें कोई चिन्ता नहीं है।
हमारी चिन्ता करने वाला हमारा लाल है।

पर अब तुम चले जाओ। मैं तुम्हारी माँ से कहूँगा
कि चिंता मत करो मैं तुम्हारा हमेशा की तरह आगे भी
ध्यान रखूँगा।

तब माँ कहती है, माफ कर दो, बेटा है।

सब जानते हैं दुनिया में एक माँ ही है जिसे जैसा
चाहे कहो फिर भी वे गाल पर, प्यार से हाथ फेरेगी।

पिता अगर तमाचा न मारे, तो बेटा माँ के सर पर बैठ जाये। इसलिए पिता का सख्त होना भी जरुरी है।

- ★ “आदमी के लिए आजादी एक बेशकीमती मोती है।” —बालकृष्ण भट्ट
 - ★ “पुरुषार्थ वह है, जो समय को अपने अनुकूल बनाये।” —प्रेमचन्द
 - ★ “रोटियों में ज्यादा खर्च नहीं होता, खर्च होता है आडम्बर में।” —प्रेमचन्द
 - ★ “तपस्या में क्रोध और द्वेष आ जाता है तो तपस्या भंग हो जाती है।” —प्रेमचन्द
 - ★ “रोना पराजय का लक्षण है।” —प्रेमचन्द



सबसे बड़ा धर्म

विनोद कुमार
बी.एस-सी. तृतीय

सात दिन में एक बार खाते हैं और वह भी धूप व गर्मी में पंचाग्नि है, जाड़ों में शीतल जल में खड़े होते हैं।”

राजा ने उनका स्वागत किया और फिर वह प्रस्थान कर गये। अब बारी चौथे लड़के की थी, वह अपने साथ मैले—कुचैले कपड़े पहने एक देहाती को लाया। बोला, “यह एक कुत्ते के घाव धो रहे थे। मैंने इन्हें जानता नहीं आप ही पूछ लीजिए कि यह धर्मात्मा है या नहीं।”

राजा ने पूछा क्या तुम धर्म-कर्म करते हो? वह बोला, “मैं अनपढ़ हूँ धर्म-कर्म क्या होता है, नहीं जानता! हाँ कोई बीमार होता है तो सेवा कर देता हूँ। कोई माँगता है तो अन्न दे देता हूँ।”

राजा ने कहा, "यही सबसे बड़ा धर्मात्मा है। सबसे बड़ा धर्म बिना किसी स्वार्थ के असहायों की सेवा करना है।"



ऐसी होती है माँ

लक्की त्यागी

सभी साड़ियाँ छीज गई थी

मगर नहीं कह पाई मम्मी

मम्मी से थोड़ी—थोड़ी सबने रोज चुराई मम्मी ।

घर में चूल्हे मत बाँटों रे देती रही दुहाई मम्मी

बाबू जी बीमार पड़े जब साथ—साथ मुरझाई मम्मी

रोती है लेकिन छप-छप कर

बड़े सब्र की जाई मम्मी

लडते—लडते सहते—सहते रह गई

एक तिहाई ममी

घर के शगन सभी मम्मी से

है घर की शहनाई मम्मी ।

आलोचक विश्वम्भर पाण्डेय से विमर्श

विश्वम्भर पाण्डेय

आलोचक

परिचय—विश्वभर पाण्डेय जी सनातन धर्म डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। समकालीन कविता पर उनके निर्देशन में कई शोध किये जा रहे हैं। वे एक शोध-पत्रिका “शोध-वैचारिकी” का सम्पादन भी कर रहे हैं। समकालीन परिवेश के आधार पर शोधार्थी ने विश्वभर पाण्डेय जी का साक्षात्कार लिया है। साक्षात्कार में समकालीन कविता के विभिन्न मुद्दों के साथ कवि राजेश जोशी व कवि ज्ञानेंद्रपति के काव्य पर विमर्श किया है। जिसका लिखित रूप यहाँ दिया जा रहा है।

प्रश्न-1. समकालीन कविता किस प्रकार का प्रतिनिधित्व करती है?

वि.पाण्डेय—समकालीन अपने आप में एक ऐसा शब्द है जो सनातन से पूछा जाता रहा है और आज भी यह प्रचलन में है। प्रत्येक समाज अपने समय में जीता है। समाज व साहित्य का रिश्ता माँ व पुत्र का है। व्यक्ति हर समय समकालीन रहता है।

जहाँ तक समकालीन कविता के सामाजिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न है कविता सदैव समाज का प्रतिनिधित्व करती रही है। आज का कवि अधिक जागरुक है। वह समाज के सभी बिंदुओं को अपनी कविता में रूपायित करता है। अणु से परमाणु तक, पृथ्वी से आकाश तक घर से लेकर विदेश तक सभी कविता में समाहित है। कविता इसको पुरजोर ढंग से अभिव्यक्त कर रही है। कवि इसके लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

प्रश्न-2. राजनीति की प्रभावशीलता को समाज व साहित्य की नियामक किस प्रकार मानते हैं?

वि.पाण्डेय— रघुवीर सहाय व धूमिल ने राजनीति को कविता का हिस्सा बनाया आज के कवि उन्हीं की

परम्परा के कवि कहे जा सकते हैं। उनकी रचनाएँ बनती-बिगड़ती राजनीति की स्थितियों व समाज में राजनीतिज्ञों द्वारा किये गये दुर्व्यवहार को अपने अंदर समाहित करती हैं। वर्तमान राजनीति भ्रष्ट होती जा रही है समकालीन कविता उसे तार-तार कर दिखा रही है। आज राजनेता समाज को दिशा देने की बजाय उसे पथभ्रष्ट करने में लगे हुए हैं। आज की कविता राजनीति को व्यांग्यात्मक ढंग से अभिव्यक्त करती है। कोई भी कवि राजनैतिक जागरुकता से अछूता नहीं है। कवि के लिए राजनैतिक जागरुकता विशेष जरुरी है। वह आज के कवि में दिखाई पड़ती है।

प्रश्न-3. धर्म समकालीन परिवेश में किस प्रकार सकारात्मक व नकारात्मक सिद्ध हो रहा है? कविता इसे कहाँ तक दिखा पा रही है?

वि.पाण्डेय—मार्क्स ने धर्म को अफीम कहा था आज धर्म को अफीम से भी प्रभावी रूप से मठाधीशों ने परोसा व प्रस्तुत किया है। मुजफ्फरनगर, केरल, बिहार के दंगे इसका परिणाम हैं। सभी दंगे धर्म को धुरी बनाकर करवाये जा रहे हैं।

हमारी प्राचीन परम्परा में धर्म के अच्छे विद्वानों से सलाह ली जाती थी। धर्म द्वारा राजनैतिक दिशा निर्धारित होती थी। अब धर्म से विश्वास उठता जा रहा है। आज के मठाधीश मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में धर्म की आड़ लेकर कुकृत्य कर रहे हैं जिससे धर्म पर से विश्वास उठता जा रहा है। वहाँ धर्म का आवरण हटा देने से भौतिकता नग्न दिखाई पड़ती है। इस मोहभंग को समकालीन कवियों ने व्यंग्य के रूप में सही ढंग से अनावृत किया है। यह व्यंग्य ठेकेदारों को ठीक करने का काम करेगा।

प्रश्न-4. वैश्विक परिवेश से किस प्रकार सामाजिक हित प्रभावित हो रहे हैं? साहित्य इसका रूपांतरण



किस प्रकार कर रहा है?

वि.पाण्डेय—हमारी संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा पहले से ही रही है। वसुधा ही हमारा कुटुंब है। 90 के दशक में पश्चिम से आयातित वैश्वीकरण ने संबंधों व समाज को तोड़ा है। साहित्य को विखंडित करके पढ़ने की परम्परा सी चल पड़ी है। अब सभी को मारकर किस प्रकार के चिंतन की परम्परा इन विद्वानों में चल पड़ी है। वैश्विक होना सद्गुण है। हम उनकी नकल कर अपनी संस्कृति को कुंदित करें यह उचित नहीं। हमारा पहनावा, हमारी संस्कृति, हमारी राष्ट्रीय पहचान है। हमारी संस्कृति वैश्विक स्तर पर होने वाले थोड़े-बहुत उथल-पुथल से प्रभावित होने वाली नहीं है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण वैश्विक आर्थिक मंदी है। आर्थिक मंदी से जूझकर भी हम उससे उतने प्रभावित नहीं हुए।

प्रश्न-5. भारतीय परिवेश ने उस जीवन-शैली को नहीं अपनाया है। आने वाले समय में इसके प्रभाव को आप किस प्रकार देखते हैं?

वि.पाण्डेय—अन्य संस्कृतियों को अपने में समाहित कर लेने के कारण बाजारवाद हम पर हावी नहीं हो पाया है। जहाँ तक सांस्कृतिक आयात का प्रश्न है। वह हमें पूर्णरूप से प्रभावित नहीं कर सकती जिस प्रकार पश्चिम के देश हो रहे हैं।

हर परिस्थिति में हमारी संस्कृति बची रहेगी। यह पश्चिम के देशों की तरह हमें प्रभावित नहीं कर सकती।

प्रश्न-6. कुछ चिन्तक व आलोचक मानते हैं कि भूमंडलीकरण की अवधारणा सफल नहीं हुई। नव्य राष्ट्रवाद क्या लोगों के स्वार्थ पर आधारित है?

वि.पाण्डेय—राष्ट्रवाद की अवधारणा पहले भी थी अब भी है। इसे नया विशेषण देकर भ्रमित किया जा रहा है। राष्ट्रवादी पहले भी थे अब भी हैं। इस कहें मंगल पांडेय, भगत सिंह या देश की सेना राष्ट्रवादी नहीं हैं। केवल कुछ राजनेताओं द्वारा दिया गया भाषण ही राष्ट्रवादी है। ऐसा

नहीं है। कुछ लोग समाज को भ्रमित कर रहे हैं। आज भी हम उतने ही राष्ट्रवादी हैं।

प्रश्न-7. समकालीन परिवेश में पर्यावरण चिंतनीय स्थिति में है। तब काव्य में इस विमर्श को आप कितना प्रभावी मानते हैं?

वि.पाण्डेय—इसका सफल उदाहरण प्रसाद जी की कामायनी है। जो प्राकृतिक परिवेश को लेकर ही लिखी गयी है। पर्यावरण चिंता हमारे परिवेश में पहले से ही है। भौतिक सुविधाओं के लिए हम इसे प्रभावित कर रहे हैं। विश्व की गणना के अनुसार प्रतिवर्ष 0.5 सेल्सियस तापमान बढ़ रहा है। यदि ऐसा ही रहा तो दो-चार दशकों में यह और प्रभावित होगी। यदि तापमान ऐसे ही बढ़ता रहा तो ग्लोशियर के प्रभावित होने से नदी, जल-मार्ग व जलजीव तथा मानव जीवन प्रभावित होगा। आज के विशेष कवि इस पर नज़र गड़ाए हैं। जैसे राजेश जोशी जी, ज्ञानेंद्रपति जी, मंगलेश ड्बराल आदि इस पर बहुत कुछ लिख रहे हैं, पहाड़ के कवि विशेषकर। इन कवियों के पूरे काव्य संग्रह इस विषय पर आये हैं।

पन्त जी ने प्रकृति को अपना परिवेश बनाया है। नए कवियों में इसकी चिंता पन्त जी से भी अधिक दिखाई पड़ती है। पन्त जी के समय संकट उस तरह नहीं था जैसा आज है। इसलिए आज के कवि इसे अपने काव्य में अभिव्यक्त करते हैं। पहले उतना संकट नहीं था आज स्थिति चिंतनीय है। कविता इसे अपने ढंग से व्यक्त कर रही है।

प्रश्न-8. समकालीन परिवेश में काव्य की क्रांतिकारी भूमिका रही है। तब आप राजेश जोशी व कवि ज्ञानेंद्रपति के काव्य को किस प्रकार देखते हैं?

वि.पाण्डेय—क्रांतिकारी वह होता है जो आमूल-चूल परिवर्तन करता है। प्रकृति में इतना आमूल-चूल परिवर्तन न तो हुआ है न ही निकट भविष्य में होगा। कुछ विश्वशक्तियाँ आपस में टकरा रही हैं। इन दोनों कवियों

की पर्यावरणीय चिंता विशेष रूप से उल्लेखीय है। जब तक लोगों को जागरूक नहीं करेंगे पर्यावरण सुरक्षित नहीं होगा। आज दिल्ली व मुंबई शहर विश्व की सबसे बुरी स्थिति में है। आज के कवियों की पर्यावरण विषयक रचनाएँ निश्चय ही राष्ट्र की धरोहर है।

प्रश्न-3. साहित्य को अन्य तकनीकी माध्यमों से चुनौती मिल रही है। यह चिंतनीय है। इसे आप किस प्रकार देखते हैं?

वि.पाण्डेय- भौतिकता बढ़ रही है। समय का अभाव सब पर हावी है जिसके कारण किताब का पढ़ना, संजोना उसे अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करना कम हुआ है। अब तकनीकी ने लेखन को प्रभावित किया है। फिर भी बात बची रहेगी। किताबें वाचिक परंपरा के साहित्य को पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य करती है। हो सकता है तकनीकी का साहित्य समाप्त हो जाए या तकनीकी समाप्त हो सकती है। किन्तु किताबों के रूप में परंपरा बची रहेगी। साहित्य समाज में अपना स्थान बना रहा है वह कम ही सही।

प्रश्न-10. समकालीन कविता से और क्या अपेक्षा करते हैं?

वि.पाण्डेय- समकालीन कविता कहीं न कहीं खिन्न
राजनैतिक धड़ेबाज़ी का शिकार हो रही है। जिससे
काव्यहित प्रभावित हो रहे हैं। पीछे असहिष्णुता पर लोगों
ने जो कार्य किया वह ठीक नहीं था। आप अपने विरोध
को दर्ज करिये, पुरस्कार लौटाना समाधान नहीं है। इन
चीजों से ऊपर उठना चाहिए। साहित्यकार समाज को
दिशा देने का कार्य करता है। वह तब भी कर रहा था
आज भी कर रहा है। निराला, पन्त, रघुवीर सहाय,
धूमिल कवियों को ख्याति व पुरस्कार की चिंता नहीं थी।
हम संस्थाओं या पदों के लिए चिंता न करें, वी.सी.बनने
की चिंता न करें, किसी मंच के मुखिया बनने की चिंता न
करें तो वह सोच साहित्य को हितकारी बनाएगी। यदि
कवि इस पथ पर चलेगा तो साहित्य का हित होगा।
साहित्यकार तटस्थ रहकर समाज की दिशा का
निर्धारण करें।

..... हम ये उम्मीद कर सकते हैं कि साहित्य फिर उसी धुरी में आएगा। आपने अपना समय दिया बहुत—बहुत धन्यवाद।

वि.पाण्डेय-धन्यवाद!

‘कर्म किये जा फल की इच्छा न कर’ कब तक?

अजब—गजब है ये दुनिया तेरी भगवान्,
जहाँ पैसे से मिलता है सबको सम्मान!
जहाँ “कर्म किये जा फल की इच्छा न कर”,
कर्मठ को ही सिखाता हर नर, हर दर।
मेहनत का सही मोल न मिलने पर, आता हमको रोष,
किसे सुनाएँ व्यथा अपनी जा कर, किसका है दोष।
शर्म—सम्मान करके, करते रहते हैं हम काम.

सतेन्द्र वर्मा

अस्थायी सहायक (कार्यालय)

पर तनख्वाह बढ़ाने का, कोई लेता नहीं नाम ।
 स्थाई नौकर ले तनख्वाह बड़ी, करता मजा,
 अस्थाई नौकर के लिए नौकरी, बन गई सजा ।
 क्यों नहीं समझा जाता हमें भी इंसान,
 हमारे बच्चों को भी चाहिए कुछ सामान ।
 सब का मत लो इस्तेहान हमारे, हे भगवान्,
 दिला दो अब तो हमको भी, कुछ सम्मान ॥

खिलाड़ी और भार कम करने वाला रसायन

दिवाकर

बी.पी.एड. प्रथम वर्ष

DIURETICS क्या हैं:-

इसको Weight Reducing drugs कहा जाता है। क्योंकि इसके सेवन से खिलाड़ी का भार 24 से 48 घण्टे में कम हो जाता है। मुख्य रूप से जब इसका सेवन किया जाता है तो ज्यादा पेशाब बनने लगता है और शरीर का पानी मूत्र के रास्ते बाहर आ जाता है। 24 से 48 घण्टे में लगभग 5 प्रतिशत भारत कम हो जाता है। इसका प्रयोग भार से जुड़े खेलों के खिलाड़ी करते हैं। जैसे- क्रिकेट, बॉक्सिंग, जूडो, वेटलिफ्टिंग आदि।

इसका प्रयोग:- खिलाड़ी तीन कारणों से इसका प्रयोग करता है:-

1. एकदम से शरीर का भार कम करने के लिए।
 2. Anabolic Steroid के संग या उसके बाद इसका प्रयोग करता है। जिससे कि मांसपेशियों के कटस दिखाई देते हैं।
 3. सेवन किये गये अन्य डोपिंग को छुपाने के लिए इसका प्रयोग करता है। क्योंकि इसके सेवन से यह नहीं पता चल पाता है कि खिलाड़ी ने कौन सा रसायन लिया है।

DIURETICS के अन्तर्गत आने वाले प्रेरक (रासायनिक तत्व) इस प्रकार हैं:-

1. Acetazolamida 2. Furosemide
3. Chlorothiazide 4. Hydrochlorothiazide 5. Spironolactone

इसका प्रभाव:-

1. मांसपेशियों की ताकत कम हो जाती है।
 2. खिलाड़ी के क्रियात्मक प्रदर्शन में कमी आती है।
 3. Plasma और Blood Volume की मात्रा कम हो जाती है।
 4. Aerobic Power कम हो जाती है।
 5. मांसपेशियों में एंथन आने लगती है।
 6. शरीर में कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाती है।
 7. शुगर की मात्रा बढ़ जाती है।

सुझावः-

सभी अच्छे खिलाड़ियों को अपने दम पर ही खेलों में अच्छा प्रदर्शन करना चाहिए। जिससे की देश तथा अपनी नजर में उठ सकें।

1. खिलाड़ी को अच्छा प्रदर्शन करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।
 2. उसे अपने प्रदर्शन में सुधार के लिए अच्छे कोच की सहायता लेनी चाहिए।
 3. खिलाड़ी को हमेशा नशीली चीजों से दूर रहना चाहिए।



शिक्षा : संस्कार एवं संवेदनाएँ

श्री धरनेन्द्र कुमार जैन
कार्योसो लेखाकार

 वृक्ष की पहचान उसके फलों से होती है। इसी संदर्भ में अगर हम आज की शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल नहीं रही है। आज के दौर में हमें एक नई शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है, ऐसी शिक्षा प्रणाली जो वास्तविक जीवन से सम्बन्धित हो।

शिक्षा मात्र शैक्षणिक या सतही ज्ञान वाली नहीं होनी चाहिए। इसका उद्देश्य छात्र को केवल किताबी ज्ञानकारी, ऊसर आचार-विचार या सतही मूल्यों से अवगत कराना ही नहीं होना चाहिये।

सच्ची शिक्षा का अर्थ छात्रों को ऐसे ज्ञान से ओत-प्रोत करने से है जिससे वो भविष्य में जीवन की सच्चाइयों से डटकर मुकाबला कर सके तथा जीवन के रोमांच से सही प्रकार से प्रतियोगिता कर सके।

आधुनिक शिक्षा से बौद्धिक क्षमता का विकास हुआ है लेकिन श्रद्धा, सत्कार एवं आदर का ह्रास हुआ है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जीवन के मूल्यों, सहानुभूति एवं संवेदनाओं, जो जीवन को जोड़ती और सार्थक बनाती है, को कम महत्व देती है तथा अन्य सूक्ष्म एवं मूल्यहीन घटकों को अत्याधिक महत्व देती है तथा भौतिकता को बढ़ावा देती है। संवेदनारहित ज्ञान अच्छाई की अपेक्षा अधिक हानिप्रद है। यह हमें संदेहास्पद एवं दोषदर्शी भी बनाता है।

पुरातन भारत में जिन आदर्शों ने शिक्षा की प्रेरणा दी उन आदर्शों को पुनः अपने शैक्षणिक कार्यक्रम में स्थापित करना होगा तभी हम सभ्यता के विकास को सहयोग तथा मानव जीवन को एक नयी एवं उत्कृष्ट दिशा प्रदान कर सकते हैं।

विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई है, स्नातक-परास्नातक एवं डॉक्टरेट उपाधि धारकों की संख्या में और ज्ञान में भी वृद्धि हुई है, लेकिन क्या आन्तरिक शक्ति, त्याग व अत्यावश्यक महत्वपूर्ण जीवंत मूल्यों एवं संवेदनशीलता में वृद्धि हुई?

क्या हम गहरे मूल्यों के प्रति अधिक प्रशंसनीय हुए जो अकेले ही जीवन को अर्थ एवं महत्व देते हैं? या हम सब इनसे विरक्त हो गये हैं और महान् आदर्शों से अलग होकर हमारे दिल त्याग के गीतों को गुनगुनाना भी भूल गये हैं?

अतः आज हमें एक नई तरह की शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो न केवल मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाये बल्कि एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो तिगुनी शक्ति से हमारे मस्तिष्क के ज्ञान, सुर्कर्म एवं दिल को संवेदना के प्रति सूशिक्षित कर सकें।

चरित्र निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है, आज केवल बौद्धिक ज्ञान में ही सुधार की आवश्यकता नहीं है बल्कि हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो हमें सम्पूर्ण बनाने में सहायता प्रदान करें। शिक्षा का अन्त केवल छात्रवृत्ति प्राप्ति, विद्वत्ता या आर्थिक स्वतंत्रता से नहीं है। अगर स्व-नियन्त्रण या स्व-अनुशासन का अभाव हो तो हमारा असामाजिकता की तरफ भटकना भी सम्भव है जैसा कि आज के युवाओं में बहुतायत से देखा जा रहा है। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिये।

पुरानी भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा अनुशासन एवं भावनात्मक लगाव का अनूठा सम्मिश्रण था। आजकल छात्र ज्ञान को केवल सूचना के रूप में प्राप्त करते हैं, लेकिन प्रशिक्षण में भावनाओं का अभाव होता है।

सच्ची शिक्षा केवल मृत ज्ञान को नहीं कहते, यह उन्मादित, जीवन्त एवं उत्साह से भरा हुआ होना चाहिये। शिक्षा जीवन के अध्यात्म केन्द्र की खोज भी है। शिक्षा एक संस्कृति है जो बौद्धिक एवं शारीरिक अनुशासन के बिना असम्भव है।

शिक्षा का सिद्धान्त आदर्शवाद है तथा ये आदर्श ही हमारे जीवन को वास्तविक रूप प्रदान करते हैं जब तक शिक्षा में इन सबका अभाव रहेगा तब तक शिक्षा अपने आप में परिपूर्ण नहीं कहलायी जा सकती।



Editorial



Dear Readers,

Kaumudi (2016-17) is ready for your kind perusal. I am glad to put on record the unstinted help extended to me by the magazine committee. Without their sincere contribution and co-operation it would have been difficult for me to fulfill the responsibility entrusted by the patron.

Like every college magazine, *Kaumudi* also reflects the standards of academic and extra curricular activities of our students. It also offers an opportunity to the budding talents among students to begin their apprenticeship as would-be-writers. Most of their write ups mirror the issues which are engaging and agitating the minds of the present generation.

This edition of *Kaumudi* contains articles of all hues which have been examined meticulously by the editors concerned. The whole magazine committee has made laudable and commendable efforts towards making this issue presentable and worthwhile. The co-operation and support of our patron, Dr. Rita Sharma deserves special mention.

The different extra-curricular (or should I call them co-curricular) activities and sports events showcased in the magazine add glitz to it and reveal the dazzlingly talented human resource we have. The students of this college use all available opportunities to harness their inner potential to overcome barriers in their progress.

Penchant for sports of our students is apparent from the various sports activities which are held in our college every year. The highspots of this session were the two days, workshop on National Sports Day, Football Tournament and International Yoga Day celebration which were worth a dekko.

Motivated by the "Swachh Bharat Abhiyan" the students of M.A. English, N.S.S and Rovers and Rangers devoted one full week before Diwali to cleanliness. The whole college campus was rigorously nay religiously cleaned. That cleanliness drive is still followed and nobody is allowed to spit or litter on the campus.

After offering their services to our institution for a considerable number of years four stalwarts of our teaching staff are retiring this year, Dr. R.K. Agarwal-Head dept. of Economics, Dr. G.P. Gupta-Head dept of Physics, Dr. R.K. Mittal-Head dept. of Commerce (and ex-officiating Principal) and Dr. U.B. Singh Head dept. of Geography. They will be remembered for their contribution in the field of education specially their respective streams. May God grant them all a long, happy and healthy life so that they continue to guide us for many more years. Shri Rajbir Singh I officiating office superintendent and Mr. Harinder Rao (class IV employee) have also retired. Our best wishes for them also.

We pay our sincere homage to Mr. Raj Kumar (Gardener) who left for his heavenly abode on 6th Nov. 2016. May his soul rest in peace and may God give strength to the bereaved family to bear this irreparable loss.

Due to some unavoidable reason the publishing of the magazine was delayed. At present Dr. S.C. Varshney is the officiating Principal. He was given the charge on 22nd June 2017.

Lastly, I graciously acknowledge the unflinching support meted out by the Principal, the whole teaching and non-teaching staff of the college, especially Mr. Anjul Bhushan, Mr. Anupam Jain, Mr. Rakesh Tyagi and Mr. Satyendra Kumar. And of course all the honourable members of the magazine committee.

Dear readers, the magazine is now in your hands. Please ignore the errors that might have cropped up unwittingly. Your healthy suggestions and reactions will be thankfully acknowledged, and which I am sure can help us a lot in the preparation of ensuing editions of *Kaumudi*!

Dr. Alka Bansal
Chief Editor

कर्म करो फल की इच्छा न करो

सतेन्द्र वर्मा

पूर्व से कहा जाता है कि कर्म करो, फल की इच्छा न करो। ये कथन हम अपने बड़े-बूढ़ों से सुनते आ रहे हैं। ऐसे ही अनेक प्रकार के और भी कथन हैं जो कहने और सुनने में तो अच्छे लगते हैं पर इन पर विचार शायद ही कुछ लोग करते हैं। क्योंकि हम जिस समाज में रहते हैं वहाँ अनेक प्रकार का स्वभाव रखने वाले लोग रहते हैं, जो इन बातों को बोलते हैं पर उन पर विचार कर लोग स्वयं नहीं करते हैं। क्योंकि ये सब बातें या ऐसे ही अनेक उदाहरण हैं जो केवल सामने वाले व्यक्तियों पर अपनी बातों का प्रभाव डालने के लिये बोले जाते हैं।

मैं इस बात को इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि हम जहाँ रहते हैं या कार्य करते हैं वहाँ इन बातों को हमारे सामने बोला जाता है पर जो लोग इन बातों को हमारे समक्ष बोलते हैं वो लोग स्वयं ही इन बातों को नकारते हैं।

कहने का तात्पर्य ये है कि हम जहाँ कार्य करते हैं वहाँ हम लोगों से हमारे द्वारा किये जा रहे कार्य के अलावा अनेक प्रकार के ऐसे कार्य कराये जाते हैं जो वो अन्य लोगों के द्वारा किये जाने चाहिये पर हमें कुछ कार्य तो शर्म में करने पड़ते हैं या फिर कुछ कार्य अपने वरिष्ठ लोगों के सम्मान के लिये करने पड़ते हैं, पर वो लोग इसे हमारी कमजोरी व लाचारी समझते हैं। देखने में ये ही आता है कि हम लोग अपनी क्षमता के आधार पर अधिक कार्य करते हैं और उतना ही हम लोगों का शोषण किया जाता है क्योंकि हम लोगों पर एक ऐसा ठप्पा लगा हुआ है जिसके चलते हम लोगों को अपने कार्य से अतिरिक्त कार्य व अन्य लोगों के कार्य भी करने पड़ते हैं। जब हम लोग अतिरिक्त कार्य के लिए इन्कार करते हैं तो हमें उपदेश स्वरूप ये कहा जाता है कि कर लो आने वाले समय में ये तुम्हारे काम आयेगा पर जिन लोगों का ये कार्य होता है उन लोगों को जरा भी हिचकिचाहट नहीं होती कि ये लोग जो हमारा कार्य कर रहे हैं, इनसे किसी प्रकार की सहानुभूति रखी जाये, वो लोग ये समझते हैं कि हम लोगों को उन्होंने खरीद लिया

अ. काया, सहायक (कम्प्यूटर कायालय) है, क्योंकि हम स्थायी नहीं है। हमारे से भेद-भाव किया जाता है और कुछ तो ये भी बोल देते हैं कि यार कर ले ऊपर वाला देख रहा है। मेरी समझ में ये बात नहीं आती कि ऊपर वाला बस केवल हम लोगों के कार्य करते समय ही देखता है। जब ये लोग हम लोगों से कराते हैं तब ऊपर वाला उन लोगों को नहीं देखता है जो हम लोगों का शोषण करते हैं, इसलिये मुझे वो कथन याद आता है कि 'कर्म किये जा फल की इच्छा ना कर'।

जो व्यक्ति अपने कार्य समय में हम लोगों से 10–20 प्रतिशत भी कार्य कम करते हैं वो लोग हमको ये दिखाते हैं कि हम पता नहीं कितना अधिक कार्य कर रहे हैं, वो लोग शायद ये भूल जाते हैं कि हमारे और उन लोगों के पद में और वेतन में जमीन-आसमान का अन्तर है पर शायद वो लोग उस समय इन्सानियत भूल जाते हैं, वो लोग ये भी नहीं सोचते कि हमारे भी बच्चे हैं कभी न कभी तो वो भी कहीं अच्छे या स्थायी पद पर कार्य करेंगे तब उनके साथ यदि इस प्रकार का व्यवहार उनके वरिष्ठ सहयोगियों द्वारा किया गया तो उनको कैसा लगेगा। मैं तो यहीं सोचता हूँ कि हम तो शर्म या उनके सम्मान के कारण जो कार्य कर देते हैं शायद न तो ये लोग उस तरह कार्य कर पाये या उनके बच्चे इस प्रकार किसी अन्य का कार्य कर पायेंगे और न ही ये लोग अपने बच्चों को ये कहेंगे कि तुम अपने सहयोगियों या वरिष्ठ लोगों का कार्य करो। तब यहीं लोग अपने बच्चों को शिक्षा देंगे कि तुम इसकी शिकायत अपने अधिकारी से करो कि हम जिस पद पर जिस कार्य के लिये नियुक्त किये गये हैं हम केवल अपना कार्य ही करेंगे जिसका हमें वेतन दिया जाता है। लेकिन ये लोग इस समय ये भूल जाते हैं कि हमारे माँ-बाप को भी बुरा लगता होगा कि कम वेतन में अधिक समय कार्य करने पर व एक वेतन में 6–7 विभागों का कार्य करने पर उनको कैसा लगता होगा।

देखने में तो ये भी आता है कि सरकार द्वारा जो भी शासनादेश स्थायी सरकारी कर्मचारियों के लिये जारी



किये जाते हैं उनका लाभ वो लोग स्वयं पा लेते हैं या उसको पाने के लिये ऐसे प्रयास करते हैं जैसे बस इसके बिना उनका कुछ नहीं होगा। इसी प्रकार जब सरकार हम जैसे अस्थायी कर्मचारियों के लिये कोई शासनादेश जारी करती है तो ना तो उसे देखा जाता है और अगर भूलवश ये लोग उसको देख भी लेते हैं तो उसको नजरअन्दाज कर देते हैं, क्यूँ हम लोगों के साथ इस प्रकार का भेद-भाव किया जाता है? क्यूँ हमें हीन भावना से देखा जाता है। सरकार द्वारा जारी किये गये शासनादेश के आधार पर ये अस्थायी कर्मचारियों को क्यूँ लाभ देने में संकोच करते हैं। देखा तो ये भी जाता है कि जो शासनादेश अस्थाई कर्मचारियों को लाभ देने के लिये जारी किये जाते हैं उन लाभों को भी स्थायी कर्मचारियों द्वारा हजम कर लिया जाता है। अन्य विभागों से मिलने वाले पारिश्रमिक को भी स्थायी कर्मचारियों द्वारा हजम कर लिया जाता है। ये सब व्यथा मेरी स्वयं की है जो हमारे साथ हो रहा है। कार्य हमारे से कराया जाता है और उसका भुगतान स्वयं स्थायी कर्मचारी खा जाते हैं, यदि पूछा जाये तो उस बात को या तो बदल देते हैं या ऐसा बताया जाता है कि ये तो उस समय था अब नहीं, पर अब भी वहीं हैं जो पहले था।

कहा जाता है कि शिक्षा सबके लिये समान है शिक्षक सब बच्चों को समान शिक्षा देते हैं जिसके आधार पर कोई अधिकारी बनता है, कोई वरिष्ठ अधिकारी व कोई सरकारी कार्यालयों में कर्मचारी, पर कहीं ये शिक्षा नहीं दी जाती कि किसी अन्य का हक मार कर स्वयं अपना पेट भरा जाये। ये शिक्षा व्यक्ति स्वयं अपने लालच को पूरा करने के लिये प्राप्त करता है। हम लोगों का वेतन इतना है कि चाय, यातायात व अपनी स्वयं की आजीविका का भी पूरा नहीं होता, और इन लोगों का वेतन इतना होता है कि हम लोगों की चार माह के वेतन जितना, पर फिर भी लालच इतना होता है कि पेट नहीं भरता।

क्या इस वक्त उन लोगों को ये याद नहीं रहता कि ये सब भी हमारे जितना या हमसे अधिक कार्य करते हैं, या हम जब इनसे समान कार्य या समान कार्य से अधिक कार्य करा रहे हैं तो इनको भी निर्धारित वेतन के आधार

पर वेतन मिलना चाहिये। कहीं जाति के आधार पर भेदभाव किया जाता है तो कहीं स्थायी और अस्थायी के आधार पर, ये भी देखा जाता है कि यदि कोई अस्थायी अपनी समस्या हम अपने अधिकारी के समक्ष रखते हैं तो हमें बस झूठा आश्वासन दिया जाता है कि हो जायेगा—पर वो हो जायेगा ना तो कभी हमने आते देखा है ना ही कभी वो हो जायेगा का समय आया है।

हर कोई व्यक्ति जीवन में निश्चित समय—सीमा पर कार्य करता है तो हमें बस झूठा आश्वासन दिया जाता है जिससे वह अपने व अपने परिवार का पालन—पोषण करता है पर हम लोगों को तो इतना अधिक वेतन दिया जाता है जिसमें हम अपने आने—जाने व खाने तक के पैसे पूरे नहीं कर पाते तो परिवार का पालन—पोषण किस प्रकार होगा—ये बात अगर इस सबको पढ़ने वाले की समझ में आ जाये तो कृपया कर मुझे उस बात से जरूर अवगत कराया जाये कि जो कार्य 20–30 हजार वेतन वाले का परिवार नहीं चला सकता या जो कार्य 1–1.5 लाख वेतन पाने वाले व्यक्ति का परिवार का पालन—पोषण नहीं कर सकता, तो हम जैसे 5–7 हजार पाने वाले लोगों का स्वयं का व परिवार का पालन—पोषण किस प्रकार होता होगा। महंगाई इतनी अधिक बढ़ गई है कि रिक्षा वाला पिछले वर्षों में कहीं जाने के रु. 10 लिया करता था आज वो उसी जगह पर जाने के 30–40 रुपये लेता है और हम लोग वहीं पड़े हैं क्योंकि हम लोगों के वेतन में मात्र 1000 रुपये की बढ़ोत्तरी वर्षों बाद हुई है जबकि स्थायी कर्मचारियों के वेतन में साल में दो बार डी.ए.लगता है।

जब सरकार द्वारा मजदूरी दर 350 रु. प्रति दिन की दर से तय की गयी है, तो क्या किसी सरकारी संस्थान में अस्थायी रूप से कार्य कर रहे कार्यालय सहायक का स्थान उनसे भी नीचा है जो उनको 200–250 रुपये प्रतिदिन की दर से दिये जाते हैं।

क्या हम लोगों के लिये किसी के पास सोचने का वक्त नहीं है या कोई इस तरह सोचना नहीं चाहता है।

हम लोग तो ये देख रहे हैं कि कर्म किये जा फल की इच्छा न कर, ये बात यहाँ सत्य प्रतीत हो रही है, क्योंकि कर्म हम कर रहे हैं और फल कोई और ही खा

रहा है।

मैं तो बस यही कहना चाहता हूँ कि यदि किसी के सम्मान को रखने के लिये हम लोग अतिरिक्त कार्य करते हैं तो उसे हमारी लाचारी या कमजारे न समझा जाये, हो सकता है भगवान हमसे ज्यादा उन लोगों की परीक्षा ले रहा हो, कि कब तक तू इन लोगों के साथ अन्याय करेगा। क्योंकि कहते हैं ना कि भगवान जब मारता है तो उसकी लाठी में आवाज नहीं होती पर दर्द बहुत होता है, और वो दर्द इतना असहनीय होता है कि इन्सान बता तो सकता नहीं पर उसे महसूस किया जा

सकता है।

कहते हैं कि सच हमेशा कड़वा होता है तो हो सकता है मेरा ये लिखा हुआ भी काफी लोगों को परेशान करे या मुझे ये बोला जाये कि तूने ये क्यूँ लिखा और किसके लिये लिखा, पर मैं ये कहना चाहता हूँ कि हम लोग स्वतन्त्र भारत के स्वतन्त्र नागरिक सबको कहने का पूरा हक है तो मैं अपनी बात को लोगों को और जो हमारा शोषण कर रहे हैं उनको समझाना चाहता हूँ कि ऐसा करना भगवान को भी बुरा लगता है।



वृक्ष की चेतावनी (वृक्ष लगाओ)

માટે

ओ मानव तू सोच जरा
क्यों मुझे काटने आया है।
मैंने हर दम धरती को
मानव का स्वर्ग बनाया है।
वृक्ष अगर यूँ ही काटे तो
धरती बंजर हो जायेगी।
कैसे भूख मिटायेगा तू
दुनिया फिर क्या खायेगी।
तेरा जीवन इसी धरती पर
एक बोझ बन जाएगा।
अभी समय है फिर संभल जा
वरना फिर पछतायेगा।



कौगुही

2016-17

संस्कृत-प्रखण्ड

सरस्वती-वर्षाणा

या कुन्दे न्दुतुषारहारधवला
या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा
या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभिर्
देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती
निःशेषजाङ्ग्यापहा।

सम्पादकः

डा. विजयलक्ष्मीः

छात्र-सम्पादकः

राहुल कुमार

अनुक्रमणिका

संस्कृत-प्रखण्ड

1	अभिज्ञानशाकुन्तले उपमालंकारस्य उदाहरणानि	75
2	अभिज्ञानशाकुन्तले अर्थान्तरन्यासालंकारस्य उदाहरणानि	77
3	कादम्बर्या : कथामुखे कृतान्त – प्रयोगः	78
4	आचार्यदण्डमते कथायाः आख्यायिकायाश्च स्वरूपम्	81
5	व्याससुभाषितरत्नानि	83
6	अव्ययीभाव समासस्य उदाहरणानि	85
7	गर्भस्थशिशोः प्रतिज्ञा	87
8	यस्यायाऽनुमते गतः	88
9	मौनगुणवैशिष्ट्यम्	90
10	सत्यपरीक्षणनिकष्टम्	91
11	सुभाषितप्रशंसा	92
12	महाकविकालिदासस्य प्रतिचित्रणम्	94
13	भारतीयसंस्थानानां ध्येयवाक्यानि	95
14	महाकाव्यस्य स्वरूपम्	96
15	गरुडपुराणे दार्शनिकचिन्तनम्	98
16	विदुरनीतिरनुसारं मूर्खलक्षणानि	104
17	विदुरनीतिरनुसारं	104

9. कृत्योर्भिन्नदेशत्वादद्वैयी भवती मे मनः ।
पुरः प्रतिहतं शैले स्तोतः स्तोतोवहो यथा ॥

अत्र श्रौती उपमालङ्कारः:

10. क्षामकापोलमाननमुरः काठिन्यमुक्तस्तनं
मध्यः क्लानततरः प्रकामविनतावंशौ छविः पाण्डुरा ॥
शोच्या च प्रियदर्शना च मदनक्लिष्टेयमालक्ष्यते
पत्राणामिवं शोषणेन मरुता स्फृष्टा लता माधवी ॥

अस्मिन् पदे उपमालङ्कारः:

11. स्मर एव तापहेतुर्निर्वपियिता स एव मे जातः ।
दिवस इवाभ्रश्यामस्तपात्यये जीवलोकस्य ॥

अत्र उपमालङ्कारः:

12. इदमनन्यपरायण मन्यथ
हृदय संनिहिते हृदयं मम् ।
यदि समर्थयसे मदिरेक्षणे ।
मदनबाणहतोऽस्मि हतः पुनः ॥

अत्र उपमालङ्कारः:

13. विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि स
न्कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ॥

अस्मिन् पदे श्रौती उपमालङ्कारः:

14. भानुः सकृद्युक्ततुरङ्गः एव
रात्रिदिवं गन्धवहः प्रयाति ।
शेषः सदैवाहित भूमिभारः
षष्ठाशं वृत्तेरति धर्म एषः ॥

प्रतिवस्तूपमालङ्कारः:

15. अपरिक्षत कोमलस्य याव
कुसुमस्येव नवस्य षट्पदेन
अधरस्य विपासता मया ते
सदयं सुन्दरि गृह्णते रसोऽस्य ॥

अत्र उपमालङ्कारः:

16. प्रजाः प्रजाः स्व इव तन्त्रयित्वा
निषेवतेऽशान्तमना विविक्तम्
यूथानि संचार्य रविप्रतप्तः
शीतं दिवा स्थानामिव द्विपेन्द्र ॥

अस्मिन् पदे उपमालङ्कारः:

17. अभ्वतमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तम्
बद्धमिव स्वैरगतिर्जनमिह सुखसङ्ग्नवैमि ॥

अस्मिन् पदे मालोपमालङ्कारः:

18. का स्विदवगुण्ठनवती नातिपरिस्फुट शरीर लावण्या ।
मध्ये तपोधनानां किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम् ॥

अत्र उपमालङ्कारः:

19. इदमुपनतमेवं रूपमक्लिष्ट कान्ति
प्रथमपरिगृहीतं स्यान्न वेति व्यवस्यन् ।
भ्रमर इव विभाते कुन्दमन्तस्तुषारं
न च खलु परिभोक्तुं नैव शक्नोमि हातुम् ॥

अस्मिन् पदे उपमालङ्कारः:

20. संरोपितेऽप्यात्मनि धर्मपत्नी
त्यक्ता मया नाम कुलप्रतिष्ठा ।
कल्पिष्यमाणा महते फलाय
वंसुधरा काल इवोपत्तबीजा ॥

अत्र श्रौतो उपमालङ्कारः:



विद्यामूर्ति नन्दनी

कौमुदी 2016–2017 नं. 1

अभिज्ञानशाकुन्तले अर्थान्तरन्यासालंकारस्य उदाहरणानि

अपर्णा शर्मा

एम.ए. प्रथम वर्षम्

आचार्यममटानुसारं अर्थान्तरन्यासा-
लंकार स्य लक्षणम्—
सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते ।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येण तरेण वा ॥

आचार्यो विश्वनाथः साहित्यदर्पणे अस्य अलंकारस्य
परिभाषां कुर्वन् कथयति—
सामान्यं वा विशेषेण विशेषस्तेन वा यदि ।
कार्यं च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते ॥
साधर्म्येण तरेण आर्थान्तरन्यासोऽष्टधा ततः ॥

1. आ परितोषादिदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥
अत्र अर्थान्तरन्यासलंङ्कारः
2. शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः
फलभिहास्य ।

अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ॥
3. सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हिमधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥
4. अयं स ते तिष्ठति संगमोत्सुको
विशङ्कसे भीरु यतोऽवधीरणाम् ।
लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं

श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत् ॥
5. अन्तर्हिते शशिनी सैव कुमुदती मे
दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा ।
इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि ॥

6. एषाषि प्रियेण विना ममयति रजनीं विषाददीर्घतराम् ।
गुर्वापि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति ॥
7. शुश्रूषस्व गुरुन्कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपलीजने
भर्तुविप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः ।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ॥
8. भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमै—
र्नवाम्बुर्भिर्दूरविलम्बिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥
9. स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु
संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः ।
प्रागन्तरिक्षगमनात्स्वमपत्यजात-
मन्येर्द्विजैः परभूताः खलु पोषयन्ति ॥
10. तदेषा भवतः कान्ता त्यज वैनां गृहाण वा ।
उपपन्ना हिदारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी ॥
11. कुमुदान्येव शशाङ्कः सविता बोधयति पङ्कजान्येव ।
वशिनां हि परिपरग्रहसंश्लेषपराङ्मुखी वृत्तिः ॥
12. सहजं किल यद्विनिन्दितं न खलु तत्कर्म विवर्जनीयम् ।
पशुमारणकर्मदारणोऽनुकम्पामृदुरेव श्रोत्रियः ॥
13. मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा ।
पूर्वावधीरितं श्रेयो दुखं हि परिवर्तते ॥
14. सुतनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु
किमपि मनसः संमोहो मे तदा बलवानभूत् ।
प्रबलतमसामेवं प्रायाः शुभेषु प्रवृत्तयः
स्त्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया ॥



कादम्बर्या: कथामुखे वतान्त - प्रयोगः

नेहा रानी

एम.ए. प्रथम वर्षम्

अभ्युपागता - स्फुरत्कलालापविलासकोमला
करोति राग हृदि कौतूकाधिकम् ।

रसेन शश्यां स्वयमभ्युपागता

कथा जनस्याभिनवा वधुरिव ॥

प्रमृष्टः—सरस्वतीपाणि सरोजसम्पूट—

प्रमुष्ट होमश्रमशीकराम्भसः ।

यशोऽशशक्लीकृत सप्तविष्ट्या-

-ततः सुतो बाण इति व्यजायत ॥

अलब्धः, मुग्धा — द्विजेन तेनाक्षतकण्डकौण्ठय्‌या

महामनोमोहमलीमसान्धया

अलब्धवैदग्ध्यविलासमुग्धया

धिया निबद्धेयमतिद्युयी कथा ॥

सम्भर्चितः—आसीदशेषनरपतिशिरः **सम्भर्चितशासनः** पाकशासन इवापरः

निर्भिन्नः, अतिक्रान्तः—नामैव योनिर्भिन्नारातिहृदयो विरचितनारसिंहरुपाडम्बरम्, एकविक्रमाक्रान्तसकलभुवनतलो विक्रमत्रयायासितभुवनत्रयं च जहासेव वासुदेवम्। अतिचिरकाललग्नमतिक्रान्तकुनृपतिसहस्रसंपर्ककलङ्कमिव क्षालयन्ती विमले कृपाणधाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मीः।

स्निग्धः, परिवृत्तः—अमरगुरुमपि प्रज्ञयोपहसद्विरनेककुल क्रमागतैरसकृदालोचितनीतिशास्त्र निर्मलमनोभिरलुब्धैः
स्निग्धैः प्रबूद्धैश्चामात्यैः परिवृतः।

अवदलितः— अतिकठिनपीवरस्कन्धोरुबाहुभिरसकृदवदलितस मदरिपुगजघटापीठबन्धैः केसरिकिशोरकैरिव
विक्रमैकरसैरपि विनयव्यवहारिभिरात्मनः प्रतिबिम्बबैरिव राजपत्रैः सहरममाणः प्रथमे वयसि सुखमतिचिर मुवास ।

निषणः— अवलम्बितस्थूलमुक्ताकलापस्य कनकशृङ्खालानियमितमणिदण्डकाचतुष्टयस्य
गगनसिन्धुफेनपटलपाण्डुरस्य नातिमहतो दक्कलवितानस्याधस्तादिन्दकान्तपर्यङ्गिकानिषणम् ।

वेष्टितः— अतिचपलराजलक्ष्मीबन्धनिगडकटकशंड्हामुपजनयतेन्द्रमणिकेयूरयुगमेन मलयजरसगन्धलुब्धेन भुजङ्घद्वयेनेव
वेष्टित बाहयगलम ईषदालम्बिकर्णोत्पलम्, उन्नतघोणम उत्फल्लपृण्डरीकनेत्रम्।

निषण्णम् – एकदेशस्थितमपि व्याप्तभुवनमण्डलम् आसने स्थितमपि धनुषि **निषण्णम्**।

अधिष्ठितः – अवनिपतिस्तु ‘दूरादालोकय’ इत्यभिधाय प्रतीहार्या निर्दिश्यमानां तां वयः परिणामशुभ्रशिरसा रक्तराजीवनेत्रोपाङ्गे नानवरतकृतव्यायामत्तया यौवनापगमेष्यशिथिलशरीरसन्धिना सत्यपि मातङ्गत्वे नातिनशंसाकृतिनानुगृहीतार्य वेषेण शुभ्रवाससा पुरुषेणाधिष्ठितपुरोभागाम् ।

अवच्छन्नः, अवसक्तम् — गुल्फावलम्बिनीलकञ्चुकेनावच्छन्नशरीराम्, उपरिक्तांशुकरचितावगुण्ठनाम्, नीलोत्पलस्थलीमिव निपतितसन्ध्यातपाम् एककर्णावसक्तदन्तपत्रप्रभाधवलितकपोलमण्डलाम्, उद्युदिन्दुकिरणच्छुरितमुखीमिव विभावरीम्।

सक्रान्तः — आकपिलगोरोचनारचित तिलकतृतीय लोचनामीशानरचितानुरचितकिरातवेशामिव भवानीम् उरः स्थलनिवाससक्रान्तनारायण देह प्रभाश्यामलितामिव श्रियम् ।

उपारुढ़ – यक्षाधिपलक्ष्मीमिवालकोदभासिनीम् अचिरोपारुढयौवनाम् अतिशयरुपाकृतिम् निमिषलोचनो दर्दश ।

समुपजातः, अक्लिष्टता – समुपजातविस्मयास्याभून्मनसि महीपतेः – ‘अहो विधातुरस्थाने सौन्दर्यनिष्पादनप्रयत्नः। मन्ये च मातङ्गजाति स्पर्श दोषभयादस्पृश्यतेयमुत्पादिता प्रजापतिना, अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य ।

परिवृतः, समुपाहृत — कतिपयाप्त राजपुत्रपरिवृतो नरपतिरभ्यन्तरं प्राविशत्। अपनीताभरणश्च दिवसकर इव विगलितकिरणजालः चन्द्रतारकासमूहशून्य इव गमनाभोगः समुपाहृतसमुचितव्यायामोपकरणं व्यायामभूमिमयासीत्।

अवतीर्णः, समुत्क्षप्तः – अवतीर्णस्य जलद्रोणी वारविलासिनीकरमृदितसुगन्धामलकल्पित शिरसो राज्ञः परित्समुपतस्थुंशुकनिबिडनिबद्धस्तनपरिकराः दूरसमुत्सारितवलयबाहुलताः, **समुत्क्षप्तकर्णभरणाः** कर्णोत्सङ्गेत्सारितालकाः गृहीतजलकलशाः स्नानार्थमभिषेकदेवता इव वारयोषित ।

विन्यस्तः, आक्षिप्तः — काश्चत्कलशोत्क्षेपश्रमस्वेदार्दशरीरा जलदेवता इव स्फटिकैः कलशैस्तीर्थजलेन कञ्जन्मलयसरित इव चन्दनरसमिश्रेण सलिलेन, काश्चतुत्क्षप्तकलश पाश्वविन्यस्त हस्तपल्लवाः प्रकीर्यमाणनखमयूखजाल काः प्रत्यङ्गुलिविवरविनिर्गत जलधाराः सलिलयन्त्रदेवता इव, काश्चज्जाद्यमपनेतुमाक्षिप्त बालातपेनेव दिवसश्रिय इव ।

छनः, उषितम् – आवेदयतुः भवानादितः प्रभृति कात्म्येनात्मनो जन्म कस्मिन्देशे, भवान्कथं जातः, केन वा नाम कृतम्, कात माता, कस्य पिता, कथं वेदानामागमः, कथं शास्त्राणां परिचयः कुतः, कला आसादिताः’ किं हेतुकं जन्मानतरनुस्मरणम्, उत वरप्रदानम्, अथवा विहङ्गवेषधारी कश्च्छन्न निवससि, क्व वा पूर्वमुषितम्, कियद्वा वयः।

पृष्ठः, मृदितः — वैशम्पायनस्तु स्वयमुपाजातकूतहलेन सबहुमानवमवनिपतिना पृष्ठो मुहूर्तमिव ध्यात्वा सादरमब्रवीत्
 - ‘देव, महतीयं कथा। यदि कौतुकमाकर्ण्यताम् करिकलभकरमृदितमालकिसलयामोदिनी, मधुमदोपरक्त
 केरलीकपोलच्छविना संचरद्वन्देवताचारणालक्तकरसरज्जितनेव पल्लवचयेन संच्चादिता।

अवनद्वः — पथिकजनरचितलवङ्गपल्लवसंस्तरैरति कठोरनालिकेरकेतकीकरीबकुलपरिगत प्रान्तस्ताम्बूली लतावनद्वपूगखण्डमण्डतैर्वनलक्ष्मीवासभवनैरिव विराजिता लतामण्डपैः।

अधिष्ठिता — प्रताधिपनगरीव सदसंनिहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च ।

समत्खातः — क्वचित्प्रलयवेलेव महावराहृदंष्ट्रासमत्खातधरणिमण्डला ।

उत्सृष्टः, निशितः — यत्र च दशरथवचनमनुपायन्तुसृष्टराज्यां दशवदनलक्ष्मीविभ्रमविरामो रामो महामुनिमगस्त्यमनुचरन्त्सह सीतया लक्ष्मणोपरचितरुचिरपर्णशालः पञ्चवट्यां कंचित्कालं सुखमुवास । यत्र च दशरथ सुतनिश्चतशरनिकरनिपातनिहतरजनीचरवल बहलरुधिरसिक्त मूलमद्यापि तद्रागाविद्धनिर्गतपलाशमिवाभाति नवकिसलयमरण्यम् ।

अवस्थादेशः — अतिपरिणतवयाश्च कुशचीरानुकारिणीमल्पावशिष्टजीणपिच्छजालजर्जरामवस्थादेश शिथिलामपगतोत्पतनसंस्कारां पक्षसन्ततिमुदवहन् उपारुढकम्पतया सन्तापकारिणीमङ्गलग्नां जरामिव विधुन्वन् अकठेर शोफालिकाकुसुमनालपिज्जरेण कलममञ्जरीदलनमसृणितक्षीणोपान्तलेखेन स्फुटिताग्रकोटिना चञ्चुपुटेन परनीडपतिताभ्यः शालिबल्लरीभ्यस्तण्डुलकणानादायादाय तरुमूलनिपतितानि च शुककुलावदलितानि फलशकलानि समाहृत्य परिभ्रमितुमशक्तो महामदात् । प्रतिदिवसमात्मना च मदुपमुक्तशेषमकरोदशनम् ।

अवहितैः — चमरीपङ्कितरियमनुगम्यताम् उच्छृष्टमृगकरीषपांसुला त्वरितरमध्यास्यतामियं वनस्थली, तरुशिखरमारुद्धताम्, आलोक्यतां दिगियम्, आकर्ण्यतामियं शब्दः, गृह्यतां धनुः, अवहितैः स्थीयताम्, विमुच्यतां श्वानः इत्यन्योन्यमभिवदतो मग्यासक्तस्य महतो जनसमहस्य तरुगहनान्तरितविग्रहस्य क्षोभितकाननं कोलाहलम् शणवम् ।

स्तमितता – अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् मृगयाकलकले निवृष्टमूकजलधरवृद्धानुकारिणी मथनावसानोपशान्तवारिणी सागर इव स्तमितामुपगत कानने, मन्दीभृतभयोऽहमुपजातकृतहलः।

विप्रकीर्णः — अवतीर्य च स तेन समयेन क्षितिलविप्रकीर्णान् संह्यात्य तान् शुकशिशूनकलतापाशसंयतानाबध्य पर्णपूटेऽतित्वरितगमनः सेनापतिगतेनैव वर्त्मना तामेव दिशमगच्छत् ।

सोढः— अहो! सोढपितमरणशोकदारुणं येन मया जीव्यते, उपकृतमपि नापेक्ष्यते खलं हि खल् मे हृदयम्।

परीतः — स्कन्धदेशावलम्बिना कष्णाजिनने नीलपाण्डुभासातपस्तष्णा निपीतेनान्तनिष्पत्ता धमपटलेनेव परीतमृतिः ।

समुपोद्धः — शनैः शनैश्च दूरोदिते भवति हिमस्रति सुधाधूलिपटलेनेव धवलीकृते चन्द्रातपेन जगति, अवश्यायजलबिन्दुमन्दगतिषु विघटमानकुमुदवन कषायपरिमलेषु **समुपोद्धनिद्राभरालसतारकैरन्योन्यग्रथितपक्ष** पुटैरारब्धरोमन्थमुखैः सुखासीनैराश्रममृगैरभिनन्दितागमनेषु ।



आचार्यद्विषमते कथायाः
आख्यायिकायाश्च स्वरूपम्

तुषार वर्मा

एम.ए. प्रथम वर्षम्

संस्कृतगद्यसाहित्ये आख्यायिका कथा च नामा काव्यस्य विधाद्युयं प्राचीनकालादेव प्रचलितमस्ति।

दण्डनः पूर्ववर्त्तिनः आचार्याः कथां आख्यायिकां च गद्यसाहित्यस्य स्वतन्त्रो विधिरिति मन्यन्ते स्म।

पूर्ववर्तिषु आचार्येषु केवलं भामहस्य “काव्यालङ्कारः” एव अद्य अस्माकं पाश्वे उपलब्धं ग्रन्थोऽस्ति।

काव्यालङ्कारे आख्यायिकायाः लक्षणं एवं प्रकारेण लिखितमस्त-

संस्कृतानाकूलश्रव्य शब्दार्थपदवत्तिता ।

गद्येन युक्तोदात्तार्था सोच्छवासाख्यायिका मता ॥

वृत्तमाख्यते तस्यां नायकेन स्वचेष्टितम् ।

वक्त्रं चापवक्त्रं च काले भव्यर्थं शंसि च ॥

कवेरभिप्रायकृतैः कथनैः कैश्चदङ्किता ।

कन्याहरण सङ्ग्रामविप्रलभ्मोदयान्विता ॥

अथ भामहकृत कथा लक्षणे दृष्टिपातं कर्वन्त् –

न वक्त्रापवक्त्राभ्यां यक्ता नोच्छवसवत्युपि ।

संस्कृताऽसंस्कृतचेष्टा कथाप्रभंशभावतथा ॥

अन्यैः स्वरचितं तस्यां नायकेन त नोच्यते ।

स्वगणविष्कतिम् कर्यादभिजातः कथं जनः ॥

उपर्युक्तानि सर्वाणि लक्षणानि विद्वत्समुदायेषु बहुमतानि न सन्ति । कापि रचना संस्कृतेन प्राकृतेन अपभ्रंशेन वा स्यात् अनेन का ह्वानिः को लाभश्च ?

तत्र वक्त्रापवक्त्रछन्दसां स्थितिरपि तथैव भवति । प्रथमस्तु गद्यकाव्ये पद्यस्य कापि सार्थकता न अस्ति विशेषतः तदा यदा तत् (पद्यम्) काव्ये अतिविरलं तया स्थितम् । अपि च यदि तत् पद्यम् केवलं भाविनां घटनानां कृते एव सूचनार्थं प्रयुक्तं भवेत् । तथैव कथानकस्य विभाजनम् उच्छ्वासेषु प्रायशो भवेत्, न भवेत् वा तस्य निरन्तरं कथनं भवेत् खण्डेषु वा विभाजनं भवेत् चेत् तत्र किमन्तरम् ?

एकः अन्तिमः भेदः एव अल्पमहत्वस्य अस्ति । तच्चायम् यदि नायकः स्वयमेव स्वकथां कथयति तत्र च उत्तमपुरुषस्य प्रयोगेण तस्यां कथायां अधिकं चारुत्वं सम्प्रत्ययते । तत्र कथायाम् अपरश्चेत् वक्ता तदा नाटकापेक्ष्या तत्र उदासीनतायाः प्रतीतिर्जायते कथायाः स्वरूपनिरूपणप्रस्तावे भामहेन एका विचित्रा वार्ता कथिता । सा वार्ता इयमसित यत् कथायां नायकः स्वयं स्वचरितं न वदति यतेहि कोऽपि कुलीनः जनः स्वगुणानां व्यापाराणाऽच्च स्वयमेव कथं कथनं कुर्यात् । स्वगुणवर्णने तु तस्मिन् आत्मश्लाघायाः दोष आगमिष्यति । येन तस्य कुलीनता दृषिता भविष्यति ।



अद्यपि उपन्यासः अनेकरूपेषु लिख्यते । कदाचित् लेखकाः स्वयं द्रष्टारूपेण कथां कथयति । कदाचित् किमपि पात्रं उत्तमपुरुषे कथां कथयति । कदाचित् सम्पूर्णामेव कथां कश्चिदन्यः एव कथयति । एवं आचार्यदण्डी आख्यायिकायाः कथायाश्चमध्ये कोऽपि भेदकतत्त्वं न पश्यति । एकस्याः एव जात्याः भेदद्वयम् कथा आख्यायिका च इति तेषां मतम् । शेष खण्ड कथा परिकथा प्रभृतयः आख्यानजातयः तस्मिन्नेव भेदे अन्तर्भूताः भवन्ति ।

तत्कथा ११ ख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञा द्वयाङ्किता ।

अन्नैवान्तर्भविष्यन्ति शेषाश्चाख्यान जातयः ॥

वस्तुतस्तु उभे एव गद्य-काव्यस्य द्वौ भेदौ स्तः; यत्र एकस्मिन् कथानामके भेदे तु कथावस्तु कंविकलिपतं भवति । आख्यायिका च सदाशायाश्रिता भवति । यथा अधुनाकाले ऐतिहासिक-सामाजिक-आञ्चलिक पृष्ठभूमिमादाय लिखितान् विविध कथाग्रन्थान् उपन्यासः नाम्ना परिचिन्नन्ति । तथैव भिन्नाधारान् आधारीकृत्य कृतानां कथाकाव्यानामन्तर्भावः “कथा” इत्यभिधेये काव्यप्रकारे एव भवितुमर्हति । आख्यायिका नाम्नी काव्यविधा केवलं संस्कृतेनैव लिख्यते स्म । अद्यत्वेऽपि अनेकाः संस्कृतकथाः लिख्यन्ते लेखकैः; तत्र आधुनिका अपि विषयाः कथासु विचारिताः भवन्ति । काले-काले संस्कृतकथा प्रतियोगिताः अपि आयोज्यन्ते ।

अन्यभाषाणामपि अनेके काव्यग्रन्थाः कथानाम्नैव लिखिताः लेखकैः यथा पृथ्वीराजरासो-कीर्तिलता-पद्मावत रामचरितमानसादयः ।

एवं अपभ्रंशकालेन कथा काव्यस्य रचना गद्येन पद्येन च अभवत् । अतः दण्डना कथायाः विशेष महत्त्वं स्वीकुर्वता आख्यायिका कथायाः एका अपराजातिरेव स्वीकृता ।

सत्संगतिफलम्—

सन्तप्तायसि संस्थितस्य पयसः नामापि न श्रूयते,
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते ।
स्वात्यां सागरशुक्तिसंपुट्गत तन्मौक्तिकं जायते,
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणाः संसर्गतो देहिनाम् ॥

असतां सङ्गपङ्केन यन्मनो मलिनीकृतम् ।
तन्मेऽद्य निर्मलीभूतं साधुसम्बन्धवारिणा ॥



व्याससुभाषितरत्नानि

‘योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः’ कः योगः ?
चित्तवृत्तीनां निरोधः योगः ।
योगदर्शनोपवने बहुनि शुचीनि सुरभीणि

गुणाभितानि योग युक्तानि सूक्तिकुसुमानि सन्ति ।
 यान्युच्चत्वं वयं सतां कर्णपुलिनेष्ववतंसनं कर्तुं शक्तुम् इति
 विचार्य ह्यत्र महर्षि पतञ्जलि प्रणम्य सूक्तिरसपानं
 कर्त्तमद्यताः । योगदर्शनस्य प्रथमे पादे अभिहितम्—

‘पञ्चपर्वा भवत्यविद्या ।’

सेयमविधा भवति पञ्चपर्वा। पर्व इति भेदः।
 अविद्यायाः पञ्च भेदाः सन्ति-अविद्या, अस्मिता, रागः,
 द्रेषः, अभिनिवेशः। एते पञ्चक्लेशा एवं अविद्यायाः
 पञ्चपर्वा इति।

व्यासभाष्ये निर्दिष्टम् यत् चित्त नदी उभयतोवाहिनी
 भवति । सांसारिकाः नद्यस्तु एकतोवाहिन्यो भवन्ति परं
 चित्तनदी विचित्रा । इयं काल्याणाय पापाय च उभयदिशि
 प्रवहति । अतः ‘योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः’ इत्यत्र यः निरोधः
 प्रोक्तः तत् तु केवलं प्रवाहान्तरम् । पापाद् विरम्य पुण्यं प्रति
 गमनम् । अत एवोच्यते महषिणा—

‘चित्तनदी नामोभयतोवाहिनी,
वहति कल्याणाय वहति पापायच ।’

श्रद्धा-चेतसः संप्रसादः इत्यभिधीयते । चित्तस्य
प्रसन्नता रागादिशून्यत्वं श्रद्धानाम्नाभिधीयते । श्रद्धाविषये
महर्षिणोक्तम्-

‘सा हि जननीव कल्याणी योगिनं पाति ।’

परमार्थतस्तु रागद्वेषवियक्तः चित्त एव श्रद्धायः ।

यथा माता कल्याणी भवति रक्षति च पत्रं तथैव चित्तस्य

रूपाली जवासिया

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

प्रसन्नता रागादिशून्यता योगिनं रक्षति । रागादिशून्यता एव
जननीव कल्याणी । अत एव रागादिशून्यत्वमेव करणीयं
चित्रम् ।

ईश्वर विषये व्यासभाष्ये लिखतम्-यथा मुक्तस्य पूर्वा
 बन्धकोटिः प्रज्ञायते नैग्मीश्वरस्य। यथा वा
 प्रकृतिलीनस्योत्तरा बन्धकोटिः संभाव्यते नैवमीश्वरस्य।
 अत एवोच्यते-

‘स तु सदैव मक्तः सदैवेश्वर इति ।’

तस्य बन्धनं कदापि न भवति । स कदापि शरीरधारणं न
करोति । तस्य कदापि अवतारे न भवति । स तु
सच्चिदानन्दादिलक्षणयुक्तः, गुणकर्मस्वभावाश्च यस्य
पवित्राः सर्वज्ञो निराकारः सर्वव्यापकः अजन्मा अनन्तः
सर्वशक्तिमान् दयालुः न्यायकारी सकलसृष्टः कर्ता धर्ता
हर्ता च सकलजीवानां कर्मानुरूपं सत्यन्यायेन
फलदातृत्वादिलक्षणयुक्तश्च वर्तते । स कथं बन्धने आगन्तुं
शक्यते ।

परमात्मा कथमवाप्यते इति जिज्ञासायामच्यते—

‘स्वाध्याययोगसम्पत्तया परमात्मा प्रकाशते ।’

कः स्वाध्यायः=प्रणवजपः ‘ओ३म्’ जपः। कश्च
योगः-

योगश्चत्तवृत्तिनिरोधः। अतः चित्तवृत्तिनिरोधपूर्वैव प्रणवजपेन परमात्मा प्रकाशते योगिनां हृदि।

संसारेऽस्मिन् यान्यपि दुःखानि सन्ति, तानि सर्वाणि
त्रिषु दुःखेषु परिगणितानि एवं जगति दुखत्रयं मस्ति।
व्यासभाष्ये लिखितम्-

‘दःखमाध्यात्मिकमाधिभौतिकमाधिदैविकं च।’

आध्यात्मिकं दुःखम्-मनसि शरीरे जायमाना
 अविद्यारागद्वेषमौर्ख्यज्वरकष्टादयः। आधिभौतिकम्-
 भूतेभ्यः शत्रुन्याद्रसर्पादिभ्यः समुत्पद्यमानम्। आधिदैविकम्-
 -वृष्टिशीतोष्णादीनामाधिक्येभ्यो मनस इन्द्रियाणामशान्तिः
 चाज्ज्वल्यञ्च ।

दुःखस्य परिभाषा एवमुक्तं व्यासर्षिणा-
 'येनाभिहताः प्राणिनस्तदुपघाताय प्रयतन्ते तद् दुःखम् ।'
 चित्त व्यापारः विवेकख्यातिपर्यन्तमेव भवति ।
 विवेकख्याते: सिद्धे सति चित्तस्य सर्वे व्यापाराः विरमन्ते ।
 व्यासमुनिनोक्तम्-

विपर्ययो मिथ्याज्ञानम् । मिथ्याज्ञानमेव संसारस्य
कारणम् । विपर्यये क्षीणे सति जन्ममरणचक्रं स्वयमेव
क्षीयते । व्याहियते चास्मिन् विषये मुनिना व्यासेन-

‘न हि क्षीणविपर्ययः कश्चित्केनचित्कवचिज्जातो
दश्यते ।’

यदा योगिनः - प्राप्तं प्रापणीयं, क्षीणाः क्षेतव्याः
 क्लेशाः, छिन्नः शिलष्टपर्वा भवसंक्रम-ईदृशी अवस्था
 जायते ईदृशं ज्ञानं जन्यते तदैव मुक्तिः। साध्विदं निर्दिश्यते-

वस्तुतः ‘ज्ञानवैराग्ये केनातिशास्येती’ एव पातञ्जल-योगदर्शनस्य व्यासभाष्यमनुशील्यते चेत् तर्हि-दृग्गोचर-तामायाति यत् बहूनि सुभाषितरत्नानि संसारचक्रमबोधयन्ति । संसारमविज्ञाय कथं वैराग्यं भवेत् । षडरं संसारचक्रं यथा-

‘धर्मधर्मों सुखदुःखे रागद्वेषाविति प्रवृत्तमिदं षडरं
संसारचक्रम् ।’

व्यासेनोक्तं यत् अग्रेसराः भवन्तु। पथप्रशस्तो
भविष्यति। पदमेकोनैव लक्ष्यं प्रवर्त्यते। परं
पदमेकमाचरणीयम् अवश्यमेव। योग एव योगस्य
उपाध्यायः। अत एवोक्तर-

‘योगेन योगो ज्ञातव्यः।’

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादाततपसो वाप्यलिङ्गात्

एतैरूपायैर्यते यस्त विद्वान् तस्यैष आत्मा विश्वे ब्रह्मधाम ।

મુણ્ડકોપનિષદ્ (3.2.4)

यदृदूरं यदुदुराराध्यं यच्च दूरे व्यवस्थितम् ।
तत्सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम् ॥



अव्ययीभाव समासस्य उदाहरणानि

नीरज

एम.ए. चतुर्थ वर्षम्

सामासिकपदम्	लौकिकविग्रहः	आलौकिकविग्रहः	सूत्रम्
1. अधिहरि	हरौ	हरि डि अधि	अव्ययंविभक्ति समीप.....
2. अधिगोपाम्	गोपि	गोपा डि अधि	अव्ययंविभक्ति समीप.....
3. उपकृष्णम्/उपकृष्णेन समीप समृद्धिः.....	गोपि कृष्णस्य समीपम्		कृष्णङ्सञ्जाधि अव्ययंविभक्ति
4. सुमद्रम्	मद्राणां समृद्धिः	मद्र आम्	अव्ययंविभक्ति समीप समृद्धि व्यृद्धि....
5. दुर्यवनम्	यवनानां व्यृद्धिः	यवन आम् निर्	अव्ययंविभक्ति समीप समृद्धि व्यृद्धयर्थाभाव
6. निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणां अभावः	मक्षिका आम् निर्	अव्ययंविभक्ति समीप समृद्धि व्यृद्धयर्थाभावत्यया
7. अतिहिमम्	हिमस्य अत्ययः	हिम डन्स् इति	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति
8. अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यते/निद्रा	निद्रा सु अति	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि व्यृद्धयर्थाभावव्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव....
9. इतिहरि	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि डन्स् अति हरे:	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि व्यृद्धयर्थाभावव्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव....
10. अनुविष्णु	विष्णोः पश्चात्/अनु विष्णु डन्स् अनु		अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि व्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य....
11. उपचर्मम्/उपचर्म	चर्मणः समीपम्	चर्मन् डन्स् उप	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि
12. उपसमिधम्/उपसमित्	समिधः समीपम्	समिध् डन्स् उप	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि
13. अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	रूप डन्स् अनु	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि व्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य
14. प्रत्यर्थम्	अर्थम् अर्थं प्रति	अर्थं अम् प्रति	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि व्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्दप्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य
15. यथाशक्ति	शक्तिम्/अनतिक्रम्य	शक्ति अम् यथा	अव्ययंविभक्ति समीपसमृद्धि व्यृद्धयर्थाभावत्यया



16. सहरि	हरोः/सादृश्यम्/सह	हरि डंस् सह	अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य
17. अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठस्य/अनुपूर्व्येण	ज्येष्ठ डंस् अनु	अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य
18. सचक्रम्	चक्रेण युगपत्	चक्र टा सह	अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्यसम्पत्ति
19. ससखि	सदृशः:	सखि टा सह	अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्य सम्प्रति
20. सतृणम्	तृणानां साकल्यं	तृण अम् सह	अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्य सम्पत्ति साकल्यान्तवचनेषु
21. सक्षत्रम्	क्षत्राणां सम्पत्तिः	क्षत्र आम् सह	अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्य सम्पत्ति साकल्यान्तवचनेषु
22. साग्नि	अग्निग्रन्थपर्यन्तम्	अग्नि टा सह	अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्यया सम्प्रति शब्द प्रादुर्भाव पश्चाद्यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्य सम्पत्ति साकल्यान्तवचनेषु
23. पञ्चगङ्गम्	पञ्चानां गङ्गानां	पञ्चन् आम् गङ्गा	नदीभिश्च
	समाहारः:	आम्	
24. द्वियमुनम्	द्वयोःयमुनयोः:	द्वि ओस् यमुना ओस्	नदीभिश्च
25. उपशरदम्	शारदःसमीपम्	शारद् डंस् उप	अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः
26. प्रतिविपाशम्	विपाशःअभिमुखम्	विपाश् डंस् प्रति	अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः
27. उपजरसम्	जरायाःसमीपम्	जरा डंस् उप	अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः
28. उपराजम्	राजःसमीपम्	राजन् डंस् उप	नस्तद्विते



गर्भस्थशिशौः प्रतिज्ञा

शिल्पा

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

प्रार्थना प्रतिज्ञा वा गर्भस्थशिशोः वर्तते । गर्भेपनिषत्कारः
कथयति यत् गर्भे शिशुः यदा नवमे मासे सर्वाङ्गसम्पूर्णे
जातः तदा स पीडामनुभवति । निरुक्तकारः यास्कोऽपि
प्रस्तौति अस्मिन् विषये श्लोकाः । तुलनीयमत्र —

‘मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृतः।

नानायोनिसहस्राणि मया यान्युषितानि वै ॥

आहारा विविधाः भक्ताः पीता नानाविधाः ३

मातरो विविधा दष्ट्याः पितरः सहदस्तथा ॥

अवाङ्मखः पीडयमानो जन्तश्चैव समन्वितः ।

सांख्यं योगं सम्भ्यस्ये परुषं वा पञ्चविंशकम् ।

श्लोकेष्वेष विष्णवे यह वर्ति वन्नवन् वर्ति

शिशोः पीडा संलक्ष्यते ऽत्र । अवाङ्‌मुखोऽहं,
 कष्टमनुभवामि । अवाङ्‌मुखः ‘उल्टे लटके हुए, सिर नीचे
 पैर ऊपर’ । हे प्रभो! केवल मधुना मम प्रार्थनां शृणु ।
 बहिरागत्य अहं सांख्यं योगं समध्यस्ये । परं दशमे मासे यदी
 प्रजायते । जातश्च वायुना स्पृष्ट्यो न स्मरति जन्ममरणे ।

एवमियं गर्भोपनिषत् अध्यात्ममार्गमुपदिशति ।
 स्मारयति चास्मान्, यत् प्रतिज्ञा कारिता अस्माभिः
 गर्भस्थकाले । अस्माकं जन्मप्रयोजनं मोक्ष एव । मोक्षार्थमेव
 आगता वयमस्मिन् संसारे । हिरण्यर्थं सृष्टिं दृष्ट्वा वयं
 विस्मिता जायन्ते । अतः ‘धर्माधर्मौ सुखदुःखे रागद्वेषाविति
 प्रवृत्तिमिदं षडरं संसारचक्रम्’ अस्मात् संसारचक्रात् विमुच्य
 ज्ञानमार्गोऽवलम्ब्येत । ज्ञानस्य पराकाष्ठा वैराग्यम् । एवं
 वैराग्यमासाद्य अस्माकं पुनरागमनं न भवेदस्मिन् संसारे-इति
 गर्भोपनिषत् स्मारयति ।

गर्भोपनिषदि आलंकारिकभावेन
गर्भस्थशिशोः संवेदना
एवमुल्लिखिता-

आहारा विविधा भुक्ताः पीता नानाविधाः स्तनाः ।
जातश्चैव मृतश्चैव जन्म चैव पुनः पुनः ॥१ ॥
यन्मया परिजनस्यार्थे कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
एकाकी तेन दद्येऽहं गतास्ते फलभोगिनः ॥२ ॥
अहो दुःखोदधौ मग्नो न पश्यामि प्रतिक्रियाम् ।
यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्प्रपद्ये महेश्वरम् ॥३ ॥
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्ति प्रदायकम् ।
यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्प्रपद्ये नरायणम् ॥४ ॥
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्तिप्रदायकम् ।
यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्सांख्यं योगमध्यसे ॥५ ॥
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्तिप्रदायकम् ।
यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं ध्याये ब्रह्म सनातनम् ॥६ ॥
गर्भस्थशिशुः परमेश्वरं प्रति कथयति मया नानाविधानि
जन्मानि गृहीतानि । तेषु जन्मसु विविधाः मातरः पितरः
सुहृदश्च दृष्टाः । विविधा आहाराः भुक्ता ब्रह्मीनां मातृणां दुग्ध
पानं कृतम् । एवं जन्ममृत्युचक्रे मुहुर्मुहुः परिभ्रम्यते ।
विविधेषु जन्मसु ये ये परिजनाः प्राप्ताः, तेषां कृते यत्
शुभाशुभं कर्म कृतम्, तेषां शुभाशुभकर्मणां फलभोगिनः
परिजनास्तु जन्मान्तरे गताः, परं तेषां कर्मणां दाहकत्वेन
दद्येऽहम् । हे प्रभो ! अधुनाऽहं दुःख सागरे निमज्जामि, नाहं
जानामि क्व गच्छानि, दुःखसागरात् तिर्तीषु अहम् । हे प्रभो !
एकवारं यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तर्हि महेश्वरं प्रपद्ये, नारायणं
प्रपद्ये, सनातनं ब्रह्म ध्याये, सांख्यं योगं च अभ्यसे । एषा



यस्यार्योऽनुमते गतः

अंशु गोस्वामी

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

सज्जनानां धर्मपालने योऽधर्मो भवेत् सोऽस्य भवतु येन
रामो वनं प्रेषितः। तद्यथा-

‘परिपालयमानस्य राज्ञो भूतानि पुत्रवत् ।

ततस्तु द्रूलतां पापं यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

बलिषड्भागमद्वत्य नपस्यारक्षितः प्रजाः

अधर्मो योऽस्य सोऽस्यास्त यस्यार्थोऽनमते गतः ॥

संश्रत्य च तपस्विभ्यः सत्रे वै यज्ञदक्षिणाम्

तां चापलतां पापं यस्यायोऽनमते गतः ।

हस्त्यश्वरथस्त्वाधे यद्दे शस्त्रसमाकले

मा स्म कार्णेति सतां धर्म यस्यार्थोऽनुभवे ।

म अधीरं षापत्रं विस्मृतं । म शीर्णं स

मा द्राक्षीत् । स पायसं कृसरं छां अदत्त्वैव केवलाघो भवेत् ।
स गा: पादेन स्पृशेत् । गुरुपरिवादी मित्रद्रोही विश्वासघाती
च भवेत् । स अपकर्ता कृतञ्चः सत्पुरुषात् परित्यक्तो
निर्लज्जः सर्वेषां द्वेषपात्रं भवेत् । स्वगृहे पुत्रैः दासैः भृत्यैश्च
परिवारितोऽपि स एको मिष्टान्मशनात् । स सदृशाम् दारान्
अप्राप्य अनपत्यैव म्रियताम् ।

आत्मनः सन्ततिं मा द्राक्षीत् । तद्यथा—

गाश्च स्पृशतु पादेन गुरुन् परिवदेत् च ।

मित्रे द्वृह्येत सोऽव्यर्थं य यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

अकर्ता चाकृतज्ञश्च त्यक्तात्मा निरपत्रपः।

लोके भवत विद्विष्टो यस्यार्योऽनमते गतः ॥

तस्याजीविकायाः साधनं लाक्षामधुमांसलौह-
विषविक्रयणं भवेत्। स संग्रामे पलायमानो वध्येत्।
भिक्षमाणः स उन्मत्तो भूत्वा पृथिवीमटताम्। स नित्यो
मद्यपः स्त्रीकामी द्यूतक्रीडायाम् आसक्तः

 वाल्मीकिरामायणस्यायोध्याकाण्डे
पञ्चसप्तति तमे सर्गे एकविंशतितमात्
श्लोकादारभ्याष्ट्रिंशत् श्लोकाः सन्ति
येषां चतुर्थः पादोऽस्ति “यस्यार्योऽनुमते गतः।” एषा भरत
संवेदना वर्तते। आत्मवेदनायां तेन कानिचित् पापकर्माणि
परिगणितानि। यस्यानुज्ञया श्रीरामो वनं गतः प्रतिपद्यतां तेन
सः पापः, यः पापः परिगणितैः कार्यैः भवेत्। कानि च तानि
पापाचरणानि यैः तत्समः पापो लभ्यते। साऽनुज्ञा तानि च
पापाचरणानि समपापफलभागिनो भवेयुः। एषां कार्याणां
करणे यत् पापमुच्यते त देव पापं प्रतिपद्यतां येन श्रीरामो वनं
प्रेषितः। प्रथमा शापरूपेणोक्तिवर्तते भरतस्य। यस्याऽनुमतेः
श्रीरामो वनं गतः तस्य कदापि कृतशास्त्रानुगा बुद्धिर्मा भूत्।
तद्यथा-

‘कृतशास्त्रानुगा बुद्धिर्भूतस्य कदाचन।
सत्यसंधः सतां श्रेष्ठो यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

अयोध्याकाण्डे भरतो निगदति-येन प्रेषितः श्रीरामो वनं
प्रति, स पापीजनानां सेवकत्वं दास्यत्वं प्राप्नुयात् । स सूर्यं
प्रति मलमूत्रविसर्जनं कुर्यात् । सुप्ताः गाः पादेन हन्यात् । यो
महत् कर्म कारयित्वा भृत्यं वृत्तिं वेतनं न प्रददाति ‘अर्धर्मो
योऽस्य सोऽस्यास्तु ।’ उक्तञ्च-

‘प्रैष्यं पापीयसां यात सर्वं च प्रति मेहत् ।

हन्त पादेन गा: सप्ता यस्यार्थं नमते गतः ॥ ७

‘कारयित्वा महत कर्म भर्ता भत्यमनर्थकम् ।

अधर्मो योऽस्य सोऽस्यास्तु यस्यार्थोऽनमते गतः ॥

स राजद्रोहरूप पापं प्राप्नुयात्। बलिं टैक्स इति' गृहीत्वाऽप्यरक्षितुः नृपस्य सोऽधर्मो भवेत् सोऽस्यास्तु यज्ञदक्षिणाऽदाने यद दःखं तद दःखं प्रतिपद्यतार। यद्द्वे

कामक्रोधाभिभूतश्च परिभ्रमतु । यस्यानुज्ञया श्रीरामो वनं
गतः तस्य धर्मे इति: मा भूयात् । अधर्मसेवनं करोतु सः । स
अपात्रे दानं कुर्यात् । अस्य वित्तानि दस्युभिः विप्रलुप्यन्ताम् ।
स उभे संध्ये शयानो भवेत् । स अग्निदायको गुरुतल्पगो
भवेत् । स देवपितृणां मातापित्रोश्च शुश्रूषां कदापि न
कुर्यात् । स सत्पुरुषाणां लोकात् सज्जनानां कीर्त्याः
सञ्जुष्टात् कर्मणः प्रभ्रश्येत् । तद्यथा-

‘लाक्ष्या मधुमांसेन लोहेन च विषेण च ।
सदैव बिभृयाद् भृत्यान् यस्यार्योऽनुमते गतः ॥
मद्य प्रसक्तो भवतु स्त्रीष्वक्षेषु च नित्यशः ।
कामक्रोधाभिभूतश्च यस्यार्योऽनुमते गतः ॥
मास्य धर्मे मनो भूयादधर्मं स निषेवताम् ।
अपात्रवर्षी भवतु यस्यार्योऽनुमते गतः ॥
उभे संध्ये शयानस्य यत् पापं परिकल्पयते ।
तच्च पापं भवेत् तस्य यस्यार्योऽनुमते गतः ॥

स बहुभृत्ये भवेत् अर्थात् शरीरेणासमर्थो भवेत्
 भृत्याश्रयत्वमानुयात्। स पिशुनोऽशुचिः राज्ञो भीतः सन्
 मायया रमेत्। बालवत्सां गां दृद्घ्यात्। जलदूषको विषदायकः

पुरुषो यत् गृहणाति पापं, तदगृहणीयात्। तृष्णार्तं जलं मा
दद्यात्। विवदमानेषु पक्षपाती भूत्वा पापेन युज्येत्। उक्तञ्च
कविना—

‘बहुभूत्यो दरिद्रश्च ज्वररोगसमन्वितः ।
समायात् सततं क्लेशं यस्यार्थोऽनुमते गतः ॥
मायया रमतां नित्यं पुरुषः पिशुनोऽशुचिः ।
राज्ञो भीतस्त्वधर्मात्मा यस्यार्थोऽनुमते गतः ॥
बालवत्सां च गां दोग्धु यस्यार्थोऽनुमते गतः ॥
पानीयदूषके पापं तथैव विषदायके ।
यत्तदेकः स लभतां यस्यार्थोऽनुमते गतः ॥

एवं श्लोकेष्वेषु यानि यानि कार्याण्युल्लिखितानि, तानि
 नैव कर्तव्यानि । तानिसर्वाणिपापाचरणानि, सदैव
 अकरणीयानि । अष्टत्रिंशत् श्लोकेषु जगति ये ये अनाचाराः
 ते सर्वे परिगणिताः । लघूनि गुरुणि यान्यपि कार्याणि
 निषिद्धमार्गे प्रस्तुतानि तानि नैव कदापि आचरणीयानि ।
 एषामाचरणानां पापफलं रामस्य वनप्रेषणा पसममेव । अत
 एव श्लोकेष्वेषु परिगणितेषु कार्येषु यत् पापमुच्यते तदेव
 पापं प्रतिपद्यतां येन वनं प्रेषितः श्रीरामः ।

होमधेनुधरादीनां दातारः सुलभा भुवि ।
दुर्लभः पुरुषः लोके यः प्राणिष्वभयप्रदः ॥

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने ।
विक्रमार्जितसत्त्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥



મૌનગુણવૈશિષ્ટ્યમ्

शिखा पाल

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

सर्वप्रथमम् अनुयोगोऽयं विचारचर्चामारोहति यत् सत्सु बहुषु गुणेषु का नाम आवश्यकता मौनगुणस्य ? यदि याथातथ्येन विविच्यते तर्हि सुतरां स्फुटमेतद् आपद्यते यत् सत्सु बहुषु गुणेष्वपि यदि मौनगुणं नास्ति तर्हि सर्वे गुणा अपि शनैः शनैः दुर्गुणेषु परिवर्तन्ते । शुक्सारिकाः (तोता-मैना इति हिन्दी

भाषायाम्) स्वस्य मौनगुणाभाव एव पञ्जरयुक्ताः भवन्ति परं बकाः नैव बध्यन्ते। एवं मौनगुणेन सर्वार्थसिद्धिं कर्तुम् शक्यते। मौनवैषिष्ट्यमेव सूचयति श्लोकमिदम्-

‘आत्मनो ममादोषेषां ब्रह्मान्ते शक्तिसामिकी

बकास्त्र न बध्यन्ते मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥'

जगत्यस्मिन् सम्मानार्हाणि वस्तूनि बहूनि सन्ति यैः पुरुषः सम्मानास्पदो भवति, यथा-धनम्, वैभवम्, कला, सौन्दर्यम्, विद्या, चारित्रादिकञ्च । परं सौन्दर्यादिना सम्मानं नासाद्यते अपितु गुणैरेव गौरवमवाप्यते । यदि कोऽपि रूपवान् पुरुषः मूर्खोऽस्ति स सदसि स्वां वार्णीं निरोधयेत् दुःखारिणीं भार्या इव । उक्तञ्च-

‘रूपवांश्चापि मुखोऽपि गत्वा च विपुलां सभाम् ।

संरक्षेच्च स्विकां जिह्वां भार्या दुञ्चारिणीं यथा ॥

यतो हि उत्तरामचरितेऽपि उक्तम्-

‘गणाः पूजास्थानं गणिषु न च लिङ्गं न च वयः ॥’

यदि गुणः नैव सन्ति तर्हि मौनगुण एव संरक्षति पुरुषम् । यतोहि गुणगौरवसम्पन्नः सद्भावयुक्तः, ज्ञानविज्ञानयुक्तः, शीलादिगुणसमेत एवाभिनन्दनीयः ।

मौनगुणमज्जतायाः छादनमुक्तमपणिडतानां विभूषणं कथितं विधात्रा गुणमिदं स्वायत्तं स्वस्याधीनं पुरुषस्याधीनं कृतम्। परमार्थतः मौनगुणमाश्रित्यैव अज्ञाः जनाः सर्वविदां सभायां आत्मनो रक्षां कर्वन्ति। अत एवोच्यते-

‘स्वायत्तमेकानन्तरगुणं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्जतायाः ।

विशेषतः सर्वविदां समाजे विभषणं मौनमपिण्डतानाम् ॥'

यदा दुष्टजनाः विवादं कुर्वन्ति तदा सुधीभिः मौनमेव संरक्षणीयम् । यतो हि काकसमूहस्य कोलाहलमध्ये कोकिलानां कजनमपि नैव शोभते । एतादशीमवस्थां प्राप्य मौनगण एवोचितः । उक्तञ्च कविना-

‘कोलाहले काककलस्य जाते विराजते कोकिलकजितं किम् ।

परस्परं संवादतां खलानां मौनं विधेयं सततं सधीभिः ॥'

उचितावसरे वदनमावश्यकम् । अन्यायं प्रति मौनं नोचितम् । वास्तवे मौनमज्जतायाः छादनमेव वर्तते अथवा कदाचित् वयं बन्धनयक्ता न भवेत् तर्हि मौनं साध्यमित्यमिपायसाधकमिति ।

अध्यात्मर्मार्गे साधनापक्षे संयमनाय मौनसाधना अवश्यमेव कर्तव्या । प्रतिदिवसे होराद्वयम् मौनं विधाय आत्मनिरीक्षणावश्यकम् ।



सत्यपरीक्षणनिकषम्

वंशिका चौधरी

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

‘किं सत्यं किमसत्यम्’ इति परीक्षणे कवयोऽप्यत्र मोहिताः। स्वार्थाभिभूतः सन् सत्यासत्यस्य परिभाषा परिवर्तते। वयं जानीमः—‘सत्यमेव जयते।’ परं प्रश्नोऽयं काठिन्यं प्रयाति—यत् सत्यं वयं जानीमः किं तत् सत्यम् असत्यं वेति। एवं सत्यासत्यस्य किं निकषमिति जिज्ञासायां सत्यार्थं नन्देन स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश उद्घोषितम्। तद्यथा—

‘परीक्षा’ पाँच प्रकार की है। इनमें से प्रथम जो ईश्वर उसके गुण कर्म स्वभाव और वेदविद्या, दूसरी-प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण तीसरी-सृष्टिक्रम, चौथी-आप्तों का व्यवहार और पाँचवीं अपने आत्मा को पवित्रता विद्या, इन पाँच परीक्षाओं से सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना चाहिए।’

किं सत्यमिति विज्ञानाय प्रथमं निकषमस्ति-ईश्वरस्य के गुणः कानि कर्माणि कञ्च स्वभावः, एतेषां ज्ञानं तस्य वेदविद्यायाः सम्यक् अध्ययनम्। यदि सा वार्ता, तथ्यम्, विचारो वा निकषेऽस्मिन् सम्यगवतरति तर्हि तत् सत्यम्। द्वितीयं निकषम्-प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द-ऐतिह्य-अर्थापत्ति-सम्भव-अभावाः एते प्रत्यक्षाद्यष्टप्रमाणाः। एतैः प्रमाणैः सम्यक् विज्ञाय सत्यपरीक्षा करणीया। यदि प्रत्यक्षादि प्रमाणदृष्ट्या सत्यं तर्हि सत्यं विजानीयात्। प्रत्यक्षादिप्रमाणं निकषं ‘कसौटी’ सत्यस्य। तृतीयं निकषम्-सृष्टिक्रमः। सृष्टिक्रमविरुद्धं सर्वमसत्यं तदनुकूलञ्ज्ञ सत्यमिति। यथा-‘पित्रोः संयोगमन्तरैव समुदपादि सुतः’ इति वचनं सृष्टि-क्रमविरुद्धत्वात्सर्वथैवासत्यम्। चतुर्थं निकषम्-आप्तव्यवहारः। यच्चाप्तानामर्थाद् धार्मिकविदुषां सत्यवादिनां निश्छलानाम् आचारोपदेशानुकूलं तत् सर्वमुपादेयं परिहेयञ्चान्यदिति। पञ्चमं निकषम्-स्वात्मनः पवित्रता विद्या च। यत्स्वस्यान्तरात्मनः पवित्रताविद्ययोरविरुद्धं तदाचरणीयम्। यथा ह्यात्मने सुखं प्रियं तथैव सर्वत्रावगन्तव्यम्। कञ्चिच्चेदहं सुखयिष्यामि अर्दयिष्यामि वा सोऽपि प्रसादमप्रसादं वा प्राप्स्यति।

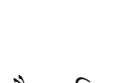
एवं स्वार्थं विहाय सत्यासत्यपरीक्षणे वयमुद्यता भवेत् । सत्यासत्यस्य परीक्ष्यैव सत्यग्रहणाय असत्यं परित्यागाय समर्था स्याम् । मनुस्मृतौ यदुक्तम्-‘सत्यं ब्रूयात्’ इत्यत्र पूर्वं सत्यस्य परीक्षा करणीया । यदि कश्चिद् गोकर्तकः पृच्छति किं दृष्ट्या गौः त्वया ? नैव मया तु न दृष्ट्या । परं तेन दृष्ट्या गौः पुनरपि स वदति मया न दृष्ट्या । तस्य वचनमत्र सत्यम् असत्यं वा । सत्यनिकष उत्तोलयामस्तर्हि तद्वचनमेव सत्यं यदसत्यं प्रतीयते । गोकर्तकस्तु ज्ञात्वा एव घातयिष्यति गां यतो हि कर्तनायैव स पृच्छति । एवं तस्याः रक्षायैव वचनमिदं सत्यं ‘न मया दृष्ट्या इति ।’ अतः सत्यं ब्रूयात् परं परीक्ष्यैवान्यथा सत्यमप्यसत्यं भवेत् ।



सुभाषितप्रशंसा

राहुल कुमार

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

 संस्कृतभाषायां बहूनि सुभाषितानि
प्राप्यन्ते । भारतवर्षस्य समस्तमपि
प्राचीनं वाङ्मयं संस्कृतभाषा-
माश्रित्यैवावतिष्ठते । सुभाषितप्रशंसायामपि बहवः श्लोकाः
यत्र-तत्र उपलभ्यन्ते । गीर्वाणगिरो मार्धुयं कस्य सहृदयस्य
हृदयं नावर्जयति । संस्कृतभाषायाः महत्त्वविषये प्रचलितं
यत् सर्वासु भाषासु मधुरा दिव्या च भाषा संस्कृतभाषा । सैव
गीर्वाणभारती । किं नाम गीर्वाणभारती इति जिज्ञासितं चेत्
गीर्वाणः देवः, भारती वाणी देवैः ऋषिभिश्च प्रयुज्यमाना
वाणी देववाणी संस्कृतभाषा । उत्तरोत्तरप्रशंसायां
सुभाषितानां प्रशंसा सर्वोपरि वर्तते । उक्तञ्च-

‘भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती ।
तस्माद्बृं काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम् ॥

सुभाषितं दृष्ट्वा पठित्वा येषां चेतांसि
आहलादसमेतानि न भवन्ति, ते अवश्यमेव योगिन अथवा
पश्च एव वर्तन्ते। उपमितञ्च ह्याज-

‘सभाषितेन गीतेन यवतीनां च लीलया ।

मनो न भिद्यते यस्य योगी ह्यथवा पशः ॥'

सुभाषितानां संग्रहं सततं करणीयम् । प्रसङ्गं उपात्ते
 सुभाषितमेव आचारशिक्षां प्रददाति । प्रस्तावयज्ञेषु
 प्रसङ्गयज्ञेषु सङ्गतिकरणयज्ञेषु सुभाषितमेव
 दक्षिणारूपेणोररीक्रियते । येषां पाश्वे सुभाषितरूपा दक्षिणा
 नास्ति ते तु निर्धना एव । अतः सुभाषितसंग्रहणविषये
 उक्तम्—

‘सुभाषितमयैर्द्रव्यैः संग्रहं न करोति यः।

सोऽपि प्रस्तावयज्ञेषु कां प्रदास्यति दक्षिणाम् ॥'

केचिज्जनाः संसारं कटुवृक्षरूपेणोपमिमते । परं

जगदरूपस्य कटुवृक्षस्यापि द्वे फले अमृतोपमे स्तः । के च ते
 इति जिज्ञासायां श्लोकमिदं प्रस्तुतमत्र-
 ‘संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपमे ।
 सभाषितरसास्वादः; संगतिः; सजने जने ॥

वस्तुतस्तु येषां पाश्वे सुभाषितरसं सुजनानां संगतिश्च
विद्यते ते संसारकटुकृक्षमपि अमृतमयं कुर्वन्ति यतो हि तेषां
पाश्वे सुभाषितरसं महदधनममृतं विद्यते। कवीनां विषये
कथितं यत् सुभाषितरसं महदधनममृतं विद्यते। कवीनां
विषये कथितं यत् सुभाषितरसेनैव ते सुखमनुभवन्ति। ते
कीदृशाः सन्ति? सुभाषितरसास्वादबद्धरोमाञ्चकञ्चुकाः
कवयः। कञ्चुकः=कवच इति हिन्दीभाषायाम्। ते कवयः
नारीसङ्गविनैव सूखमासते। श्लोकेऽस्मिन्नपि उक्तमिदम्-

‘सभाषितरसास्वादबद्धरोमाज्यकज्यका:

विनापि कामिनीसङ्गं कवयः सुखमासते ॥

अद्यतने सर्वे जनैः अङ्गुलीनां मध्ये रत्नानि
आभूषणरूपेण धार्यन्ते। रत्नधारणेनैव तैः शुभाशुभाशंसा
विचार्यन्ते। यदि रत्नधारणेनैव सर्वाणि शुभफलानि प्राप्यन्ते
तर्हि शुभसंकल्पानां शुभकर्मणां का व्यवस्थितिः।
नात्रावश्यकता शुभकर्मणाम्। परं कवित्र कथयति यत्
भूम्यां त्रीणि रत्नानि सन्ति। प्रथमं रत्नम्-जलम्।
द्वितीयम्-अन्नम्। तृतीयम्-सुभाषितम्। यैः पाषाणखण्डं
रत्नमधिधीयते ते तु मृदाः मूर्खाः सन्ति। उक्तञ्च-

‘पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।

मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयत ॥'

के नावसीदन्ति ? के कदापि अवसाद्युक्ता न भवन्ति ।
केषां जीवने कदापि अनुत्साहो नायाति । ये गुणरत्नानां
संग्रहिणो भवन्ति । कानि च गुणरत्नानि इति

जिज्ञासायामुच्यते-

‘धर्मो यशो नयो दाक्ष्यं मनोहारि सूभाषितम् ।

इत्यादि गुणरत्नानां संग्रही नावसीदति ॥'

अतः येषां पाश्वे धर्मादिगुणरत्नानि सन्ति । येषां पाश्वे
मनोहारीणि सुभाषितानि ते कदापि नावसीदन्ति ।
सदैवोत्साहयुक्ताश्च भवन्ति । सुभाषितरसं रसोळ्कष्टम् ।
तस्याग्रे सुधा भीता सन् दिवङ्गता । सुभाषितानां एतदेव
माहात्म्यम् यत् सर्वे दुर्गुणाः सुभाषितरसपानेन दूरीभवन्ति ।
सुधा इति देवानां पेयम् अमृतमिति । आलङ्कारिकभाषायां
कथितं यत् सुधा सुभाषितरसाद् भीता अतएव दिवं गता ।
उक्तञ्च यथा-

उक्तञ्च यथा-

‘सुभाषितरसस्याग्रे सुधा भीता दिवं गता ।’

पण्डितपूर्णायां देवयुक्तायां विबुधगमितायां सदसि सैव
 मनुष्यः विबुधप्रियः येन सुभाषितामृतमातृप्तेः निपीतम् ।
 सदसि सैव स्थातुं योग्यः यस्य पाश्वे सुभाषितरसम् । तेनैव
 सुभाषितरसेन आह्लादयुक्ता भवति सभा । मनोहारि
 वातावरणं प्रजायते । अतः साहित्याध्ययनसमये सूक्तीनां
 संग्रहणं सुभाषितानामेकत्रीकरणमवश्यमेव करणीयम् ।
 तदैव मनुष्यः विबुधसमाजे संप्रविशति । उक्तञ्च-

‘कथमिह मनुष्यजन्मा संप्रविशति सदसि
विबधगमितायाम ।

येन न सूभाषितमृतमाहलादि निपीत मात्रप्तेः ॥

कविना प्रोक्तं यत् अवसरप्राप्ते पठितं सर्वं सुभाषितत्वं
 प्रयाति अर्थात् शब्दचयने प्रत्युत्पन्नता सदैव श्लाघ्या । असूक्तं
 वचनमपि सूक्तिसदृशं प्रतिभाति । यथा बुधुक्षितः किं न
 खादति अर्थात् कदशनमपि स्वादु कृत्वा भुनक्ति । अतएव
 साधु व्याहियते-

‘अवसरपठितं सर्वं सुभाषितत्वं प्रयात्यसूक्तमपि ।

क्षुधि कदशनमपि नितरां भोक्तुः संपद्यते स्वादु ॥’

कः मनुष्यः धीमतां सदसि लेप्यनिर्मितः पङ्करचित्

इवावभासते इति जिज्ञासायाम् च्यते-

‘यस्य वक्रकुहरे सुभाषितं नास्ति नाप्यवसरे प्रजल्पति ।

आगतः सदसि धीमतामसौ लेप्यनिर्मित इवावभासते ॥'

अतः सुभाषितसंग्रहणमावश्यकमेव । तेषां
 स्मरणमप्यावश्यकम् । यतो हि स्मरणेनैव अवसरे प्राप्ते
 सुभाषितादानप्रदानप्रक्रिया सम्भवा अन्यथा पुस्तकस्थं
 सुभाषितं अवसरप्राप्ते न प्रयोक्तुमर्हम् । सुभाषितरसः
 सर्वांतिशायी वर्तते । रसोऽयं न विकृतिं विकारयुक्तं प्रयाति,
 न विरसः विगतो रसो भवति, न क्षीयते, जाड्यं मौर्ख्यं
 निहन्ति, रुचिकरं तृप्तिकरञ्च भवति अत एव
 सुभाषितरसास्वादमवश्यमेव करणीयम् यतो
 ह्यन्यरसांतिशायी सुभाषितरसोऽयम् ।

‘नायं प्रयाति विकृतिं विरसो न यः स्यान्—

न क्षीयते बहुजनैर्नितरां निपीतः ।

जाङ्गुं निहन्ति रुचिमेति करोति तृप्तिं

नुनं सुभाषितरसोऽन्यरसातिशायी ॥

‘धन्याः शुचीनि सूरभीणि गुणोम्भितानि

वाग्वीरुधः स्ववदनोपवनोदगतायाः ।

उच्चत्य सुक्तिकृसुमानि सतां विविक्त-

वर्णनि कर्णपुलिनेष्ववतंसयन्ति ॥

अत एव मनुजैः सुभाषितानां संग्रहः अवश्यमेव
करणीयम्। येन खित्रमपि रमते। अनेनैव जगद्वशीकर्तु
समर्थो जायते ॥



महाकविकालिदासस्य प्रकृतिचित्रणम्

मीनू

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

मरुत्प्रयुक्ताश्च मरुत्सखाभं तमच्छ्वामारादभिवर्त्तमानम् ।

अवाकिरन् बाललताः प्रसन्नैराचारलाजैरिव पौरकन्याः ॥

रघु० 2/10 ||

एवं महाकविः मते प्रकृतिर्न केवला अचेतना प्राणरहिता
 वस्तु अपितु सचेतना। इयमपि मानववत्
 सुखदुःखञ्चानुभवति। यथा मानवः परस्परं साहाय्यं
 कुर्वन्ति सुखदुःखेषु, विपल्काकालेषु तथैव स्वरूपं प्रकृत्या
 अपि द्रष्टुं शक्यते।

यदा राजा दिलीपः छत्रं विना वने नन्दिनीम् अनुसरन्
भ्रमति, तदा आपतेन ज्याकुलतामनुभवति । राजानं खिन्नं
म्लानं च दृष्ट्वा वायुना स्वकीयं कार्यमारब्धम् । मन्ये राजे
दिलीपाय धर्मेण मक्षिप्रदानायैव अनिलः प्राचलितः । यथा-

पृक्तस्तुषारैर्गिरिनिर्झराणाम्,

अनोकहाऽऽकम्पितपृष्ठगन्धी ।

तमातपक्लान्तमनातपत्रम्

आचारपूतं पवनः सिषेवे ॥ रघुव० 2/13 ॥

एवं महाकविना कालिदासेन अनेकविधिना प्रकृते:
 चित्रणं विहितम्। रघुवंशस्य प्रथमसर्गे वर्णितं नन्दिन्याः
 स्वरूपं क्रियत् मनोहारि। नन्दिन्यां वपुः नव किसलयवत्
 कोमलं रक्तवर्णीयज्वास्ति तस्याः मस्तके श्वेतानां
 अलकानां वक्ररेखा यथा सञ्च्यायां मस्तके द्वितीयायाः
 चन्द्रमसः शोभा भवेत तद्यथा-

ललापेदयमाभग्नं पल्लवस्त्रिग्धपाटला ।

विभूति श्वेतारोमाङ्ग सन्ध्येव शशिनं नवम ॥रघुव० 1/83 ॥

नन्दिन्याः वात्सल्यमपि अतीव रुचिरतया वर्णितम्

महाकविना । यथा-

भुवं कोष्णेन कुण्डोध्नी मेध्येनावभृथादपि ।

प्रस्नवेनाभिवर्षन्ति वत्सालोक प्रवर्तिना ॥रघुव० 1/84 ॥

महाकविः निजकृतिषु प्राकृतिसौन्दर्यं उत्कृष्टचित्रैः
चित्रयति परं मालविकाग्निमित्राभिधेये नाटकेषु प्राकृतिक
सौन्दर्यं मानवसौन्दर्यमतिशेते । यथा-

रक्ताशोकरुचा विशेषितगुणो विम्बाधारलक्तकः ।

प्रख्याख्यात विशेषकं कुरबकं श्यामावदातारुणम् ॥

आक्रान्ता तिलक क्रिया च लिलकैर्लग्नद्विरेकाज्जनै ।

सावज्जेव मुखप्रसाधनविधो श्रीर्माधवो योषिताम् ॥मा०
3/5 ॥



ભારતીય સંસ્થાનાનાં દ્વ્યોરવાક્યાનિ

अप्रान्जल

एम.ए. द्वितीय वर्षम्

संस्थान

1. भारत सरकार
 2. जीवन बीमा निगम
 3. दूरदर्शन
 4. डाकतार विभाग
 5. भारतीय प्रशासनिक सेवा
अकादमी मसूरी
 6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान
और प्रशिक्षण परिषद्
 7. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
 8. आकाशवाणी (ऑल इण्डिया रेडियो)
 9. श्रम मन्त्रालय
 10. वायु सेना
 11. दिल्ली विश्वविद्यालय
 12. लोक सभा
 13. थल सेना
 14. चौधरी चरण सिंह वि.वि.

संस्कृतध्येयवाक्यम्

सत्यमेव जयते ।

योगक्षेमं वहाम्यहम् ।

सत्यं शिवं सुन्दरम्

अहर्निश सेवामहे ।

शीलपरमभूषणम्

विद्याऽमृतमश्नुते ।

असतो मा सद्गमय ।

सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय

श्रम एव जयते ।

नभः स्पृशं दीप्तम् ।

निष्ठा धृतिः सत्यम् ।

धर्मचक्रप्रवर्तनाय ।

सेवा अस्माकं धर्मः ।

यत्र सत्यस्य परमं निधानम् ।



महाकाव्यस्य स्वरूपम्

अनुभव

एम.ए. प्रथम वर्षम्

 गद्यं पद्यं च मिश्रञ्जेति काव्यत्रैविध्य-
मुक्तम्, तत्र पद्य काव्यस्य बहवो भेदाः
प्रथन्ते, ‘मुक्तकम्’, ‘कुलकम्’,
‘कोषः’, ‘सङ्घातः’, इत्यादयः, सर्वेषां तेषां विस्तारेणात्र
वर्णनं न चिकीर्षितं सर्वेषामपि तेषां महाकाव्यांशरूपत्वा-
न्महाकाव्यवर्णनेनैव तेषमपि वर्णनस्य कृत प्राय त्वात्, तत्र
मुक्तककुलकौ नामांद्यभेदौ साक्षादंशरूपौ, अनन्त्यौ
कोषसङ्घातौ तु महाकाव्ये तत्तदञ्चावचवर्णने सम्भवत एवोत
पृथगत्र न प्रपञ्चितौ।

सर्गबन्धो महाकाव्यम् च्यते तस्य लक्षणम् ।

सर्गः अवान्तरप्रकरणविशेषः, तत्कृतः बन्धो रचना
महाकाव्यम् यत्र प्रकरणानि सर्ग पदेन व्यवच्छिद्यन्ते तादृशी
रचना महाकाव्यम्, तस्य लक्षणम् इतरख्यावृत्तिकरं चिह्नम्
उच्यते वक्ष्यमाणेनेति शेषः। आशीर्नमस्त्रियेत्यारम्भ जायते
सदलड़कृतिं पर्यन्तेन सन्दर्भेण काव्यं लक्ष्यत इत्यर्थं।
तन्मुखम् तस्य महाकाव्यस्य मुखम् प्रारम्भः क्रियत इत्यर्थः।
तत्र आशीर्नाम स्वेष्टजनस्य स्वस्य वा शुभाशंसनम्।
वस्तुनिर्देशः वर्णनीयकथाभागस्य प्रकारेष केनचिदुप-
निबन्धः, स च कविनायकनिर्देशेन कृचित्तदावासदेश-
निर्देशांदिप्रकारेण वा क्रियते।

महाकाव्यस्य कथानक इतिहासक योद्भूतम्
 इतिहासवर्णितकथामाधारीकृत्य प्रबद्धम् इतिहासः
 -महाभारतं रामायणं च अन्यद्वा राजतरङ्गिण्यादि।
 इतिहासप्रसिद्धकथां विहायापि प्रसिद्धस्य सत आश्रयेण
 प्रवृत्तं महाकाव्यं भवति, यथा प्रोक्तबुद्धचरितादि।
 महाकाव्यस्य रचना चतुर्वर्गफलायत्तम्- चतुर्णा
 धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्गः समुहः तत्र फले आयतं

तत्फलमुद्दिश्य प्रणीतम्, तत्र काव्याद्वर्मप्रार्पिगर्वन्नारायण-
चरणारविन्द स्तवादिना, अर्थप्राप्तिश्च प्रत्यक्षसिद्धा,
कामप्राप्तिश्चार्थद्वारा, मोक्षप्राप्तिश्चैतज्जन्यफला न
नुसन्धानात्। चतुरोदात्तनायकम्-चतुरो व्यवहारकुशलः
उदात्तः धीरोदात्तौ नायक कथाप्रधानपुरुषो यत्र तादृशम्। इदं
महाकाव्यलक्षण घटकम्।

महाकाव्ये नगरं नायकाध्युषितं पुरम् तद्वर्णनं यथा
शिशुपालवधे तृतीय सर्ग द्वारकावर्णनम् अर्णवः सागरः,
तद्वर्णनं यथा रघुवंशे त्रयोदशसर्गे। शैलः पर्वतस्तद्वर्णनं
चन्द्राकौ चन्द्रमस्सूर्यौ तयोरूदयः, चन्द्रसूर्ययोरूदयास्तमय-
वर्णनं, उद्यानमुपवनं सलिलं जलाधारः सरिदादिस्तत्र
क्रीडाविहारः, मधुपानं मघसेवनं तद्वर्णनं तथा
चैभिर्वर्णनविशेषैरलङ्घकृतं काव्यं कल्पान्तस्थायि
यशोजनकं जायत इति पर्यवसितोऽर्थः।

विप्रलम्भो विप्रलम्भशृङ्खारः, 'यत्र तु रत्रिः प्रकृष्टा
नाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ' इति लक्षितः। स च
'पूर्वरागमानसप्रवास करुणात्मकतया चतुर्विध' इति
द्योतनायैवात्र बहुवचनप्रयोगः, 1. तत्र पूर्वरागो नैषधीयचरिते
चतुर्थसर्गं, मानो यथा कृष्णवैभवे राधायाः, प्रवासो यथा
तत्रैव करुणो यथा कादम्बयी महाश्वेतायाः। कुमारोदयः
पत्रोत्पत्तिः तद्वर्णनं यथा रघवंशे ततीयसर्गे ।

नगरादारभ्य अभ्युदयपर्यन्तमुक्तानां वस्तूनां वर्णैः
 अलड्कृतमिति योजना असडिक्षप्तम्-अतिसङ्क्षेपवर्णितं
 हिं वस्तु न स्वदते, यथा- ‘वसुदेवात्समुत्पद्य पूतनां
 विनिपात्य च। रसाः - शृङ्गारादयो नव, भावः -
 ‘रतिर्देवादिविषया व्यभिचारी तथाज्ञितः। भावः प्रोक्तः’
 इति लक्षितस्वरूपः। तै रसैर्भावैश्च निरन्तरम् पूर्णम्।

सुसन्धिभिः - मुखप्रतिमुखगर्भविमशनिर्वहणनामकैः
 सन्धिभिः साधुसमुपयोजिततैर्युक्तैः साधुसमुपयोजिततैर्युक्तैः
 सर्गेषुपेतमिति लक्ष्यमाणेनान्वयः। सर्वत्र भिन्नवृत्तान्तैः
 प्रतिसर्ग भिद्यमानकथैः, अथवा सर्वेषां सर्गाणां समाप्तौ
 विपरीतच्छन्दोभिरित्यर्थः, पूर्ण सर्ग केनचिदेकेन च्छन्दसा
 निर्माण्यावसाने भिद्यमानेन वृत्तेन निर्माणमत्राभिप्रेतं बोध्यम्।
 एतत्प्रायिकं, नानावृत्तमयसर्गस्यापि दर्शनात् ।

महाकाव्येऽपेक्षितत्वेन वर्णितास्तत्तद्वर्णन सद् भावा
दर्योऽशतः खण्डकाव्येष्वपि दृश्यन्तेऽतः खण्डकाव्येषु
तलक्षणप्रसक्तिरथ तद्वारणाय सामस्तयेन ततदगुणसमावेशो
विलक्ष्यते चेदांशिक्यां न्यूनतायां सत्यां महाकाव्यान्यपि
स्वलक्षणेन न व्याप्तेरन्तिः प्रसज्यमानानामुभ्यतः पाशां
रज्जुमषनोदितुमाहन्यूनमिति ।

पूर्वोक्ते काव्यलक्षणे 'चतुरोदात्तनायक' मित्युक्तम् तत्र
 नायकपदं प्रतिनायकस्याप्युपलक्षणं मन्यते, एतेन नायक
 प्रतिनायकयोरूत्कर्षापकर्णौ महाकाव्ये वर्णनीयावित्यायातं,
 तत्र द्वयी गतिः, प्राक् नायकस्य वर्णनं ततः, प्रतिनायकस्य,
 तदन्तरं नायक कृतः प्रतिनायकपराजयः इत्येकः प्रकारः
 अन्यश्च पूर्व प्रतिनायकस्य वर्णनं ततो नायक वर्णन
 पुरस्कृतस्तत्कृस्तदुच्छेद इति, तत्रानयोः प्रकारयोः प्रथमः
 प्रकारो रामायणे, द्वितीयश्च महाभारते तत्र स्वमतं प्रकारं

प्राधान्यं प्रापयितुं प्राक्प्रचलितं प्रकारं दर्शयति-गुणत इति ।
प्राक् प्रथमम् गुणतः नायकगुणवर्णनद्वारा नायकं काव्यनेतारं
प्रधानपुरुषम् उपन्यस्य अभिधाय, तेन तथा वर्णितेन नायकेन
विद्विषाम् । प्रतिनायकानाम् निराकरणम् उच्छेदः (वर्ण्येत),
एषः मार्गः प्रकारः (प्राङ्गनायकं) वर्णयित्वा पश्चातदुच्छेद्य
प्रतिनायकवर्णनं पुरस्कृतो नायकरचितदुच्छेदवर्णनम्
इत्थंभतः प्रकारः) प्रकृति सुन्दरः स्वभावमनोरमः ।

अयमाशयः - नायकवर्णनात् प्राक् प्रतिनायक
 वंश-वीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा तत्पश्चात् तादृशस्यापि
 प्रतिनायकस्य नायकद्वारोच्छेदो वर्ण्यमानो नायकस्यैव
 सारवत्तातिशयं पुण्णातीति पक्षोऽयमस्मान्
 सविशेषमानन्दयति, यतो विजेतव्योत्कर्षवर्णनं हि
 विजेतुरुत्कर्षातिशयं गमयति। अयं च प्रकारः किरातार्जुनीये
 समादृतः, तत्र हि दुर्योधननीत्यादिवर्णनपूर्वकं
 पाण्डवानामुत्कर्षप्रतिपादनं कृतम्। ‘धिनोति नः’
 इत्युक्त्वात्र स्वरूचिः प्रदर्शिता, तत्कारणं त्वत्र प्रकारे
 वस्तुवृत्तस्यानपलापो भवतीति, प्रतिनायकवर्णन-
 पूर्वकनायकवर्णनेन कविप्रतिभा चमत्कारश्च भवति स्फुटं
 इति च बोध्यम् ॥

साभारः- काव्यादर्शस्य श्रीरामचन्द्रमिश्रेणकृत टीकतः।

त्यागाय संभूतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम् ।
यशसे विजिगीषुणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ॥

संग्रहैकपरः प्राप समुद्रोऽपि रसातलम् ।
दाता तु जलदः पश्य भूवनोपरि गर्जति ॥

ગરુડપુરાણો દાશ્નિકચિન્તમ્

भारतीयायाः संस्कृतेः सभ्यतायाश्च यथायथम्
अवगमाय पुराणानां नितरां महत्त्वमस्ति । पुराणानि विहाय न
क्वचिदन्यत्र विपुलेऽपि वाङ्मये प्रचीनसंस्कृतेः सविस्तरं
वर्णनम् उपलभ्यते । सर्वजनहिताय सर्वजनबोधाय च
प्रसादगुणोपेतायाः पद्धत्याः समाश्रयेण पुराणानां महत्त्वं
प्रतिपदम् आलक्ष्यते । आबालवृद्धं पुराणानां महत्त्वं न
कस्यचिद् विपश्चितो विप्रतिपर्तेविषयः । कथाख्यानाश्रयेण
निगृह्यतत्त्वनिरुपणं सरलतया तद्भिव्यक्तिश्च पुराणानां
महत्त्वम् एधयति । पुराणानां तादृशी मनोहरा शैली
भावभिव्यक्तिप्रक्रिया च यथा ज्ञानलवदुर्विदग्धोऽपि मानवो
विविधविषयावगाहि ज्ञानं सरलतया अवान्मोति ।

गरुडपुराणं बहुविधविषयसमावेशाधारक्त्वेन
'विश्वकोषः' इति नामा व्यवहित्ये। उत्तरवर्तीसाहित्ये
अस्य नामान्तरं प्राप्यते यथा-ताक्ष्यः, वैनतेयः सुपर्णः।
पुराणमिदं खण्डद्वये प्राप्यते। पूर्वखण्डे नवविंशात्य-
धिकद्विशतं अध्यायाः सन्ति। उत्तरखण्डे च पञ्चत्रिंशत्
अध्यायाः सन्ति। समग्रेऽपि पुराणसाहित्ये गरुडपुराणस्य
महत्त्वं स्वीकृत्यैव सामाजिकाः मनुष्याः स्वजनमरणोपरान्तं
अस्यैव पारायणं कुर्वन्ति यतो हि अस्मिन् ईदृशाः
दार्शनिकभावाः व्यावहारिकसुभाषिताश्च सन्ति येन मनः
शान्तिमाप्नोति।

गरुडपुराणे वेदान्तसाङ्ख्यभावोपेतानां श्लोकानां महती
संख्या। यथा- ‘अहं ब्रह्म परं ज्योतिर्विष्णु’^१ अत्र
वेदान्ताभिमतब्रह्मणः वर्णनम्।

इन्द्रियाणि समाहत्य विषयेभ्यो मनस्तथा ।

बुद्धयाऽहड्कारमपि च प्रकृत्या बुद्धिमेव च ॥

डॉ. अरुणिमा रानी

प्रवक्त्री संस्कृत विभाग

संयम्य प्रकृतिज्ञापि चिच्छक्त्या केवले स्थितः

पश्यत्यात्मनि चात्मानमात्मानमुपकारम् ॥

अत्र सांख्याभिमत-इन्द्रियसंयमस्य प्रत्याहारस्य,

प्रकृतेः, केवलस्थितेः चिच्छक्त्याः च वर्णनम्।

पुर्यर्थष्टकस्य पद्मस्य पत्राण्यष्टौ न तानि हि।

साम्यावस्था गुणकृता प्रकृतिस्तत्र कर्णिका ॥⁴

अत्र सांख्याभिमत- ‘गुणत्रयाणां साम्यावस्थ प्रकृति
इत्यस्य सिद्धान्तस्य वर्णनम् ।

प्राणायामो जपश्चैव प्रत्याहारोऽथ धारणा ।

ध्यानं समाधिरित्येते षड्योगस्य प्रसाधकाः ॥

अत्र सांख्ययोगाभिमत- प्राणायाम-जप-प्रत्याहार-

षटविंशतितकः शेषक्षतर्विंशतिमात्रकः।

मध्यो दाटशामात्रं त ओहङ्कारं सततं जपेत ॥

हात्तके माले तावे हात्तां बहा पसीदति।

ॐ नमो विष्णवे । षष्ठाक्षरश्च जपत्वा गायत्री
दातृशाख्यग ॥⁷

अत्र 'ॐ नमो विष्णवे' अस्य षष्ठाक्षरस्य मन्त्रस्य जपः
कर्तव्यः।' इति वर्णनम्। 'तस्य वाचकः प्रणवः' इति
योगदशनेऽपि उक्तम्।

आत्मानमात्मना केचित्पश्यन्ति ध्यानचक्षुषा ।

सांख्यबुद्धया तथैवान्ये योगेनानेन योगिनः ॥८॥

ब्रह्मप्रकाशकं ज्ञानं भवबन्धविभेदनम् ।

तत्रैकचित्ता योगो मुक्तिदो नात्र संशयः ॥१७॥

अत्र सांख्ययोगस्य वर्णनम् यथा अग्निः मथनाद् दृश्यते तथैव हरिः ध्यानेन अवाप्यते। ब्रह्मात्मनोर्यदैकत्वं स उत्तमोत्तमः योग उच्यते॥ बाहू रूपेण न मुक्तिः, यमादिपालनेन साङ्ख्यज्ञानेन योगेन वेदान्तश्रवणेनैव मुक्तिरवाप्यते। आत्मनः प्रत्यक्षत्वमेव मुक्तिरभिधीयते।¹⁰

नामरूपक्रियाहीनं सर्वं तत्परमं पदम् ।
 जगत्कृत्वेश्वरोऽनन्तं स्वयमत्र प्रविष्टवान् ॥
 वेदाहमेतं पुरुषं चिद्रूपं तमसः परम् ।
 साऽहमस्मीति मोक्षाय नमः पन्था विमुक्तये ॥
 नत्र सांख्य वेदान्तो भय-सिद्धान्तानां वर्णनम् ।
 यदा सर्वे विमुच्यन्ते कामा यस्य हृदि स्थिताः
 तदामृतत्वमाप्नोति जीवन्तेव न संशयः ॥¹³

अत्र 'प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थं मनोगतान्'
 (गीता...) इति समर्थ्यते । स्मारयति चैतत् पद्यम् गीतायाः
 वेदान्तसारस्य च पद्यद्वयम् ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि
 भस्मसाक्तुरुते तथा । (गीता-4.37)

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य
कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ वेदान्तसारे-

व्यापकत्वात्कथं याति को याति क्व स याति च ।

अनन्तत्वान् देशोऽस्ति अमूर्तित्वादुगतिः कृतः ॥¹⁴

अत्र ब्रह्मणः व्यापकत्वं विभुत्वं अनन्तत्वं अमूर्तित्वञ्च
वर्तितम् ।

जाग्रत्स्वप्नप्रसुप्तञ्च मायया त्रिपुरमुच्यते ।¹⁵

जाग्रत्स्वप्नप्रसुप्तञ्च मायया परिकल्पितम् ।¹⁶

अत्र मायापरिकल्पना वेदान्ताभिमतमेव वर्तते ।

लोव्यवहारदर्शनम्-सतां सज्जनानां सङ्गतिः
सत्सङ्गतिरित्यभिधीयते। गरुडपूराणे लिखितं यत्

सिद्धिकामः पुरुषः सदा सद्भिः सङ्गः प्रकुर्वीत ।
दुर्जनसंगतिश्चाजसं दोषायैव । यथा-

सदूभिः सङ्गं प्रकुर्वीत सिद्धिकामः सदा नरः ।

नासदभिरहिलोकाय परलोकाय वा हितम् ॥¹⁷

यस्य यादृशैः संगतिः, तस्य तादृश्येव परिणतिः। अत एवोच्यते-

संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।

हीयते हि मतिस्तात् हीनैः सह समागमात् ।

समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम् ॥

एते पद्यद्वयं समर्थ्यते ‘सदभिः सङ्गं प्रकुर्वीत्’ इत्येतत्
पद्यम् ।

मूर्खशिष्योपदेशेन द्रष्टस्त्रीभरणेन च ।

दुष्टानां सम्प्रयोगेन पण्डितोऽप्यवसीदति ॥¹⁸

परदारं परार्थजूचं परिहासं परस्त्रिया ।

परवेशमनि वासजूच न कुर्वीत कदाचन ॥¹⁹

पण्डितोऽपि दुःखमाप्नोति यदि मूर्खशिष्याय उपदेशं
ददाति, दुष्टस्त्रीपोषणं दुष्टसङ्गं च करोति। लोके
पञ्चैतानि कार्याणि कदाचित् नैव करणीयम्— परदारागमनं,
परधनहरणं, परिहासकरणं, परस्त्रीहरणं, परगृहे वासः।²⁰

दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः

ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः ॥²¹

दुष्टाभार्यासङ्गं, दुष्टमित्रसङ्गं, उत्तरदायको भृत्यः,
सर्पयुक्ते गृहे वासः मृत्युसदृशम्।²² आपदर्थे धनं धनैरपि
आत्मानं रक्षणीयम्।²³

बुद्धिमान् मनुष्यः अर्धनाशं मनस्तापं, गृहे दुष्चरितानि,
वज्चनम् अपमानं न प्रकाशयेत्।²⁴ यथा करस्थेन कण्टकेन
पादलग्नं कण्टकं उदध्रियते तथैव उपकारगृहीतेन शत्रुणा

शत्रुम् उद्धरणीयम् ॥²⁵ कुत्र न संस्थितिं करणीयम् यत्र
धनिनः श्रोत्रियः ब्राह्मणः राजा नदी वैद्यश्च न विद्यन्ते ।²⁶ यः
मनुष्यः परदारेषु मृवत् पश्यति परद्रव्येषु लोष्ठवत् पश्यति,
सर्वभूतेषु आत्मवत् पश्यति सः पण्डितो वर्तते ।²⁷

उद्योगः साहसं धैर्यं बुद्धिशक्तिः पराक्रमः ।
षड्विधेर्यस्य उत्साहस्तस्य देवोऽपि शड्कृते ॥²⁸

उद्यमः प्रयत्नः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः एते
गुणाः यस्मिन् मनुष्ये विद्यन्ते देवैरपि भीयते तेन । प्रयत्नेनापि
यदि कार्यसिद्धिर्न भवति तर्हि दैवमेव भाग्यमेव प्रमाणम्
पुनरपि पुरुषार्थं त्यक्तव्यम् । परछिद्राणि सर्षपमात्राणि अपि
पश्यति नीचः परं आत्मनः छिद्राणि बिल्वमात्राणि अपि
पश्यन्तपि न पश्यति ।²⁹⁴ परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्यः नित्यं
पद्यमिदं समर्थ्यते एतत् ।

नमन्ति फलिनो वृक्षा नमन्ति गुणिनो जनाः।
गुष्कवृक्षाश्च मूर्खश्च भिद्यन्ते न नमन्ति च ॥

अत्र विनम्रतायाः वर्णनम् । अविनयी पुरुषः शुष्कवृक्षं सदृशः । यथा शुष्कः वृक्षः अनायासेन अल्पश्रमेण भिद्यते तथैव मुख्यश्च ।

एको हि गुणवानपत्रो निर्गमेन शतेन किम् ।

चन्द्रो हन्ति तमास्येको न च ज्योतिः सहस्रशः ॥³¹

अत्र गुणवतः पुत्रस्य वर्णनम् । एकः गुणवान् पुत्रः
श्रेष्ठः निर्गुणेन शतेन पुत्रेण । यथा एकश्चन्द्रः तमो हन्ति न
सहस्रशः ज्योतिः ।

धन्यास्ते ये न पश्यन्ति देशभुग्ं कृलक्षयम् ।

परचित्तगतान्दारान्पूत्रं कुव्यसने स्थितम् ॥³²

ते पुरुषाः धन्या ये देशभड्गं, कुलक्षयं, परचित्तगतान्
दारान् कुव्यसने च स्थितं पुत्रं न पश्यन्ति ।

अधमाः धनमिच्छन्ति धनमानौ हि मध्यमाः ।

उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम् ॥³³

वश्यश्च पुत्रेर्थकरी च विद्या अरोगिता
सज्जनसङ्गतिश्च ।

इष्टा च भार्या वशवर्तिनी च दुःखस्य मूलोद्धरणानि
पञ्च ॥³⁴

अत्र महतां पुरुषाणां धनं मानः । मध्यमाः धनं मानश्च
उभाविच्छन्ति । अधमाः धनमेव इच्छन्ति ।

वशंगतः पुत्रः, अर्थकरी विद्या, आरोग्यं, सज्जनसङ्गतिः, वशवर्तिनी भार्या एतानि पञ्च दुःखस्य मूलोद्धरणानि।³⁵ एवं विविधाः प्रकीर्णाः व्यवहारयोग्याः दर्शनमूलकाः श्लोकाः सिद्धान्तरूपेण गरुडपुराणे प्राप्यन्ते।

सर्वे प्राणिः कालेनैव कवलीक्रियन्ते, सर्वाः प्रजाः
कालेनैव संहियन्ते, सुप्तेषु काल एव जागर्ति, अत
एवोक्तम्-कालो हि दुरतिक्रमः। यथा गरुडपुराणे-

कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः ।

कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥³⁶

परमार्थतः कालस्य कुटिला गतिः। शाङ्गधरपद्धतौ
लिखितम्-

मातुलो यस्य गोविन्द पिता यस्य धनंजयः ।

सोऽपि कालवशं प्राप्तः कालो हि दुरतिक्रमः ॥

सांख्ये वर्णितम्-व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्
दुःखत्रयविनाशनम्' अत्र व्यक्तपदार्थः अनित्याः,
विनाशशीलाः। अव्यक्तमिति मूलप्रकृतिः, ज्ञ इति पुरुषः।
मूलप्रकृतेः पुरुषाद् भिन्नं यत् किञ्चिदपि दृश्यते तत् सर्व
व्यक्तम्, यद् व्यक्तं तत् अनित्यं, विनाशशीलम्। यथा
गरुडपुराणे लिखितम्-

सुखं दुःखं मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते ॥⁴²

अत्र सुखदुःखयोर्चक्रवत् परिभ्रमणं वर्णितम् ।

अत्र सुखदुःखयोर्चक्रवत् परिभ्रमणं वर्णितम् ।

गरुडपुराणे दानविषये लिखितं यत् यः पुरुषः
परधनमपहृत्य दानं प्रयच्छति स दाता नरकं याति, तद् धनं
यस्य तस्यैव तत् फलम् । यथा-

अपहत्य परस्वं हि यस्तु दानं प्रयच्छति ।

स दाता नरकं याति यस्यार्थस्तस्य तत्फलम् ॥⁴³

गरुडपुराणेऽपि भारतीयदर्शनानुसारमेव कर्मफलानुसारं
मानवस्य पुनर्जन्म वर्णितम् । यथा-

आयुः कर्मचारित्रज्ज्व विद्या निधनमेव च ।

पञ्चैतानि विविच्यन्ते जायमानस्य देहिनः ॥⁴⁴

गीतायामपि सिद्धान्तमेतत् समर्थ्यते - 'जातस्य हि ध्रुवो
मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च इति । एवं गरुडपुराणे विविधाः
दार्शनिकभावाः प्रकीर्णाः सन्ति । क्वचित् अष्टाङ्ग्योग-
वेदान्त सांख्यादिसिद्धान्तानां वर्णनरूपेण, क्वचित्
ब्रत-जप-उपवास-प्रार्थनादीनां सानुष्ठानवर्णनेन, क्वचित्
कर्मविपाकादीनां वर्णनेन, क्वचित् पापफलस्य,
प्रायश्चित्तस्य अशौचस्य च विवेचनेन गरुडपुराणस्य
दार्शनिकं महत्त्वं सर्वथा प्रसिध्यति ।

सन्दर्भा टिप्पण्यश्चः

1. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/1
 2. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/13
 3. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/14
 4. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/16
 5. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/18
 6. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/2

7. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/21
 8. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/41
 9. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/227/42
 10. गरुडमहापुराणम् अ०, 227/49–50
 11. गरुडमहापुराणम् अ०, 228/5
 12. गरुडमहापुराणम् अ०, 228/6
 13. गरुडमहापुराणम् अ०, 228/2
 14. गरुडमहापुराणम् अ०, 229/3
 15. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/108/2
 16. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/228/4
 17. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/28/15
 18. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/108/14
 19. गरुडमहापुराणम् अ०, 108/13
 20. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/108/13
 21. गरुडमहापुराणम् अ०, 108/25
 22. गरुडमहापुराणम् अ०, 108/25
 23. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/109/1
 24. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/109/15
 25. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/110/21
 26. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/110/26
 27. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/111/12
 28. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/111/31
 29. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/113/56
 30. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/115/5
 31. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/114/58

- | | |
|----------------------------------|---------------------------------|
| 32. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/115/13 | 40. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/113/24 |
| 33. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/115/113 | 41. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/113/60 |
| 34. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/115/20 | 42. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/113/61 |
| 35. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/115/20 | 43. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/113/67 |
| 39. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/108/7 | 44. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/115/23 |
| 37. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/108/26 | |
| 38. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/109/9 | |
| 39. गरुडमहापुराणम् अ०, 1/113/15 | |

विविधश्लोकाः—

शुचित्वं त्यागिता शौर्यं सामान्यं सुखदुःखयोः ।

दाक्षिण्यं चानुरक्तिश्च सत्यता च सूहृदगृणः ।

मेधावी वाक्पटुः धीरो लघुहस्तो जितेन्द्रियः ।

परशास्त्रपरिज्ञाता च एष लेखक उच्यते ॥

सुस्वरं सुरसं सुरागं मधुराक्षरम् ।

सालडूकारं सप्रमाणं षडूविधं गानलक्षणम् ॥

शुभोपदेश दातारो वयोवृद्धा बहुश्रुताः ।

कुशलाः धर्मशास्त्रेषु पर्युपास्या महर्महः ॥

ददाति प्रतिगृहणाति गुह्यमाख्याति पृच्छति ।

भुड़कते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षण



विद्वुरनीतिरनुसारं मूर्खलक्षणानि

प्रेरणा

एम.ए. प्रथम वर्षम्

- अश्रुतश्च सुनद्वो दरिद्रश्च महामनाः ।
 - अर्थाश्चाकर्मणा प्रेप्सुर्मूढं इत्यच्यते बुधैः ॥
 - स्वमर्थं यः परित्यज्य परार्थमनुतिष्ठति ।
मिथ्या चरति मित्रार्थं यश्च मूढः स उच्यते ॥
 - अकामान् कामयति यः कामयानान्
परिज्यजेत् ।
बलवन्त च यो द्वेष्टि तमाहुर्मूढचेतसम् ॥
 - अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनसित च ।
कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मूढचेतसम्
 - संसारयति कृत्यानि सर्वत्र विचकित्सते ।
चिर करोति क्षिपार्थं स मूढो भरतर्षभ ॥
 - श्राद्धं पितृभ्यो न ददाति दैवतानि न चार्चति ।
सृहन्मित्रं न लभते तमाहुर्मूढचेतसम् ॥
 - अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते ।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः ॥
 - परं क्षिपति दोषेण वर्तमानः स्वयं तथा ।
पश्च क्रुद्ध्यत्यनीशानः स च मूढतमो नरः ॥
 - आत्मनो बलमज्ञाय धर्मार्थं परिवर्जितम् ।
अलभ्यमिच्छन्नैष्कर्म्यान्मूढबुद्धिरहोच्यते ॥
 - अशिष्यं यो राजन् यश्च शून्यमुपासते ।
कदर्य भजते पश्च तमाहुर्मूढचेतसम् ॥



विद्वरनीतिरनुसारं

आशु

एम.ए. प्रथम वर्षम् (संस्कृत)

- धर्मनित्यतां ।

यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥

 2. निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते ।

अनास्तिकः श्रद्धधान एतत् पण्डितलक्षणम् ॥

 3. क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीः स्तम्भो मान्यमानिता ।

यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥

 4. यस्य कृत्यं न जानन्ति मन्त्रं वा मन्त्रितं परे ।

कृतमेवास्य जानन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥

 5. यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुस्णं भयं रतिः ।

समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ॥
 6. यस्य संसारिणी प्रजा धर्मार्थावनुवर्तते ।

कामादर्थं वृणीते यः स वै पण्डित उच्यते ॥

 7. यशाशक्ति चिकीर्षन्ति यथाशक्ति च कुरुते ।

न किंचिद्वमन्यन्ते नराः पण्डितबुद्धयः ॥

 8. क्षिप्रं विजानाति चिरं श्रृणोति

विज्ञाय चार्थं भजते न कामात् ।

नासम्पृष्टो व्युपयुडक्ते परार्थे

तत् प्रजानं प्रथमं पण्डितस्य ॥

 9. नाप्रायमभिवाङ्छन्ति नष्ट नेच्छन्ति शोचितुम् ।

आपत्सु च न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः ॥

 10. निश्चत्य यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणाः ।

कौमुदी
2016-17

विभागीय गतिविधियाँ



महाविद्यालय विभागीय गतिविधियाँ : 2016–2017

Department of Botany

Department of Botany in the College is imparting education to under graduate only. Different branches of Botany are included in the programme of study like Alage, Fungi, Bryophytes, plant pathology, virology, bacteriology, pteridophytes, Gymnosperms, Taxonomy Physiology, Biochemistry, Ecology, Plant Pathology, virology and Biotechnology etc. During 2017, the department was headed over by Dr. Beena Agarwal. Dr. Abha Arora, Dr. Neelkamal Sharma and Avita Chaudhary worked well. Department conclusively contributes towards meaningful research in the field of Botany.

Department of Chemistry

Chemistry department is a Post Graduate department of the College. In this Session 2016-2017 the total strength of students at graduate level is 710 and at post graduate level it is 36.

There are 12 sanctioned posts in the department but presently only Dr. Arvin Panwar and Dr. Sanjay Arora (both on Mandcy) are working in the department for last eight years. Dr. D.P.Singh and Dr. R.K. Garg also joined the department under T-70 scheme of U.P. Government, Mr. D.K. Verma, Dr. Sunil Kumar, Ms Nidhi Mittal, Ms Shabeena Kaukab and Ms Kalpana worked as tutor in this session 2016-17 in the department. The department has 2 well equipped labs for graduate students and 2 for P.G. Students.

In this session one student of M.Sc. Mr.

Abhishek Goel was selected in Army. All activities of department are going well under the leadership of Dr. Rajkumar Agarwal Prof-incharge Chemistry department.

Department of Physics

In this session 2016-17, the most senior teacher of the dept of Physics Dr. G.P. Gupta has completed his service successfully and retired on 7th Jan 2017.

Dr. (Smt.) Anjuli Khandelwal is now heading the department.

Dr. (Smt.) Neelam Sinha has presented three, research papers:

(i) "Soft Skills training with technical education: India Scenario" at National Conference dated 27-28 Feb 2016 at SD Engg. & Tech. (MZN).

(ii) "Electric quadrupole moment of 6 Li" at 19th Annual Conf. of Vijnana Parishad of India, 10-12 Nov 2016 at HNB Garhwal Univ. (Garhwal).

(iii) "6Li ground State wavefunction as an antisym-metrized product of Single particle wavefunction using CGCT" at National conference on Science & Technology for National development, 20-22 Nov 2016 at Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar.

Dr. Rajkumar Agarwal (Ass. Prof.) organised a quiz contest for the college students "Bharat Ko Jano" in this session also. It was held faculty wise on 23, 25 and 27 Jan 2017 for arts, commerce and science faculty respectively. After that a final among the winner of three faculties was conducted on 28/01/17. On the final day of quiz Dr. G.P.



चर्चा समूह का आयोजन भी किया। जिसमें छात्राओं ने अनेक सामाजिक गूढ़ समस्याओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए तथा छात्राओं द्वारा निर्मित फाइल वर्क भी सराहनीय रहा।

विभाग की अंशकालीन प्रवक्ता अनुषी गर्ग ने छात्राओं को कम्प्यूटर की नयी—नयी तकनीकों व उनके उपयोग के बारे में प्रयोगात्मक माध्यम द्वारा बताया व समझाया। साथ ही छात्राओं को उपचारात्मक आहार के बारे में विस्तृत ज्ञान प्रयोगात्मक विधि द्वारा बताया। साथ ही साथ चार्ट द्वारा उन्हें उचित व संतुलित मात्रा में भोजन के बारे में बताया गया।

विभाग में गत वर्षों की भाँति इस बार भी अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी जिसमें छात्राओं ने बढ़—चढ़कर हिस्सा लिया। इसमें दिवाली के संदर्भ में दीया डेकोरेशन, केंडिल डेकोरेशन, मटकी सज्जा, रंगोली, पूजा थाली सज्जा, मेंहदी, वॉल हेंगिंग, बोतल मेकिंग इत्यादि शामिल हैं। प्रतियोगिता के निर्णायक टीम में पूर्व कार्यवाहक प्रधानाचार्य डॉ. आर.के. मित्तल, डॉ. निशा अग्रवाल, डॉ. अलका बंसल का विशेष सराहनीय योगदान रहा। विजयी छात्राओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए।

विभाग के प्रवक्तागण एम.एम. (पी.जी.) कॉलेज शांतिकुंज कन्खल हरिद्वार द्वारा आयोजित कांफ्रैंस में डॉ. शुचि मित्तल के कुशल नेतृत्व में शामिल हुए। साथ ही विभागाध्यक्ष मुख्य स्पीकर के रूप में रही। एक नेशलन कांफ्रैंस ILBS नयी दिल्ली में डॉ. शुचि मित्तल व ममता श्याम ने पोस्टर प्रदर्शन किए।

डॉ. शुचि मित्तल व बीना अग्रवाल गवर्नर्मेंट होम साइंस कॉलेज चण्डीगढ़ में एक नेशनल सेमिनार में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। डॉ. शुचि मित्तल 3 दिन की वर्कशॉप मेदान्ता मेडीसिटी गुडगाँव में भाग लिया। विभाग में बच्चों द्वारा फ्रेशियर पार्टी व फेयरवेल पार्टी का आयोजन भी किया। जिससे कार्यवाहक प्रधानाचार्य डॉ. रीता शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में बच्चों को आशीर्वाद

देने आयी। छात्राओं ने अनेकों कार्यक्रम प्रस्तुत किए। गृहविज्ञान विभाग की सभी विभागीय गतिविधियों में श्री राकेश त्यागी श्री राम सिंह तथा श्रीमती सुदेश का भी योगदान सराहनीय है। वे अपना कार्य पूर्ण लगान, निष्ठा व स्नेहपूर्वक सम्पन्न करते हैं।

भूगोल-विभाग

डॉ. यू.बी. सिंह 'विभागाध्यक्ष के सेवानिवृत्त होने के पश्चात् डॉ. वन्दना त्यागी ने विभागाध्यक्ष के रूप में पद सम्भाला, तथा दस दिवसीय सर्वेक्षण कैम्प ग्राम कूकड़ा में एम.ए. तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित किया गया तथा एम.ए. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण के साथ—साथ पर्यावरण संरक्षण हेतु ग्राम कूकड़ा में वृक्षारोपण किया व जल संसाधन तथा स्वच्छता का प्रति जन चेतना कार्यक्रम किया। भूगोल क्वीज प्रतियोगिता का तथा मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन विभाग स्तर पर कराया गया।

Department of Computer Application

Dr. Rajkumar Agarwal is Prof. Incharge of Computer Application Department. The department of computer application is a self financed department of graduate level. Normally the intake of students in the dept. is 30 but, this year we had only four admission due to some technical problems of university. The dept. offers a vocational course of computer Application for B.Sc. students and well equipped lab. The students of B.Sc in Home Science, Chemistry, Economics and Commerce department are benefitted with the Lab. In this session Ms Neha Mohan and Ms Reena Sharma worked as part time lecturers.

Department of Statistics

Dr. Raj Kumar is the Prof. incharge of

statistics department. This dept. is undergraduate dept. of the college. There are two sanctioned posts in the dept but are vacant for last 12 years. Mr. Deepak Kumar is working as part time lecturer for last 5 years. The intake of the students in the department is 30.

जन्तु विज्ञान विभाग



महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में से जन्तु विज्ञान विभाग एक प्रमुख विभाग के रूप में प्रतिष्ठित है। जहाँ स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं की पढ़ाई होती है। विभाग अपने उत्कृष्ट शोध के लिए D.S.T. व U.G.C. से विशेष रूप से अनुदानित हो चुका है। इस विभाग में प्रयोग करने हेतु आधुनिक तकनीक से सम्पन्न उपकरण मौजूद हैं। विभाग में कार्यरत सभी शिक्षक (अंशकालिक भी) अध्यापन कार्य एवं शोध कार्य में अनवरत लगे हुए हैं। जन्तु विज्ञान विभाग में समय-समय पर

छात्र-छात्राएँ विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। जैसे कि रंगारंग कार्यक्रम, मेंहदी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, पोस्टर फ्रैजेन्टेशन आदि।



राजनीति विज्ञान विभाग

महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग स्नातक स्तर पर 1949 से तथा परास्नातक स्तर पर 1956 से संचालित है, जिसकी शिक्षण व शोध दोनों ही क्षेत्रों में विशिष्ट पहचान रही है। वर्तमान में विभाग में 5 प्राध्यापक क्रमशः विभागाध्यक्षा डॉ० मुक्ता बंसल, डॉ० दानवीर सिंह, डॉ० राजेश कुमार, डॉ० सतीश कुमार तथा डॉ० अनिल कमार कार्यरत हैं।

शैक्षणिक गतिविधियों के साथ ही साथ शोध के क्षेत्र में भी यह सत्र विभाग के लिए उपलब्धियों वाला रहा। 10 दिसम्बर 2016 में मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में विभाग में एक सामूहिक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा बढ़-चढ़कर भाग लिया गया।

16 दिसम्बर 2016 में विभाग में एम.ए. प्रथम व तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों की एक कार्यशाला “राजनीति विज्ञान में अनुसंधान प्रविधि” विषय पर महाविद्यालय के ग्रन्थागार में सम्पन्न हुई, जिसमें पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ० पुरुषोत्तम अग्रवाल द्वारा विशेषतः ग्रन्थ सूची बनाने सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गयी। 24 अप्रैल 2017 में पंचायती राज दिवस के उपलक्ष्य में विभाग में एक विभागीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें नये परिप्रेक्ष्य में

धरातलीय लोकतंत्र के उभरते प्रतिमानों के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा की गयी। इस कार्यक्रम में परास्नातक छात्र-छात्राओं में जागरूकता व उत्साह देखकर सन्तोष का अनुभव हआ।

सत्र के दौरान विभाग के प्राध्यापकों द्वारा विभिन्न राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता की गयी। 04 व 05 नवम्बर 2016 में डॉ सतीश त्यागी द्वारा लखनऊ में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा आयोजित एम.ए. (लोक प्रशासन) के एकेडमिक काउन्सलर्स के दो-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम में सहभागिता की गयी।

28-29 जनवरी 2017 में विभागाध्यक्ष डॉ० मुक्ता बंसल, डॉ० दानवीर सिंह, डॉ० राजेश कुमार तथा डॉ० अनिल कुमार द्वारा “ROLE OF MEDIA IN TERRORISM AND COMMUNALISM: ITS IMPACT ON SOCIETY” विषय पर स्माईल नेशनल कॉलेज, मेरठ में आयोजित व ICSSR द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया गया ।

13–14 फरवरी 2017 में डॉ० अनिल कुमार द्वारा
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के राजनीति
विज्ञान विभाग में आयोजित तथा UGC प्रायोजित
“POLITICAL THINKING IN INDIAN
LITERATURE” शीर्षक पर राष्ट्रीय सेमीनार में
सहभागिता की गयी। साथ ही डॉ० कुमार द्वारा 18–19
फरवरी 2017 में स्माईल नेशनल कॉलेज, मेरठ में
आयोजित UGC प्रायोजित राष्ट्रीय सेमीनार में भाग
लेते हुए “महिलाओं की पंचायत चुनाव में सहभागिता
(मुजफ्फरनगर के विशेष सन्दर्भ में) शीर्षक पर एक
शोध पत्र भी प्रस्तुत किया गया।

04 मार्च 2017 में डॉ० सतीश त्यागी द्वारा चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के राजनीति विज्ञान विभाग में “NATION AND STATE IN INDIA : PAST AND PRESENT” विषय पर आयोजित यू.जी. सी. व इप्सा प्रायोजित राष्ट्रीय सेमीनार में भागीदारी की

गयी। इस संगोष्ठी में देश के 17 अग्रणी विश्वविद्यालयों से आये प्रतिभागियों ने भाग लिया था।

इसी क्रम में 31 मार्च-01 अप्रैल 2017 में विभागाध्यक्षा डॉ० मुक्ता बंसल, डॉ० दानवीर सिंह, डॉ० राजेश कुमार, डॉ० सतीश कुमार तथा डॉ० अनिल कुमार द्वारा चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा “RELEVANCE OF IDEAS OF DR B.R. AMBEDKAR IN PRESENT TIME” विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेते हुए विभिन्न शोधपत्र प्रस्तुत किये गये ।

14–16 अप्रैल 2017 में चौंठे चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में “INDIA’S FOREIGN POLICY:IN SPECIAL REFERENCE TO PAKISTAN” विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में डॉ० अनिल कुमार के द्वारा सहभागिता की गयी। साथ ही डॉ० कुमार के द्वारा 17–30 अप्रैल 2017 की अवधि में “CAPACITY BUILDING PROGRAMME IN SOCIAL SCIENCES” विषय पर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में ICSSR द्वारा प्रायोजित द्वि-साप्ताहिक कार्यशाला में सहभागिता की गयी।

इन सबके अतिरिक्त डॉ० सतीश त्यागी के शोध निर्देशन में ICSSR Sponsored Post-Doctoral Fellowship योजना के अन्तर्गत डॉ० सुनील कुमार द्वारा “ग्रामीण विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व (ई—गवर्नेन्स के सन्दर्भ में) : उत्तर प्रदेश राज्य के गौतम बुद्ध नगर जिले का एक अनुभव मूलक अध्ययन” विषय पर शोधकार्य चल रहा है, जिसकी षट्मासिक प्रगति आख्या ICSSR को प्रेषित की जा चुकी है।

पुस्तकालय रिपोर्ट

महाविद्यालय पुस्तकालय में पठन-पाठन से सम्बन्धित सभी वर्गों के लिए समुचित व्यवस्था है। पुस्तकालय भवन तीन तलों पर विस्तारित है। जिनमें

पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के पूर्व अंक वैज्ञानिक पद्धति से व्यवस्थित हैं। महाविद्यालय में एक मुक्त वाचनालय की भी व्यवस्था है।

सत्र 2016–17 में पुस्तकालय पूर्ण रूप से कम्प्यूटरीकृत हो गया है। इस सत्र में पुस्तकों के आगम-निर्गम का कार्य कम्प्यूटर द्वारा ही किया गया है।

पुस्तकालय INFLIBNET के N-List प्रोग्राम का सदस्य है, जिसके अन्तर्गत पाठकों को 6000 + e-Journals तथा 1,25,000 e - books के Access की सुविधा 24×7 के आधार पर उपलब्ध है।

दिनांक 12/8/2016 को पुस्तकालय में पदम श्री डॉ० एस०आर० रंगनाथन जी के 124 वें जन्म दिवस पर लाइब्रेरीरियन्स डे मनाया गया। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ० पी०के० अग्रवाल एसो० प्रो० पुस्तकालय ने इस अवसर पर डॉ० रंगनाथन जी के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला। प्रो० जे०पी० सविता सेवानिवृत्त प्राध्यापक अंग्रेजी विभाग कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

दिनांक 27/8/16 को डॉ० पी०के० अग्रवाल,
एसो०प्रो० पुस्तकालय ने Modern Rohini Education
Society, New Delhi द्वारा प्रायोजित 2nd Online
शीर्षक से अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

S.F.C. Department

चौंठ चरण सिंह विश्वविद्यालय के सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर में स्व-वित्तपोषित योजना के अन्तर्गत सत्र 2015–16 में बी०कॉम एवं M.Sc. (Food and Nutrition) व M.Sc. (Clothing and Textile) का शुभारम्भ Shri Akhilesh Dutt (Honorary Secretary and Manager) के द्वारा Dr. S.C. Varshney (Co-ordinator) की देख-रेख में हुआ। इसी सृंखला में सत्र 2016–17 में B.P.Ed. कोर्स की भी शुरूआत हुई।

स्ववित्तपोषित विभाग में नियमित कक्षाएँ संचालित की जाती हैं, जो विद्यार्थियों के भविष्य में सफलता का

सूचक है। विभाग के समस्त प्रवक्तागणों के उच्च-शिक्षण कौशल द्वारा विद्यार्थियों को पूर्ण प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। सभी विषयों में पाठ्यक्रमों के विशेष व्याख्यान, मौखिक परीक्षा, सेमिनार तथा दृश्य-श्रव्य संचार माध्यमों के प्रस्तुतिकरण द्वारा उत्तम श्रेणी का स्पष्टीकरण दिया जाता है।

M.Sc. (Foods and Nutrition) व M.Sc. (Clothing and Textile) की Internal Assessment Examination एवं संबंधित विषयों के Assignments की Powerpoint presentation का आयोजन भी समयानुसार सुनियोजित तरीके से कराया जाता है। इसके अलावा B.Com. संकाय में भी सभी विद्यार्थियों के लिए Monthly Test का आयोजन किया जाता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु एवं उनमें प्रतियोगी के विकास हेतु M.Sc. (F & N) तथा M.Sc. (C.T.) व B.com. संकायों के द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

Dr. S.C. Varshney (Co-ordinator) के द्वारा 22. 04.2016 को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु एक Orientation Programme का भी आयोजन किया गया। जिसमें Discipline, Punctuality एवं Professional Preparation. आदि पर प्रकाश डाला।

गतवर्ष में M.Sc.(Food and Nutrition) की छात्राओं ने 26.05.2016 को Ms. Meenakshi Bhardwaj के साथ “SYSCON-2016, AIIMS NEW DELHI में आयोजित Conference में प्रतिभाग किया। जिसके द्वारा छात्र-छात्राओं को Biochemistry एवं Microbiology विषय से संबंधित प्रयोगात्मक जानकारी प्राप्त हुई और साथ ही उन्होंने वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र का प्रारूप समझा। विभिन्न विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों के विचार प्रस्तुतिकरण (Research Presentation) द्वारा छात्राओं का ज्ञानार्जन हुआ।

28.05.2016 को M.Sc. (Clothing and Textile

की छात्राओं ने Ms. Pavi Saini के साथ Saharanpur स्थित “Shivalik Cotysn Ltd.” का भ्रमण किया। जिसके द्वारा छात्राओं ने अपने संबंधित विषय की प्रयोगात्मक जानकारी एवं मशीनरी क्रियाविधि को समझा एवं कपास के द्वारा सूत निर्माण व बुनाई विधि के विषय में ज्ञान प्राप्त किया।

माननीय शिक्षामंत्री के निर्देशानुसार “याद करो कुर्बानी” की थीम के अन्तर्गत दिनांक 18.08.2016–23.08.2016 तक विभिन्न कार्यक्रमों का सुनियोजित रूप से आयोजन किया गया।

★ निबंध लेखन प्रतियोगिता – 13.08.2016

★ स्वतंत्रता दिवस समारोह	—	15.08.2016
★ क्विज-प्रतियोगिता	—	16.08.2016
★ पोस्टर-मेकिंग प्रतियोगिता	—	20.08.2016
★ वाद-विवाद प्रतियोगिता	—	23.08.2016

उपरोक्त दिनांकों के कार्यक्रमों के अनुसार M.Sc. (H.Sc.) एवं B.Com. के विद्यार्थियों द्वारा उत्साहवर्धक प्रस्तुति दी गई एवं अन्तिम दिवस में Dr. S.C. Varshney (Co-ordinator) द्वारा विद्यार्थियों को Certificate प्रदान किए गए।

प्रखण्ड के M.Sc. (food and Nutrition) विभाग में
दिनांक 01.09.2016–07.09.2016 तक “National
Nutrition Meets” के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का
आयोजन किया गया।

★ 01.09.2016 को एक Seminar का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं द्वारा विभिन्न पोषक तथ्यों, स्वास्थ्य एवं बीमारी संबंधित जानकारी प्रस्तुत की गई।

★ 03.09.2016 को “Life Cycle Approach for Better Nutrition” का आयोजन किया गया, जिसमें M.Sc. की Ist Sem. (Previous Year) एवं IIIrd sem (Final Year) की छात्राओं के द्वारा प्रतिभाग किया गया।

★ 07.09.2016 को “National Nutrition Week”

का Celebration किया गया, जिसमें कु. मीनाक्षी भारद्वाज द्वारा छात्राओं को पोषण एवं स्वास्थ्य से संबंधित नए तथ्यों से अवगत कराया। साथ ही Dr. S.C. Varshney (Co-ordinator) द्वारा की छात्राओं को संबोधन प्राप्त हुआ।

विभाग के प्रवक्तागण विद्यार्थियों के विकास हेतु सतत् क्रियाशील रहते हैं, व नवीनतम् विषय वस्तुओं को छात्राओं के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। छात्राओं द्वारा 05.09.2016 को “शिक्षक दिवस” महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों द्वारा कुछ रंगारंग कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया गया। अन्त में डॉ.एस.सी.वार्षेण्य, डॉ.बबीता गुप्ता, श्री धीरज गिरधर, कु.मीनाक्षी भारद्वाज, कु.पवी सैनी, कु.अंजली कश्यप, कु.ज्योति रावत एवं कु.अन्जु आदि के द्वारा विद्यार्थियों को भी शुभकानाएँ दी गईं।

स्ववित्त पोषित खण्ड के द्वारा “SFC-Meet cum cultural Programme” का आयोजन 15.10.2016 को किया गया। जिसमें M.Sc. (H.Sc.), B.Com. व B.P.Ed. के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं और गत सत्र में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। डॉ० आर०के० मित्तल (प्रधानाचार्य) के द्वारा निम्न विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया—

Km. Vaishali Tyagi (Topper) - M.Sc. (Food & Nutrition)

Km. Sakshi Chaudhary (Topper) - M.Sc.
(Clothing & Textile)

Km. Pooja Garg (Topper) - M.Sc. (Ist Year)

M.Sc. (Food & Nutrition) की छात्राओं के द्वारा 30.11.2016 को मेरठ स्थित “Gangol Sahkari Dugdh Utpadak Sangh Parag” का अपनी शिक्षिकाओं (कु. मीनाक्षी भारद्वाज व कु. अंजली कश्यप) के साथ भ्रमण किया। विद्यार्थियों ने Milk & Milk products पर होने वाली Processing को गहन रूप से समझा। साथ ही

Industry के विशेषज्ञों के साथ संबंधित विषय पर चर्चा की।

दिनांक 14.12.16 को Dr. S.C. Varshney (Coordinator) के द्वारा Black Money पर Digital Currency पर प्रकाश डालते हुए व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। साथ ही सभी को Income Tax Return की Advantages, Demonitization के विषय में एवं उसका देशहित पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में गहराई से बताया।

प्रखण्ड के M.Sc. (Food & Nutrition) व M.Sc. (Clothing & Textile) की छात्राओं के साथ कु. मीनाक्षी भारद्वाज, कु. पवी सैनी, कु. अंजली कश्यप, कु. ज्योति रावत ने 04.02.2017 को कन्खल स्थित M.M. (P.G.) College, Haridwar में एक दिवसीय Conference में प्रतिभाग किया। जिसमें “Professional Possibilities of H.Sc. Studies in Today’s Scenario में विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

21.02.2017 को कु. पवी सैनी, कु. मीनाक्षी भारद्वाज, कु. अंजली कश्यप ने चण्डीगढ़ स्थित Government College of Home Science में एक दिवसीय सेमीनार में अपने—अपने संबंधित विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत कर महाविद्यालय की उपस्थिति दर्ज कराई।

सत्र 2016-2017 में B.Com. संकाय के विद्यार्थियों के लिए N.S.S. की इकाई का शुभारम्भ हुआ। इसके एक दिवसीय एवं दिवसीय शिविरों में स्वयं सेवकों व सेविकाओं ने पूर्ण उत्साह के साथ प्रतिभाग किया। विशेष शिविर के तीसरे दिन औचक निरीक्षण में आए Shri Ayodhya Prasad Ji (N.S.S.- Regional Officer Lucknow) तथा (Co-ordinator of NSS-Ch. Charan Singh, Univ.) के कैम्प के सभी कार्यक्रमों की बहुत सराहना की।

डॉ. बबीता गुप्ता के द्वारा मेरठ विश्वविद्यालय में
आयोजित National Seminar “Black Money” में

अपना शोध—पत्र प्रस्तुत किया ।

B.Com. के साथ अनिरुद्ध गुप्ता व छात्रा अक्षरा जैन ने C.P.T. की परीक्षा को उत्तीर्ण कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया।

स्ववित्त पोषित प्रखण्ड निरन्तर प्रयासों के द्वारा प्रगति के पथपर है। सत्र 2016–2017 में M.Sc. (H.Sc.) व B.Com. की द्वितीय वर्ष की कक्षाएँ जुलाई से आरम्भ कर विश्वविद्यालय के इतिहास में एक नया आयाम रचा।

विभाग के विकास व शैक्षणिक गतिविधियों में डॉ. एस.सी. वार्ष्ण्य के साथ डॉ. बबीता गुप्ता, श्री धीरज गिरधर, कु. मीनाक्षी भारद्वाज, कु. पवी सैनी, कु. अंजू, श्री संजीव, कु. सोनाक्षी धीमान, कु. ज्योति रावत, कु. अंजली कश्यप, श्री राहुल मिश्रा एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी श्री मोहित व कु. गीता का पूर्ण सहयोग रहता है।

Department of English

This session (2016-17) began with a rush of aspirants seeking admission in Post-Graduate classes. Many students of semester III secured first division and passed with flying colours. The students of M.A. English, during this session displayed a lot of zeal and



enthusiasm not only in studies but in extra-curricular activities also.



The students of semester III celebrated Teachers Day, which helped to create a special bond between the teachers and the students. An orientation class was held for the students of M.A. Semester I by the teachers of the department on 22nd Sept. 2016.

On 24th Sept. 2016, the teachers of the department along with the students of M.A.



Semester III went on an educational tour to Sardhana Church. After the tour the students were taught how to write a Travelogue and a competition was held in the department to decide the best Travelogue. Sweety Malik, Neeshu, Chavi, Nida Naz, Pooja Gupta were among the winners.

Being motivated by the “Swachh Bharat Abhiyan” the students of M.A. English took brooms and dusters in their hands and cleaned

every nook and corner of the building and compound where the department of English is situated. Their initiative inspired the whole college and a cleanliness movement began in the college. The teachers and students of N.S.S. and Gen. Zorawar Singh Rover Crew and Ranger team took active part in it and a whole week from 17th to 22nd Oct. 2016 was devoted to this task and was observed as “Swachhata Abhiyan Saptah”.

The students of M.A. English also participated in the Quiz—"Bharat ko Jano" and won applause. The students also participated successfully in the debate competition organized in the college on the



topic, “Present Day Education is only a means to employment” The students of M.A. English stood first in both for and against the topic.

On 22nd March 2017 a lecture on

“Romantic Poetry” was delivered by Dr. Vikas Sharma, Off. Principal D.A.V. College, Bulandshar. The lecture was very interesting and compendious.

On 23rd April 2017 “English Day” was celebrated and on this occasion, English teachers from various schools and colleges



were invited. The highlight of this celebration was the lecture delivered by the head of the department, Dr. Alka Bansal on the “Importance of Phonetic Symbols” and the talk of Prof. J.P. Savita who was the chief guest of the programme.

On 24th April 2017 a lecture on the topic



“Formalism in ‘Hamlet’” was delivered by Dr. Bonani Mishra, former Head, Dept. of English, R.G. (P.G.) College, Meerut. The thought-provoking and informative lecture proved very helpful for the students of M.A.

English.

The department of English organized two days' orientation programme on "learning of English Language" on 8th & 9th May 2017 at Primary School, Naseerpur Village, Muzaffarnagar. Through various teaching aids students and their teachers were given tips on 'Reading English language'.

On 16th May 2017, the department of English organized an awareness programme for adolescent girls on Health and Hygiene in Kukra Village, Muzaffarnagar. The young girls were given information about the meaning of health as stated by to W.H.O., and how they can maintain good health and hygiene in limited resources.



Dr. Alka Bansal participated in two days orientation programme for Academic counselors of Master of Arts in English held at IGNOU Regional Centre, Karnal. (4th and 5th Nov. 2016)

इतिहास विभाग

इतिहास विषय के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम का व्याख्यान, किंवज, सेमिनार एवं प्रश्नोत्तरी पद्धतियों द्वारा सुचारू रूप से अध्यापन कराया गया। प्रोजेक्ट



बनाने के लिए विभिन्न शोध–प्रविधियों का ज्ञान छात्रों को कराया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. अजयपाल सिंह ने 01 दिसम्बर 2016 को डी.ए.वी. कॉलेज, बुलन्दशहर में राष्ट्रीय सेमिनार एवं 05–06 मार्च 2017 को चौ. चरण सिंह राजकीय महाविद्यालय छपरौली (बागपत) में राष्ट्रीय सेमिनार (आई.सी.एस.एस.आर, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित) में प्रतिभाग कर अपने पेपर प्रस्तुत किये। डॉ. अशोक त्रिपाठी जी ने चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के इतिहास विभाग में चल रहे “पी. एच–डी. कोर्स वर्क” में लगभग 20 व्याख्यान दिये। जिन्हें शोधार्थियों एवं प्रबुद्ध जनों द्वारा बहुत सराहा गया। विभाग में 07 छात्र शोधरत हैं।

जनरल जोरावर सिंह रोवर क्रयू

कॉलेज में स्थापित जनरल जोरावर सिंह रोवर क्रयू के सदस्यों को समय–समय पर स्काउट प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। कॉलेज की रोवर क्रयू ने 31 जनवरी से 22 फरवरी 2017 तक वी.एम.एल.जी. कॉलेज, गाजियाबाद में आयोजित अन्तर्महाविद्यालयी समागम 2017, में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 22 से 24 फरवरी 2017 तक आगरा कॉलेज, आगरा में आयोजित प्रादेशिक समागम में हमारे कॉलेज की रोवर क्रयू ने चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की क्रयू का प्रतिनिधित्व किया। जिसमें प्रदेश स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। रोवर क्रयू के सदस्य अक्षय कुमार ने राष्ट्रपति पुरस्कार की परीक्षा भी दी। शुक्रताल में कार्तिक गंगा स्नान के अवसर पर कॉलेज के 07 रोवर्स ने मेले में रहकर सेवा की। कुछ रोवर्स ने प्रादेशिक प्रशिक्षण केन्द्र शीतलाखेत (अलमोड़ा) में ट्रेकिंग कोर्स का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

डॉ. अजयपाल सिंह
रोवर लीडर

जनरल जोरावर सिंह रेंजर टीम

कॉलेज में स्थापित जनरल जोरावर सिंह रेंजर

टीम के सदस्यों को समय–समय पर स्काउट प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। 31 जनवरी से 2 फरवरी तक वी.एम.एल.जी. कॉलेज, गाजियाबाद में आयोजित अन्तर्महाविद्यालय समागम में रेंजर टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर अपने महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। चार रेंजर्स ने राष्ट्रपति पुरस्कार परीक्षा भी दी। अपने महाविद्यालय में आयोजित साप्ताहिक स्वच्छता अभियान में भी रेंजर टीम ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। डॉ. अरुणिमा रानी (रेंजर लीडर) ने 09.07.2017 से 15.07.2017 तक डी.ए.वी. इंस्टर कॉलेज, मुजफ्फरनगर में आयोजित ‘एडवांस रेंजर लीडर कोर्स’ को सफलतापूर्वक किया।

डॉ. अरुणिमा रानी
रेंजर लीडर

हिन्दी विभाग

सत्र 2016–2017 में विभाग के सभी शिक्षकों का चयन वेतनमान लागू हुआ। डॉ. निकेता के निर्देशन में तीन शोध–छात्र अनिरुद्ध कुमार, प्रीति सैनी, राजेश्वरी देवी तथा डॉ. विश्वम्भर पाण्डेय के निर्देशन में चार शोध छात्र–संदीप कुमार, रत्नाकर यादव, अर्जुन यादव, ललित सारस्वत पंजीकृत हुए। डॉ. विश्वम्भर पाण्डेय ने पी.एच–डी. कोर्स वर्क कर रहे शोध छात्रों को उत्तर आधुनिकता, रूपवाद और स्त्री–विमर्श पर मेरठ कॉलेज मेरठ में व्याख्यान दिया। शोध पत्रिका ‘शोध–वैचारिकी’ का सम्पादन अनवरत चल रहा है। छात्रा प्रीति सैनी ने जे.आर.एफ. तथा स्वाति एवं छात्र दीक्षित ने नेट परीक्षा उत्तीर्ण की। अर्जुन यादव एवं राजेश्वरी देवी का चयन टी.जी.टी. के लिए हुआ है।

संस्कृत विभाग

2016–17 सत्र का आरम्भ संस्कृत विभाग द्वारा यज्ञ के साथ किया गया। संस्कृत विभाग के छात्र प्राध्यापकों के साथ 17.3.2017 को शैक्षणिक भ्रमणार्थ हस्तिनापुर गए। विभाग की प्राध्यापिका डॉ.



विजयलक्ष्मी ने एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सहित चार संगोष्ठियों में पत्र प्रस्तुत किए। इनका एक लेख भी गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

डॉ. चरणसिंह ने संस्कृत-सम्भाषण-शिविर लगवाया तथा पाठ्य गतिविधियों के सुचारू संचालन में अपना योग दिया।

डॉ. अरुणिमा रानी ने छः संगोष्ठियों में पत्र प्रस्तुत किए तथा दो कार्यशलाओं में प्रतिभागिता की। इनके चार शोध विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

डॉ. शुचि अग्रवाल ने छः संगोष्ठियों में शोधपत्रों का वाचन किया तथा दो कार्यशालाओं में भी वे उपस्थित रहीं।

इस सत्र में संस्कृत विभाग की तीन छात्राओं को सरकारी सेवाओं का अवसर मिला। जिनमें अर्चना आर्या तथा मीनू शर्मा दिल्ली के विद्यालयों में सेवारत हैं तथा सरिता मुजफ्फरनगर में।

लिलित कला विभाग

स्त्र 2016–17 सत्र में ललित कला विभाग द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। 20 जनवरी 2017 को मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने मतदान के प्रति मतदाताओं में मतदान के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए चित्रों के माध्यम से जागरूक किया।

दिनांक 18 मार्च 2017 को बी.ए. तृतीय वर्ष के

विद्यार्थियों के लिए आधुनिक भारतीय कला के इतिहास पर आधारित एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में आधुनिक भारतीय कला के इतिहास से सम्बन्धित एक वातुनिष्ठ प्रश्न पत्र प्रतिभागियों को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले तीन विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

दिनांक 18 से 20 मार्च 2017 में ललित कला विभाग द्वारा तीन दिवसीय चित्रकला कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. रीता शर्मा के माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर व मार्त्यापण करके किया।

इस कार्यशाला में अतिथि कलाकारों ने कला की विभिन्न विधाओं में डिमोन्स्ट्रेशन विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किये। अलीगढ़ शहर के श्री प्रताप सिंह ने पोट्रेट डिमॉस्ट्रेशन प्रस्तुत करते हुये पोट्रेट तैयार करने की बारीकियाँ से विद्यार्थियों को परिचित कराया। लखनऊ आर्ट कॉलेज के विद्यार्थी रहे श्री पवन कुमार ने आज के समय में चित्रकला की लुप्त होती विधा बाग चित्रण तकनीक में अपना डिमॉस्ट्रेशन किया। उन्होंने बाग चित्रण बनाने की प्रक्रिया को क्रम से विद्यार्थियों को समझाया। चित्रकला कार्यशाला के शुभारम्भ अवसर पर ही इतिहास विभाग के डॉ. अशोक त्रिपाठी ने सभागार में उपस्थित कला विद्यार्थियों व कलाकारों के



समक्ष कला के इतिहास पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस पर विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों के चित्र सृजन किये। कार्यशाला के समापन अवसर पर तैयार की गई कलाकृति को प्रदर्शन के लिए रखा गया।

समापन के अवसर पर प्राचार्या डॉ. रीता शर्मा, डॉ. शुचि, डॉ. बीना, डॉ. अशोक त्रिपाठी, डॉ. शेखर, डॉ. सतीश त्यागी इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में संजय दत्त, बचनदारा, चौंदवीर, पवन



कुमार, कुँवर पाल सिंह, प्रशान्त पॉलीवाल, पुनीत मणि, हिमांशु, मौ. शकील, रितेश, मेघा, लविनिका, रितिका, प्रीति, श्वेता, ज्योति इत्यादि का सहयोग रहा।

वाणिज्य-विभाग

वाणिज्य विभाग के लिए यह वर्ष 2016–17 विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ आरोकेमित्तल जून 2016 से कार्यवाहक प्राचार्य थे, इस वर्ष सेवानिवृत्त हो रहे हैं। उनके स्थान पर डॉ एसोसीओवार्ष्य विभागाध्यक्ष का कार्य देख रहे हैं। इसी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एसोसीओवार्ष्य अब जून 2017 से कार्यवाहक प्राचार्य के पद पर कार्य कर रहे हैं तथा विभागाध्यक्ष डॉ एसोसीओवार्ष्य ने तीन शोधपत्र यूजीओसीओ द्वारा अनुमोदित रिसर्च जर्नल में छपवाकर विभाग का नाम रोशन किया। विभागाध्यक्ष

डॉ० एस०सी०वार्ष्य के निर्देशन में तीन शोधार्थियों ने पी.एच०डी० की उपाधि हेतु शोध ग्रन्थ विश्वविद्यालय में जमा करवाये हैं। डॉ० वार्ष्य अपने महाविद्यालय की NAAC मूल्यांकन की समिति के समन्वयक के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। डॉ० निशा अग्रवाल महाविद्यालय की अनुशासन समिति में उप-मुख्य अनुशासक के रूप में अपना सक्रिय एवं महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।

विभाग के सहयोगी डॉ० पी० के० श्रीवास्तव एवं
डा०विकास वर्मा महाविद्यालय के छात्रों को NET/
SLET परीक्षा की तैयारी कराने में महत्वपूर्ण भूमिका
निभा रहे हैं।

डॉ.एस.पी. अग्रवाल, डॉ.जे.के.मित्तल तथा डॉ.आर.के. मित्तल लम्बी सेवा के पश्चात् इस वर्ष सेवानिवृत्त हो रहे हैं। यह महाविद्यालय तथा विशेश रूप से वाणिज्य-विभाग उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए सदैव आभारी रहेगा।

ઇહનું અધ્યયન કેન્દ્ર

डॉ. एस.सी. वार्ष्णेय
समन्वयक

इग्नू का प्रमुख उद्देश्य समाज में रोजगारपरक शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर ऐसे युवा जिनकी योग्यता 10वीं पास हो, वे इग्नू से विभिन्न प्रकार पाठ्यक्रम यथा स्वदेशी कला, व्यवहार, दृश्यकला एवं चित्रकारी, अनुप्रयुक्तकला, प्रदर्शनपरक कला-रंगमंच, हिन्दुस्तानी संगीत, उर्दू भाषा आदि कर सकते हैं। इन कार्यक्रमों की न्यूनतम अवधि 6 माह तथा अधिकतम अवधि 2 वर्ष की है। ये कार्यक्रम हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों माध्यमों में उपलब्ध हैं। इन कार्यक्रमों को 18 वर्ष या अधिक आयु वर्ग वाले शिक्षार्थी कर सकते हैं। इग्नू से बी.पी.पी. करने के बाद शिक्षार्थी तीन वर्षीय स्नातक कार्यक्रम में भी प्रवेश ले सकते हैं। बी.पी.पी. करने के लिए केवल पढ़ना-लिखना आना चाहिए।

कृषि तथा सम्बन्धित क्षेत्र में ज्ञान एवं कौशल की वृद्धि

करने के लिए कृषि पृष्ठभूमि वाले शिक्षार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाये गये हैं। इनमें मुख्यतः रेशम कीट पालन, जैविक खेती, जल संचयन एवं प्रबन्धन, कुक्कुट पालन, मधुमक्खी पालन, वृक्षारोपण प्रबन्धन, जल कृषि, फलों एवं सब्जियों से मूल्य संबंधित उत्पादों में शिक्षण, डेयरी प्रौद्योगिकी, अनाजों, दालों और तिलहनों से प्राप्त मूल्य सम्बंधित उत्पाद, मछली उत्पाद प्रौद्योगिकी, जल संभारण (वाटरसेड) प्रबन्धन इत्यादि सम्मिलित हैं। इन कार्यक्रमों में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए शुल्क में 50 प्रतिशत की छूट है।

इन्हीं द्वारा गृहणियों की क्षमता वृद्धि के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल, पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा, महिला सशक्तिकरण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा तथा स्वास्थ्य देखभाल, नवजात शिशु और बच्चों की देखभाल, गृह आधारित देखभाल, किशोर एवं परामर्श, भोजन एवं पोषण, पोषण एवं बाल देखभाल आदि पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं।

इग्नू ने विकास कार्य से जुड़े हुए अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विकास कार्यकर्ताओं के लिए विभिन्न कार्यक्रम यथा आपदा प्रबन्धन, ग्राम विकास, शहरी नियोजन, खाद्य सुरक्षा, पंचायत स्तरीय प्रशासन एवं विकास, समाज कार्य, मानवाधिकार, उपभोक्ता संरक्षण आदि भी प्रमाण पत्र, डिप्लोमा तथा डिग्री रूप में चला रखे हैं।

कानून के शिक्षार्थियों एवं सलाहकारों के लिए ह्यूमन राईट्स, पैरालीगल, प्रैकिट्स, साइबर कानून, पेटेन्ट प्रैकिट्स, उपभोक्ता संरक्षण, मानव तस्करी, अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय कानून आदि में प्रमाण पत्र डिप्लोमा, स्नातक आदि चलाये जाते हैं।

मुजफ्फरनगर जनपद में सनातन धर्म महाविद्यालय में स्थित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का अध्ययन केन्द्र वर्ष 1999 से लगातार प्रतिवर्ष बहुत बड़ी संख्या में शिक्षार्थियों को उनकी आवश्यकताओं, क्षमताओं, रूचियों तथा परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए उच्च कोटि

की शिक्षा प्रदान कर रहा है। इस अध्ययन केन्द्र में डिग्री, डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कोर्स के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था है। डिग्री पाठ्यक्रमों में अंग्रेजी, हिन्दी, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, ग्रामीण विकास वाणिज्य तथा एम.कॉम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। साथ ही एम.बी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस-सी. बी.एस.डब्लू., बी.लिब. (साइंस) तथा बी.सी.ए. के पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं। डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में पी.जी. डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन, पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन, डिप्लोमा इन न्यूट्रीशन एंड हैल्थ एजूकेशन, डिप्लोमा इन क्रिएटिव राइटिंग इन इंगिलिश उपलब्ध हैं। सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों में बी.पी.पी., सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग, सर्टिफिकेट इन गाइडेन्स, सर्टिफिकेट इन न्यूट्रीशन एंड चाइल्ड केयर, सर्टिफिकेट इन टीचिंग आफ इंगिलिश, सर्टिफिकेट इन टूरिज्म स्टडीज, सर्टिफिकेट इन ह्यूमन राइट्स, सर्टिफिकेट इन लेबर रूरल डेवलपमेंट तथा सर्टिफिकेट इन लाइब्रेरी साइंस आदि उपलब्ध हैं। डिग्री पाठ्यक्रमों की अवधि दो/तीन वर्ष, डिप्लोमा की एक वर्ष तथा सर्टिफिकेट कोर्स की 6 माह है।

इग्नू सेवारत शिक्षकों हेतु नौकरी के साथ दूरस्थ शिक्षा से बी.एड. (बैचलर ऑफ एजुकेशन) करने का स्वर्णिम अवसर नये नियमों के अन्तर्गत प्रदान करता है।

शिक्षार्थियों की सुविधा हेतु अध्ययन केन्द्र में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा ही काउंसलिंग की व्यवस्था की गयी है। सनातन धर्म महाविद्यालय में स्थित यह अध्ययन केन्द्र उच्च एवं रोजगारपरक शिक्षा के लिए आवश्यक समस्त संसाधनों एवं सुविधाओं से परिपूर्ण है।

अध्ययन केन्द्र को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए समन्वयक एवं कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. एस.सी.वार्ष्ण्य, सहायक समन्वयक डॉ. अजयपाल, कार्यालय सहायक श्री अन्जुल भूषण, श्री डी.के. जैन व चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी श्री फेरु सिंह, ब्रजपाल व राजेन्द्र कुमार पूर्ण निष्ठा व लगन से

कार्य कर रहे हैं। पूर्ण आशा है कि शीघ्र ही क्षेत्र के शिक्षार्थियों को इस केन्द्र पर उपरोक्त पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य उपयोगी पाठ्यक्रमों के अध्ययन की सुविधा भी पूर्ण गुणवत्ता के साथ प्राप्त होगी।

अर्थशास्त्र विभाग

अर्थशास्त्र विभाग में सत्र 2016-17 में स्नातक एवं स्नातकोत्तर का पठन-पाठन सुचारू रूप से कराया गया। विभाग में अध्यापन कार्य के साथ-साथ विभागीय स्तर पर एम.ए. के छात्र एवं छात्राओं के लिए कवीज व सेमीनार के आयोजन भी कराये गये। डॉ. श्रीमती रीता शर्मा अध्यक्ष, डॉ. राजेन्द्र अग्रवाल एवं डॉ. संगीता सिंघल, डॉ. एस.सी. दुआ जी के संयुक्त प्रयासों से विभाग में अध्यापन कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न कराये गये।

अध्यक्षा डा. रीता शर्मा जी ने 27 जनवरी 2017 में महाविद्यालय के प्राचार्या का कार्यभार ग्रहण किया। सत्र 2016-17 विभाग में डॉ. आर.एन.पी. श्रीवास्तव तथा डॉ. वी.के. गुप्ता के निर्देशन में दो विद्यार्थियों को पी-एच.डी. डिप्ली चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदान की गई। विभाग में लघुशोध का कार्य भी सम्पन्न कराया गया। विभाग के विद्यार्थियों की महाविद्यालय में होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता रही।

एन.सी.सी. रिपोर्ट

सत्र 2016–17 में एन.सी.सी. की गतिविधियाँ सुचारू रूप से सम्पन्न हुई। महाविद्यालय में गठित 82 यू.पी. बटालियन की 2 प्लाटून के प्रथम वर्ष में 44 कैडेट्स का नामांकन हुआ (31 पुरुष व 13 महिला कैडेट्स), द्वितीय वर्ष में 32 कैडेट्स थे (23 पुरुष व 9 महिला कैडेट्स) और तृतीय वर्ष में 26 कैडेट्स थे (24 पुरुष व 2 महिला कैडेट्स)।

महाविद्यालय के कैडेटों ने एन.सी.सी. की सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जिन्हे निम्न बिन्दुओं द्वारा दर्शाया गया है:

1. महाविद्यालय के 4 कैडेटों का चयन एन.सी.सी. के

राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता के लिए हुआ जिनके नाम (a) दीपिका खरब (वालीबॉल), (b) अक्षय कुमार (हॉकी), (c) राहुल कुमार (फुटबॉल), (d) मोहित (फुटबॉल)।

2. महाविद्यालय के खेल मैदान पर कमान अधिकारी कर्नल धर्मन्द्र गुप्ता (शौर्य चक्र विजेता) द्वारा कैडटों को यद्धु का अभ्यास कराया गया।

3. महाविद्यालय की फायरिंग रेंज पर सभी कैडेट्स का 0.22 रायफल से अभ्यास कराया तथा लै. कर्नल अमरदीप त्यागी (प्रशासनिक अधिकारी) द्वारा निशानेबाजों के चयन के लिए टेलेंट सर्च अभियान भी चलाया।

४. एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा महाविद्यालय के खेल मैदान में वृक्षारोपण किया गया।

5. विशेष चयनित एन.सी.सी. कैडेटों के द्वारा महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में अतिथियों को गार्ड किया गया।

6. एन.सी.सी. दिवस (27 नवम्बर) के उपलक्ष में महाविद्यालय के कैडेटों द्वारा 82 यू.पी.बटालियन में जाकर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये और मेरठ गुप के गुप कमांडर ब्रिगेडियर यशपाल सिंह ने कैडेटों को भारतीय सेना के प्रति अभिप्रेरित किया ।

7. 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कैडेटों ने केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरनगर में योग का शानदार प्रदर्शन किया।

8. अन्तर्महाविद्यालय फुटबॉल प्रतियोगिता और महाविद्यालय वार्षिक एथलेटिक मीट में कैडेटों द्वारा आयोजन में पूर्ण सहयोग दिया गया।

9. 'सी' व 'बी' सर्टिफिकेट परीक्षा में महाविद्यालय के कैडेट्स लगभग 100 प्रतिशत में उत्तीर्ण हुये, जिसमें कुमारी आयुषी ने 'सी' सर्टिफिकेट परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ 'ए' ग्रेड प्राप्त किया। परीक्षा लेने आये कर्नल गोस्वामी ने महाविद्यालय के कैडेटों की भरपूर प्रशংসা भी की।

डॉ. एस.एन. सिंह
एन.सी.सी. प्रभारी

शारीरिक शिक्षा विभाग की रिपोर्ट

शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा सत्र 2016–17 में तीन पाठ्यक्रमों का सुचारू रूप से संचालन किया गया। यह तीन पाठ्यक्रम निम्नलिखित हैं:

- बी.ए. शारीरिक शिक्षा मुख्य विषय के साथ।
 - बी.ए., बी.एस.सी. एवं बी.कॉम. में (स्नातक स्तर पर) तीनों वर्षों के लिए शारीरिक शिक्षा अनिवार्य व क्वालीफाईंग विषय के रूप में।
 - बी.पी.एड.-बैचलर इन फिजिकल एजुकेशन दो वर्षीय डिग्री कोर्स।

शारीरिक शिक्षा विभाग में सत्र 2016-17 में स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बी.पी.एड. दो वर्षीय पाठ्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। महाविद्यालय को यह पाठ्यक्रय रेगुलर कोर्स बी.ए. शारीरिक शिक्षा मुख्य विषय के कारण कम्पोजिट स्कीम के अन्तर्गत एनसीटीई और चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की सम्बद्धता के पश्चात् प्रारम्भ किया गया। यह पाठ्यक्रम महाविद्यालय के विद्यार्थियों जिनकी रुचि शारीरिक शिक्षा में थी के लिए सुनहरा भविष्य लेकर आया है, उन्हें इस हेतु भटकने की अब आवश्यकता नहीं है। विश्वविद्यालय द्वारा बी.पी.एड. में प्रवेश के पश्चात् महाविद्यालय द्वारा 14 अक्टूबर 2016 को कक्षाएँ प्रारम्भ की गई। जिसमें बी.पी.एड. के प्रथम वर्ष में आठ सैद्धान्तिक विषय के अतिरिक्त प्रयोगात्मक कक्षाओं हेतु टीचिंग अभ्यास के अन्तर्गत सामान्य पाठ योजना, विशिष्ट पाठ योजना व क्लास रूम टीचिंग, ट्रैक एण्ड फील्ड, खो-खो, जिमनास्टिक, बैडमिंटन व योगा की कक्षायें सुचारू रूप से चलाई गईं। बी.ए. शारीरिक शिक्षा की कक्षायें पूर्व की भांति सुचारू रूप से चली।

स्नातक स्तर पर क्वालीफाईंग विषय शारीरिक शिक्षा एवं खेल की सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक कक्षायें शिक्षकों के अतिरिक्त बी.पी.एड. के विद्यार्थियों ने अपने टीचिंग प्रैक्टिस की कक्षाओं के अन्तर्गत ली। शारीरिक शिक्षा

विभाग द्वारा अकादमिक एवं खेलों से सम्बन्धित गतिविधियों का व्यौरा निम्नलिखित है:

अकादमिक गतिविधियाँ—

1. राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में 28 व 29 अगस्त 2016 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय 'Marking of Track & Field' तथा 'How to Draw Fixture of the Tournaments' था। इस कार्यशाला में लगभग 350 पंजीकरण हुए। कार्यशाला में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठ कैम्पस, सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ, एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर, दिल्ली विश्वविद्यालय आदि से डेलीगेट आये। इसका उद्घाटन नगर विधायक कपिल देव अग्रवाल जी ने किया और समापन व सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि एस.डी. कॉलेज मुजफ्फरनगर के प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष श्री सोमांश प्रकाश जी थे।

2. सेमिनार, कॉन्फ्रेंस व वर्कशाप में शिक्षक व विद्यार्थियों की प्रतिभागिता—

(a) नई दिल्ली के भारत स्काउट भवन में फिजिकल एजुकेशन फाउन्डेशन ऑफ इण्डिया द्वारा (युवा व खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित) दो दिवसीय (16 व 17 दिसम्बर 2016) शारीरिक शिक्षा की राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस (NCPE-16) में शारीरिक शिक्षकों, बी.पी.एड. एवं बी.ए. शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थियों ने अपने लेख व शोधपत्र पढ़े तथा उच्च कोटि के पत्रों को ISBN युक्त प्रोसीडिंग में भी छापा गया। डॉ. एस.एन. सिंह को इस कॉन्फ्रेंस में रिसोर्स पर्सन के रूप में आमन्त्रित किया गया।

(b) कुरुक्षेत्र के इन्दिरा गाँधी नेशनल पीजी कॉलेज, लाडवा में हरियाणा उच्च शिक्षा आयोग द्वारा में आयोजित एक दिवसीय (25 जनवरी 2017) राष्ट्रीय सेमीनार जिसका शीर्षक 'Drugs Menace on Sports Culture' था। इस सेमीनार में शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अपने लेख व शोधपत्रों को पढ़ा। डॉ. एस.एन.सिंह इस सेमीनार में 'किनोट स्पीकर' थे।



(c) एम.एम. कॉलेज, मोदीनगर में दिनांक 28 फरवरी 2017 को आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार जिसका शीर्षक 'National Integration and Empowerment through Physical Education and Sport' था। इस सेमीनार में शारीरिक शिक्षकों व विद्यार्थियों ने अपने लेख पत्र व शोध पत्र प्रस्तुत किये, और चुनिंदा लेखपत्र व शोधपत्रों को ISBN युक्त प्रोसीडिंग बुक में भी छापा गया। डॉ. एस.एन. सिंह को इस सेमीनार में रिसोर्स पर्सन के रूप में आमन्त्रित किया गया।

(d) चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के बृहस्पति भवन में आयोजित तीन दिवसीय (14 से 16 अप्रैल 2017) अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस मेरठ कॉलेज, मेरठ, एसोसिएशन फोर इनोवेटिव एजुकेशन तथा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के संयुक्त संयोग द्वारा आयोजित किया गया। इस कॉन्फ्रेंस का शीर्षक 'Multi Disciplinary International Conference on Globalization and Well Being' था। इस कॉन्फ्रेंस में शारीरिक शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने अपने लेख पत्र व शोध पत्र प्रस्तुत किये। डॉ. एस.एन. सिंह को 15 अप्रैल 2017 के तकनीकी सेशन में चेयरपर्सन बनाया गया तथा एक अतिरिक्त सेशन में डॉ. सिंह ने 'Management of Fitness and Wellness through Physical Education and Sports Sciences' पर अपना व्याख्यान दिया।

(e) भगवंत कालेज ऑफ एजुकेशन द्वारा 29 अप्रैल 2017 को 'Importance of Yoga in Education' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. एस.एन. सिंह को मुख्य वक्ता के रूप में आमन्त्रित किया गया।

(f) Surevin International School, Modinagar में 21 मई 2017 को आयोजित वर्कशाप कम सेमीनार जिसका शीर्षक 'Human Empowerment through Physical Education and Sport' था। इस सेमीनार में शारीरिक शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अपने लेख पत्र पढ़े। डॉ. एस.एन. सिंह को इस वर्कशाप कम सेमीनार

में किनोट स्पीकर के रूप में आमन्त्रित किया गया।

(g) मेरठ के गुरु तेग बहादुर पब्लिक स्कूल में दिनांक 23 जुलाई 2017 को आयोजित 'National Seminar on Upcoming Trends in Sports and Physical Education' में शारीरिक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अपने लेख व शोध पत्र पढ़े। डॉ. एस.एन. सिंह को इस सेमीनार में किनोट स्पीकर के रूप में आमन्त्रित किया गया।

(h) मुजफ्फरनगर में दिनांक 30 जुलाई 2017 को डी. एस. पब्लिक स्कूल में 'One Day National Seminar on Renaissance of Sports and Yoga : Strategies Challenges and Policies' का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अपने लेखपत्र एवं शोधपत्र पढ़े। खुशी की बात यह है कि इसका आयोजन एस.डी. कॉलेज के शारीरिक शिक्षा विभाग, पेफी मुजफ्फरनगर चैप्टर और डी. एस. पब्लिक स्कूल के संयोग से किया गया। इस सेमीनार के आर्गनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. एस.एन. सिंह तथा कोर्डिनेटर डॉ. कुलदीप मलिक थे।

(i) महाविद्यालय में 9 मई 2017 को महाराणा प्रताप जयंती के उपलक्ष्य में शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके मुख्य वक्ता डॉ. अशोक त्रिपाठी थे।

(j) 6 मई 2017 को विभाग द्वारा 'Blood Pressure Measurement Camp' का आयोजन किया गया जिसमें बी.पी.एड. के विद्यार्थियों ने शिक्षकों के सहयोग से महाविद्यालय परिवार के सदस्यों का रक्त दाब मापा।

(k) विभाग द्वारा 'One Day Personality Development Workshop' का आयोजन 3 नवम्बर 2016 को किया गया, जिसकी रिसोर्स पर्सन डॉ. अलका बंसल (विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग)थी।

(l) डॉ. मुकेश सोलंकी (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर) तथा डॉ. निम्ब. आर. कृष्णा (रानी लक्ष्मीबाई शारीरिक शिक्षा संस्थान, ग्वालियर) द्वारा बी.पी.एड. के विद्यार्थियों को व्याख्यान दिये गये।

(m) कर्नल धर्मन्द्र गुप्ता (शौर्य चक्र विजेता) द्वारा बी. पी.एड. के विद्यार्थियों के लिये शूटिंग पर विशेष कक्षा का आयोजन किया गया।

(n) विभाग द्वारा सात दिवसीय सफाई अभियान महाविद्यालय के प्रांगण में चलाया गया।

(o) विभाग द्वारा एक दिवसीय वृक्षारोपण का अभियान महाविद्यालय में चलाया गया।

(p) नई दिल्ली में मैक्स हॉस्पिटल और पैफी के संयुक्त प्रयास द्वारा 'Training on Basic Life Support' का आयोजन 25 जून 2017 को आई.आई.टी दिल्ली कैम्पस में किया गया। जिसमें बी.पी.एड. के चार विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

खेल गतिविधियाँ—

सत्र 2016–17 में महाविद्यालय की खेल गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित करने का कार्य शारीरिक शिक्षा विभाग और गेम्स एवं स्पोर्ट्स समिति ने किया। खेलों की उपलब्धियों को निम्न बिन्दुवार बताया गया है:

(a) बी.पी.एड. प्रथम वर्ष में अध्ययनरत छात्रा कु. अर्पिता सैनी ने मैराथन एवं क्रॉसकन्ट्री में महाविद्यालय, जनपद और प्रदेश का नाम रोशन किया। इस सत्र में सम्पूर्ण देश के विभिन्न राज्यों के शहरों में आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय या तृतीय स्थान अर्जित किया। जिसमें इस सत्र में अर्पिता ने लगभग 6 लाख रुपये की धनराशि व पदक पुरस्कार के रूप में अर्जित की। विभिन्न प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नलिखित है—

(i) 26 जून 2016 को 21 किलोमीटर शिमला मैराथन में प्रथम स्थान।

(ii) 6 अगस्त 2016 को बनवासा में आयोजित 21 किलोमीटर हड्डो—नेपाल मैत्री रेस में द्वितीय स्थान।

(iii) 27 अगस्त 2016 को नैनीताल में आयोजित 10 किमी मानसन माउंटेन मैराथन में प्रथम स्थान।

(iv) 9 सितम्बर 2016 को जयपुर में आयोजित 10 किमी हल्दीघाटी मैराथन में पथम स्थान।

(v) 16 सितम्बर 2016 को नई दिल्ली में आयोजित 10

किमी राजधानी मैराथन में प्रथम स्थान।

(vi) 23 अक्टूबर 2016 को गुड़गाँव में आयोजित 21 किमी मिलेनियम मैराथन में प्रथम स्थान।

(vii) 6 नवम्बर 2016 को नई दिल्ली में आयोजित 10 किमी चैलेंज में प्रथम स्थान।

(viii) 13 नवम्बर 2016 को हरिद्वार में आयोजित गंगा हॉफ मैराथन में तृतीय स्थान।

(ix) 11 दिसम्बर 2016 को देहरादून में आयोजित देहरादून हॉफ मैराथन में तृतीय स्थान।

(x) 18 दिसम्बर 2016 को जयपुर में आयोजित पिंक सिटी हॉफ मैराथन में दसरा स्थान।

(xi) 7 जनवरी 2017 को विजयवाडा में आयोजित 21 किमी अमरावती मैराथन में दसरा स्थान।

(xii) 17 जनवरी 2017 को नई दिल्ली में आयोजित 5 किमी दिल्ली परिषद मैराथन में प्रथम स्थान।

(xiii) 5 फरवरी 2017 को जयपुर में आयोजित 21 किमी मैराथन में तीसरा स्थान।

(xiv) 5 मार्च 2017 को जालंधर में आयोजित सिटी मैराथन में दसरा स्थान।

(xv) 19 मार्च 2017 को गुड़गाँव में आयोजित 10 किमी साईरल मैराथन में पथम स्थान।

(xvi) 26 मार्च 2017 को चण्डीगढ़ में आयोजित 21 किसी बिग्रैमैराथन से पथस्थान।

(xvii) 2 अप्रैल 2017 को जामनगर में आयोजित 21 किसी जामनगर सैराथन में दसरा स्थगन।

(xviii) 16 अप्रैल 2017 को अमृतसर में आयोजित 21 किसी अमृतसर सैगाथन में दिव्या स्थान।

(xix) 7 मई 2017 को शिमला में आयोजित 21 किमी शिमला सैंगाथन में दस्ता स्थग्न।

(xx) 21 मई 2017 को बैंगलोर में आयोजित 10 किमी तर्फ से गाशन में आत्मा स्थान।

(xxi) 25 जून 2017 को शिमला में आयोजित 21 किसी शिमला मैगाशन में पारम्पराय।

(xxii) 2 जुलाई 2017 को गुड़गाँव में आयोजित 10

किमी विमन मैराथन में प्रथम स्थान ।

(b) महाविद्यालय की टेबिल टेनिस पुरुष टीम ने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की टेबिल टेनिस प्रतियोगिता 2016–17 में प्रथम स्थान अर्जित किया। यह प्रतियोगिता 9 व 10 जनवरी 2017 को ए.एस.पीजी कॉलेज मवाना में आयोजित हुई। अभिलाश बी.कॉम. द्वितीय वर्ष ने प्रथम स्थान, कपिल यादव एम.ए. प्रथम वर्ष द्वितीय स्थान, नमन मित्तल बी.कॉम. तृतीय वर्ष ने चतुर्थ स्थान अर्जित किया और तीनों ही खिलाड़ियों का चयन विश्वविद्यालय टीम के लिये हुआ।

(c) महाविद्यालय की जिमनास्टिक पुरुष टीम ने अन्तर्महाविद्यालय जिम्नास्टिक प्रतियोगिता 2016-17 में प्रथम स्थान अर्जित किया। ये प्रतियोगिता गोचर महाविद्यालय रामपुर मनिहारन में 4 जनवरी 2017 को आयोजित हुई शुभम रोहिला बी.ए. द्वितीय वर्ष ने प्रथम स्थान, हिमांशु धीमान बी.ए. तृतीय वर्ष ने द्वितीय स्थान, अंकित पाल बी.ए. द्वितीय वर्ष ने तृतीय स्थान तथा राहुल पाल बी.ए. द्वितीय वर्ष ने चतुर्थ स्थान अर्जित किया और चारों खिलाड़ियों का चयन विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

(d) महाविद्यालय की शूटिंग पुरुष टीम ने 10 मीटर एयर पिस्टल में द्वितीय स्थान अर्जित किया। यह प्रतियोगिता 22 व 23 अक्टूबर 2016 को शासकीय महाविद्यालय कांधला में आयोजित हुई।

(e) महाविद्यालय की खो-खो पुरुष टीम ने 27 व 28 अक्टूबर 2016 को डी.जे. कॉलेज बड़ौत में आयोजित चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की अन्तर्महाविद्यालय खो-खो प्रतियोगिता 2016-17 में तीसरा स्थान अर्जित किया और बी.ए.द्वितीय वर्ष के छात्र अनुज कुमार का चयन विश्वविद्यालय टीम में हुआ।

(f) महाविद्यालय की वॉलीबॉल पुरुष टीम ने 4 व 5 अक्टूबर 2016 को मेरठ कॉलिज मेरठ में आयोजित चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की अन्तर्महाविद्यालयीय वॉलीबॉल पुरुष प्रतियोगिता 2016-17 में तृतीय स्थान अर्जित किया और एक छात्र आकाश राठी बी.ए. प्रथम वर्ष

का चयन विश्वविद्यालय टीम के लिए हुआ।

(g) महाविद्यालय की एथलैटिक्स पुरुष व महिला टीम ने मेरठ कॉलिज मेरठ में 20, 21 व 22 दिसम्बर 2016 को आयोजित चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की एथलेटिक मीट में प्रतिभाग किया और बी.पी.एड. की छात्रा कु. अर्पिमा सैनी ने 5000 मीटर तथा 10000 मीटर की दौड़ों में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(h) महाविद्यालय की क्रॉसकन्ट्री पुरुष टीम ने दिनांक 24 सितम्बर 2016 को विश्वविद्यालय कैम्पस, मेरठ में अन्तर्महाविद्यालय क्रॉसकन्ट्री प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया और बी.ए. तृतीय वर्ष के छात्र शहनवाज ने तृतीय स्थान अर्जित किया। शहनवाज के साथ बी.ए. तृतीय वर्ष के ही आशुतोष का चयन विश्वविद्यालय टीम के लिए हुआ।

(i) चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की अन्तर्महाविद्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन 8 व 9 नवम्बर को मेरठ कॉलिज मेरठ में किया गया। जिसमें महाविद्यालय की टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

(j) महाविद्यालय की छात्रा कु. दीपिका खरब बी.ए. द्वितीय वर्ष का चयन विश्वविद्यालय वॉलीबॉल टीम के लिए एम.बी. पीजी. कॉलेज दादरी में 30 दिसम्बर 2016 को किया गया।

(k) महाविद्यालय की कृश्ती महिला टीम ने अन्तर्राष्ट्रीय कृश्ती प्रतियोगिता 2016-17 में 31 दिसंबर 2016 को विश्वविद्यालय कैपस मेरठ में प्रतिभाग किया और बी.पी.एड. की छात्रा कु. राखी ने अपने भार वर्ग में तीसरा स्थान अर्जित किया।

(I) चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की सॉफ्टबॉल टीम हेतु चयन प्रक्रिया दिनांक 11 जनवरी 2017 को गोचर महाविद्यालय, रामपुर मनिहारन में आयोजित की गई। जिसमें बी.पी.एड. के छात्र विजय कुमार, शुभम अंतल तथा फरहीन त्यागी का चयन विश्वविद्यालय टीम के लिये हुआ।

(m) चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की हाँकी पुरुष टीम का चयन श्रीराम कॉलेज मुजफ्फरनगर में 12

जनवरी 2017 को किया गया जिसमें नितिन कुमार बी.ए. प्रथम वर्ष, सुशील कुमार तथा दीपांशु पाल बी.पी.एड. के छात्रों का चयन विश्वविद्यालय टीम में हआ।

(n) विश्वविद्यालय महिला हॉकी टीम का चयन 19 जनवरी 2017 को आर.जी. कॉलेज मेरठ में किया गया। जिसमें बी.पी.एड. की छात्रा कु. अरुणा का चयन विश्वविद्यालय टीम के लिए हुआ।

(o) महाविद्यालय की बी.पी.एड. कक्षा की योग टीम ने नोएडा कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन में दिनांक 9 मई को इण्डीयन योगा फेडरेशन द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्रीय योग चैम्पियनशिप में प्रथम स्थान अर्जित किया।

- ★ शारीरिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों की देख-रेख व शारीरिक शिक्षा विभाग के विद्यार्थियों के सहयोग से तीन दिवसीय (12 से 14 नवम्बर) मुजफ्फरनगर ओलम्पिक का आयोजन महाविद्यालय खेल प्रांगण में एस.डी. ग्रुप ऑफ कालेजेस द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

★ चौधरी चरण विश्वविद्यालय मेरठ द्वारा आवंटित अन्तर्महाविद्यालयीय फुटबॉल टूर्नामेंट 2016-17 का आयोजन 27 व 28 दिसम्बर 2016 को महाविद्यालय में किया गया। उद्घाटन मुजफ्फरनगर जनपद के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बबलू कुमार ने किया तथा समापन व पुरस्कार वितरण एस.डी. कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री सोमांश प्रकाश जी ने किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मेरठ कॉलेज, मेरठ, द्वितीय स्थान एच.एल.एम.गाजियाबाद तथा तीसरा स्थान एम.एम.एच. कॉलेज गाजियाबाद का रहा।

- ★ यह एक खुशी का विषय है कि फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली द्वारा संचालित 'पेफी विद्या दान योजना' के अन्तर्गत देश भर के महाविद्यालयों में सनातन धर्म महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग का चयन किया गया और अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष में दिनांक 12 जनवरी 2017 को उक्त संस्था द्वारा शारीरिक शिक्षा एवं खेल विज्ञान से सम्बन्धित उच्च कोटि की 172

पाठ्य पुस्तकों का दान महाविद्यालय प्राचार्य को
महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में किया गया।

★ वार्षिक एथलेटिक मीट का आयोजन 25 व 26 फरवरी 2017 को किया गया। 25 फरवरी को एथलेटिक मीट का उद्घाटन मुजफ्फरनगर जनपद के ए.डी.एम. प्रशासन श्री मनोज कुमार द्वारा किया गया तथा इसका समापन व पुरस्कार वितरण दिनांक 26 फरवरी 2017 महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री शंकर स्वरूप व श्री देवेन्द्र जी द्वारा किया गया। इस वार्षिक एथलेटिक मीट के पुरुष वर्ग में चैम्पियन सुनील कुमार (एम.ए. द्वितीय वर्ष) तथा महिला वर्ग में चैम्पियन बी.पी.एड. की छात्रा कु. रुचि रही। इस सत्र की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बी.पी.एड. की छात्रा कु. अर्पिता सैनी रही। इस मीट में शारीरिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों ने ऑफिशयल की भूमिका अदा की जिसमें डॉ. एस.एन. सिंह, डॉ. कुलदीप मलिक, श्री विपिन कुमार, श्री अंशुल शर्मा तथा श्री संदीप कुमार थे।

- ★ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस-21 जून के उपलक्ष में शारीरिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने जिला प्रशासन द्वारा आयोजित चौधरी चरण सिंह स्टेडियम मुजफ्फरनगर में एक दिवसीय योगा कैम्प में योग अभ्यासों का शानदार प्रदर्शन किया।

सत्र 2016-17 में सफलतापूर्वक कई अकादमी और खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। गतिविधियों में शिक्षकों व विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। इस सफलता के पीछे लौह स्तम्भ के रूप में महाविद्यालय की खेलकूद समिति थी। इस समिति का प्रयास अतुल्य है और शारीरिक शिक्षा एवं खेल से जुड़े हुए विद्यार्थियों को हर्ष होना चाहिए कि ऐसी समिति महाविद्यालय में कार्यरत है और उन्हें आशा करनी चाहिए कि आने वाले सत्र में भी इस समिति द्वारा इस दिशा में ओर वृद्धि की जायेगी।

डॉ. एस.एन. सिंह
अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय सेवा योजना

सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर के स्ववित्त पोषित विभाग ने राष्ट्रीय सेवा योजना की एक नई इकाई का आरंभ किया। जिसकी कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बबीता शर्मा हैं। इसमें 66 स्वयं सेवकों व 34 स्वयं सेविकाओं को शामिल किया गया। इस योजना का उद्देश्य स्वयं सेवकों व स्वयं सेविकाओं में राष्ट्रीय सेवा की भावना विकसित करना है, जिससे वे समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनकर देश के विकास में अपना पूर्ण योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों व सेविकाओं ने चार एक दिवसीय शिविर में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया तथा दिए हुए कार्य को बड़ी सहजता और स्वच्छ तरीके से संपन्न किया। इस चार एक दिवसीय शिविर में चारों दिन निम्न प्रकार कार्यक्रम किये गये—

क्रमांक	दिनांक	कार्यक्रम
1	2/2/17	स्वच्छता अभियान
2	4/2/17	कीटनियंत्रण का उपाय
3	7/2/17	पर्यावरण संवर्धन और नियंत्रण
4	12/2/17	मुदा परीक्षण

शिविर के अंतर्गत उन्होंने मलिन बस्तियों में स्वच्छता, पर्यावरण, शिक्षा, दहेज प्रथा आदि के बारे में लोगों को जागरूक किया। इसी क्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 22/2/17 से 28/2/17 तक ए.पी. पब्लिक स्कूल में किया गया। विशेष शिविर में निम्न प्रकार से कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

क्रमांक	दिनांक	कार्यक्रम
1	22/2/17	मतदाता जागरूकता अभियान
2	23/2/17	स्वच्छता अभियान
3	24/2/17	वृक्षारोपण
4	25/2/17	रक्तदान
5	26/2/17	परिवार कल्याण और पोषण सम्बन्धी कार्यक्रम
6	27/2/17	समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के सम्बन्ध में
7	28/2/17	भ्रूण हत्या पर विशेष कार्यक्रम

स्वयं सेवकों व सेविकाओं में टीम भावना विकसित करने के लिए सभी स्वयंसेवकों व सेविकाओं को पाँच समूहों में बाँटा गया, जिसमें सभी ने एक साथ मिलकर कार्य किया। शिविर में समय-समय पर निम्न महानुभावों ने आकर अपने विचारों द्वारा स्वयं सेवकों व स्वयं सेविकाओं का मनोबल बढ़ाया।

1. डॉ. रीता शर्मा, प्राचार्या, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर
 2. डॉ. एस.के. अग्रवाल, एसो.प्रोफेसर, डी.एन.कॉलेज, मुजफ्फरनगर
 3. डॉ. एस.सी. वार्ष्ण्य, समन्वय (स्ववित्त पोषित विभाग) सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर
 4. श्री होती लाल शर्मा, रिटायर्ड, प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट
 5. श्री अयोध्या प्रसाद, एन.एस.एस. रीजनल ऑफिस, लखनऊ
 6. डॉ. वीरेन्द्र सिंह सहवाग, समन्वयक एन.एस.एस., विश्वविद्यालय मेरठ
 7. श्री भगवान शर्मा, सरवट ग्राम प्रधान



कार्यवाहक प्राचार्य : डॉ रीता शर्मा

ଶିକ୍ଷକଗଣ

कला-संकाय

अंग्रेजी-विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) अलका बंसल
 2. डॉ. (श्रीमती) महिमा
 3. डॉ. (श्रीमती) कामिनी सिंधल
 4. रिक्त पद - 2

अर्थशास्त्र-विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) संगीता सिंघल
 2. डॉ. राजेन्द्र कुमार अग्रवाल
 3. रिक्त पद - 5

हिन्दी-विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) निकेता
 2. डॉ. (श्रीमती) ज्योति सिंह
 3. डॉ. विश्वम्भर पाण्डेय
 4. रिक्त पद - 2

इतिहास-विभाग

1. डॉ. अजय पाल सिंह
 2. डॉ. अशोक त्रिपाठी
 3. रिक्त पद - 2

भूगोल-विभाग

अध्यक्षा

1. डॉ. (श्रीमती) वन्दना त्यागी
 2. डॉ. उदयभानु सिंह
 3. रिक्त पद - 5

अध्यक्ष

(अधिवर्षित)

शारीरिक शिक्षा-विभाग

1. डॉ. श्याम नारायण सिंह

अध्यक्ष

राजनीति विज्ञान-विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) मुक्ता बंसल
 2. डॉ. दानवीर सिंह
 3. डॉ. राजेश कुमार
 4. डॉ. सतीश कुमार
 5. डॉ. अनिल कुमार

अध्यक्षा

संस्कृत-विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) विजय लक्ष्मी
 2. डॉ. चरण सिंह
 3. डॉ. (श्रीमती) अरुणिमा
 4. डॉ. शाचि अगवाल

अध्यक्ष

लिलित कला-विभाग

१. श्री बसन्त कुमार
 २. रिक्त पद-१

वाणिज्य-संकाय

1. डॉ. एस.सी. वार्ष्णेय
 2. डॉ. (श्रीमती) निशा अग्रवाल
 3. डॉ. पी.के. श्रीवास्तव

अध्यक्ष

4. डा. विकास वर्मा
 5. डॉ. आर. के. मित्र
 6. रिक्त पद – 6

विज्ञान-संकाय

गृहविज्ञान-विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) शुचि
 2. डॉ. (श्रीमती) बीना अग्रवाल
 3. डॉ. (श्रीमती) ममता श्याम

गणित-विभाग

1. डॉ. अरुण कुमार
 2. डॉ. सुधीर कुमार पुण्डीर
 3. डॉ. रिम्पल पाल (मानदेय)
 4. रिक्त पद - 02

रसायन-विभाग

1. डॉ. अरविन पँवार (मानदेय)
 2. डॉ. संजय अरोड़ा (मानदेय)
 2. रिक्त पद - 12

अध्यक्षा

सांख्यिकी–विभाग

- ## 1. रिक्त पद – 2

भौतिकी-विभाग

1. डॉ. (श्रीमती) अंजुली खण्डेलवाल
 2. डॉ. (श्रीमती) नीलम सिन्हा
 3. डॉ. राजकुमार
 4. डॉ. जी.पी. गुप्ता
 5. रिक्त पद-05

अध्यक्ष

अध्यक्ष

- ## वनस्पति विज्ञान-विभाग

- ### 1. रिक्त पद – 03

ગુજરાતી

जन्तु विज्ञान-विभाग

- 3
1. डॉ. (श्रीमती) सरोज गुप्ता
2. डॉ. शेखर चन्द
3. रिक्त पद - 03

कायलिय

- | | |
|--|-------------------------------|
| 1. श्री अन्जुल भूषण (कार्यवाहक बरसर) | 5. श्रीमती प्रीति रानी शुक्ला |
| 2. श्री सुखपाल सिंह (कार्यवाहक कार्यालय अधीक्षक) | 6. श्री राजीव कुमार |
| 3. श्री सुधीर कुमार बंसल | 7. श्री अनुपम जैन |
| 4. श्री धरनेन्द्र कुमार जैन, (कार्यो स. लेखाकार) | 8. श्री शशांक कुमार अग्रवाल |

पुस्तकालय

1. डा. पुरुषोत्तम कुमार अग्रवाल, पुस्तकालयाध्यक्ष
 2. श्री राहुल यादव
 3. श्री रविन्द्र कुमार सिंह
 4. श्री ईश्वर सिंह नेगी

प्रयोगशाला

1. श्री हरेन्द्र कुमार सिंह
 2. श्री सचिन कुमार
 3. श्री नीतिश गोयल

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

- | | | | | | |
|----|----------------------|-----|----------------------|-----|------------------------|
| 1. | श्री वीर बहादुर | 9. | श्री प्रवीण कुमार-। | 17. | श्री सोनू कुमार |
| 2. | श्री सुरेन्द्र कुमार | 10. | श्री धर्मपाल सिंह | 18. | श्रीमती संदेश शर्मा |
| 3. | श्री विक्रम सिंह | 11. | श्री कुँवर पाल सिंह | 19. | श्री सुभाष कुमार |
| 4. | श्री रामू प्रसाद | 12. | श्री योगेन्द्र ठाकुर | 20. | श्री कृष्ण मुरारी मीणा |
| 5. | श्री राज कुमार | 13. | श्री विजय कुमार | 21. | श्रीमती सुदेशा |
| 6. | श्री राम सिंह | 14. | श्रीमती प्रभा | 22. | श्री दीपक कुमार |
| 7. | श्री राकेश कुमार | 15. | श्री नरेन्द्र कुमार | 23. | श्रीमती सरोज |
| 8. | श्री आदेश कुमार | 16. | श्री प्रवीण कुमार-॥ | | |